

विदेह VIDEHA

विदेह-सदेह १-३७ विस्तृत अध्ययन

Videha Sadeha 1-37 Detailed Study

विदेह ई-लर्निङ्ग प्रश्नोत्तरी शृंखला · Videha eLearning Quiz Book Series

खण्ड १६ / २२ · Volume 16 of 22

सम्पादक / लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

VIDEHA — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

विदेह ई-लर्निङ्ग: <https://www.videha.co.in/videha-elearning.htm>

© Gajendra Thakur, Editor — Videha eJournal [Beta Version; suggestions invited]

विषय-सूची / Contents

१. विदेह-सदेह २८ — विस्तृत अध्ययन	१०६४ प्रश्न
२. विदेह-सदेह २९ — विस्तृत अध्ययन	१११९ प्रश्न
३. विदेह-सदेह ३० — विस्तृत अध्ययन	३१४ प्रश्न

प्रत्येक अध्यायक प्रश्न-खण्डक बाद ओहि अध्यायक उत्तरमाला (उत्तर ओ व्याख्या) देल गेल अछि।

In each chapter, the answer key with explanations (उत्तरमाला) follows the questions.

अध्याय १ : विदेह-सदेह २८ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड 3554 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विनीत उत्पल:

१. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९. खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3555 : विदेह-सदेह 28 — काशीनाथ सिंह (हिन्दी): रेहन पर रघ्यू

१०. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रघ्यू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रेहन पर रघ्यू
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रघ्यू”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रघ्यू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) उपन्यास
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रघ्यू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मार्क्सवादी + मनोवैज्ञानिक: सम्पूर्ण समाज ‘रेहन’ पर। नव्य-न्याय: ‘ऋण’ हेतु, ‘सब जकड़ल’ निगमन

१४. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रघ्यू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मार्क्सवादी + मनोवैज्ञानिक: सम्पूर्ण समाज ‘रेहन’ पर। नव्य-न्याय: ‘ऋण’ हेतु, ‘सब जकड़ल’ निगमन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रघ्यू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक काशीनाथ सिंह (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रघू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रघू”कँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रघू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९. खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246मे काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रघू” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “मार्क्सवादी + मनोवैज्ञानिक: सम्पूर्ण समाज ‘रेहन’ पर। नव्य-न्याय: ‘ऋण’ हेतु, ‘सब जकड़ल’ निगमन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3556 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विनीत उत्पल:

२०. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८. खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3557 : विदेह-सदेह 28 — गीतेश शर्मा (हिन्दी): भारतीय मुसलमान आ भारतीयता

२९. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भारतीय मुसलमान आ भारतीयता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दलित-वाम दृष्टि: भारतीय मुसलमानक दोहरा व्यवहार, कट्टरता आ वर्गीय विश्लेषण। समानान्तर इतिहास – राष्ट्रिय मुख्यधाराक पाछाँक जटिल पहिचान।

३३. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दलित-वाम दृष्टि: भारतीय मुसलमानक दोहरा व्यवहार, कट्टरता आ वर्गीय विश्लेषण। समानान्तर इतिहास – राष्ट्रिय मुख्यधाराक पाछाँक जटिल पहिचान।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गीतेश शर्मा (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८. खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248मे गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “दलित-वाम दृष्टि: भारतीय मुसलमानक दोहरा व्यवहार, कट्टरता आ वर्गीय विश्लेषण। समानान्तर इतिहास – राष्ट्रिय मुख्यधाराक पाछाँक जटिल पहिचान।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3558 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: उमेश मण्डल:

३९. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: अनुवाद: उमेश मण्डलक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: अनुवाद: उमेश मण्डलक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: अनुवाद: उमेश मण्डलक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: अनुवाद: उमेश मण्डलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: अनुवाद: उमेश मण्डलक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: उमेश मण्डल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: अनुवाद: उमेश मण्डलक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: अनुवाद: उमेश मण्डलक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४६. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: अनुवाद: उमेश मण्डलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७. खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249मे अनुवाद: उमेश मण्डलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3559 : विदेह-सदेह 28 — सुकेश साहनी (हिन्दी): ठ'रल सीरक

४८. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ठ'रल सीरक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्त्रीवादी-मार्क्सवादी: एकठाम गर्मी, बेमार बच्चा, रजाइक संघर्ष – वर्गक कठोर यथार्थ। ध्वनि: न्यूनतम संसाधनमे जीवन-युद्ध।

५२. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्त्रीवादी-मार्क्सवादी: एकठाम गर्मी, बेमार बच्चा, रजाइक संघर्ष – वर्गक कठोर यथार्थ। ध्वनि: न्यूनतम संसाधनमे जीवन-युद्ध।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुकेश साहनी (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
५५. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
५६. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?
- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
५७. खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250: एहि खण्डक सार की अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250मे सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “स्त्रीवादी-मार्क्सवादी: एकठाम गर्मी, बेमार बच्चा, रजाइक संघर्ष – वर्गक कठोर यथार्थ। ध्वनि: न्यूनतम संसाधनमे जीवन-युद्ध।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- खण्ड 3560 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: मुन्नाजी:**
५८. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
५९. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क मुख्य विधा कोन अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) साहित्य
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
६०. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) प्रविष्टि
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
६१. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: मुन्नाजी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: अनुवाद: मुन्नाजीक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: अनुवाद: मुन्नाजीक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६५. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251मे अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3561 : विदेह-सदेह 28 — वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी): दायित्व

६७. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दायित्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पितृसत्ता / सास-पुतौहु मनोविज्ञान – कर्तव्य आ व्यक्तित्वक टकराव। उत्तर-स्त्रीवादी दृष्टि।

७१. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पितृसत्ता / सास-पुतौहु मनोविज्ञान – कर्तव्य आ व्यक्तित्वक टकराव। उत्तर-स्त्रीवादी दृष्टि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७५. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252मे वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पितृसत्ता / सास-पुतौहु मनोविज्ञान – कर्तव्य आ व्यक्तित्वक टकराव। उत्तर-स्त्रीवादी दृष्टि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3562 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: आशीष अनचिन्हार:

७७. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८४. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५. खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3563 : विदेह-सदेह 28 — अंजू खरबंदा (हिन्दी): मुखिया

८६. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मुखिया
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्त्री-मानसिकता / पुरुष-कपड़ाक प्रतीक: ‘मुखिया’ घर-रहबाक आश्वासन – पितृसत्ताक आन्तरिक भय।

९०. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्त्री-मानसिकता / पुरुष-कपड़ाक प्रतीक: ‘मुखिया’ घर-रहबाक आश्वासन – पितृसत्ताक आन्तरिक भय।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अंजू खरबंदा (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५. खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254मे अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “स्त्री-मानसिकता / पुरुष-कपड़ाक प्रतीक: ‘मुखिया’ घर-रहबाक आश्वासन – पितृसत्ताक आन्तरिक भय।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3564 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: घनश्याम घनेरो:

१६. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”कँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०३. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४. खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3565 : विदेह-सदेह 28 — रवि प्रभाकर (हिन्दी): अदकल जीह

१०५. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अदकल जीह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वक्रोक्ति सिद्धान्तक प्रयोग: बिना काजक बुढ़ीजी आ टेलिफोनक संवादसँ शिक्षाक विडम्बना ध्वनित।

१०९. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वक्रोक्ति सिद्धान्तक प्रयोग: बिना काजक बुढ़ीजी आ टेलिफोनक संवादसँ शिक्षाक विडम्बना ध्वनित।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि प्रभाकर (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११३. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४. खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256मे रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “वक्रोक्ति सिद्धान्तक प्रयोग: बिना काजक बुढ़ीजी आ टेलिफोनक संवादसँ शिक्षाक विडम्बना ध्वनित।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3566 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: घनश्याम घनेरो:

११५. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२२. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3567 : विदेह-सदेह 28 — सतीश खनगवाल (हिन्दी): घुरपेंच

१२४. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) घुरपेंच
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मार्क्सवादी-व्यंग्य: नेता-सत्ताक चाल आ ‘घुरपेंच’

१२८. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मार्क्सवादी-व्यंग्य: नेता-सत्ताक चाल आ ‘घुरपेंच’
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सतीश खनगवाल (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्य लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३२. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258मे सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य लघुकथा आ “मार्क्सवादी-व्यंग्य: नेता-सत्ताक चाल आ ‘घुरपेंच’” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3568 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: घनश्याम घनेरो:

१३४. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४१. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3569 : विदेह-सदेह 28 — विजय 'विभोर' (हिन्दी): अन्नदाता

१४३. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अन्नदाता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वर्गीय-विडम्बना: जमींदार-किसान संवाद – ‘अन्नदाता’क अर्थ बदलि केँ सत्ताकोर निर्मिति।

१४७. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वर्गीय-विडम्बना: जमींदार-किसान संवाद – ‘अन्नदाता’क अर्थ बदलि केँ सत्ताकोर निर्मिति।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विजय 'विभोर' (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता”कँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५१. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260मे विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “वर्गीय-विडम्बना: जमींदार-किसान संवाद – ‘अन्नदाता’क अर्थ बदलि कँ सत्ताकोर निर्मिति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3570 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: घनश्याम घनेरो:

१५३. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६०. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१. खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3571 : विदेह-सदेह 28 — योगराज प्रभाकर (हिन्दी): थाल आ कमल

१६२. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) थाल आ कमल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रकृति-पुरुष / उत्पीड़न आ प्रतिरोधक प्रतीक। नव्य-न्याय: ‘थाल’मे ‘कमल’क सम्भावना – सामाजिक बदलावक आशा।

१६६. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रकृति-पुरुष / उत्पीड़न आ प्रतिरोधक प्रतीक। नव्य-न्याय: ‘थाल’मे ‘कमल’क सम्भावना – सामाजिक बदलावक आशा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक योगराज प्रभाकर (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७०. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१. खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262मे योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्रकृति-पुरुष / उत्पीड़न आ प्रतिरोधक प्रतीक। नव्य-न्याय: ‘थाल’मे ‘कमल’क सम्भावना – सामाजिक बदलावक आशा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3572 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: घनश्याम घनेरो:

१७२. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७९. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०. खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3573 : विदेह-सदेह 28 — सदानन्द कविश्वर (हिन्दी): नाडिर हिलेबाक फयदा

१८१. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नाडिर हिलेबाक फयदा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुव्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कुरुर-संवादमे मानव-संसारक व्यङ्ग्य: ‘पूँछ हिलाब’ सत्ताक अनुकरणक प्रतीक

१८५. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कुरुर-संवादमे मानव-संसारक व्यङ्ग्य: ‘पूँछ हिलाब’ सत्ताक अनुकरणक प्रतीक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सदानन्द कविश्वर (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुव्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुव्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८९. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264मे सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा” प्रविष्टि गद्य, लघुव्यंग्य आ “कुकुर-संवादमे मानव-संसारक व्यङ्ग्य: ‘पूँछ हिलाब’ सत्ताक अनुकरणक प्रतीक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3574 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: मुन्नाजी:

१९१. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: अनुवाद: मुन्नाजीक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: मुन्नाजी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: अनुवाद: मुन्नाजीक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: अनुवाद: मुन्नाजीक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९८. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९. खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265मे अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3575 : विदेह-सदेह 28 — डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली): बहिष्करण

२००. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बहिष्करण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) नेपाली लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) कोरोना-कालक बहिष्कारक मनोविज्ञान
२०४. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?
- (A) कोरोना-कालक बहिष्कारक मनोविज्ञान
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
२०५. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) लेखक डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा नेपाली लघुकथा
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
२०६. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
२०७. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) ई पाठ नेपाली लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
२०८. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?
- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
२०९. खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266: एहि खण्डक सार की अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266मे डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टि गद्य, नेपाली लघुकथा आ “कोरोना-कालक बहिष्कारक मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3576 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर:

२१०. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१७. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८. खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3577 : विदेह-सदेह 28 — प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली): सौन्दर्य आ समानता

२१९. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सौन्दर्य आ समानता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रयोगात्मक लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्त्री-पुरुष समानता भौतिक परीक्षणमे सांस्कृतिक पक्षपात उधार

२२३. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्त्री-पुरुष समानता भौतिक परीक्षणमे सांस्कृतिक पक्षपात उधार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा प्रयोगात्मक लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रयोगात्मक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२७. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८. खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268मे प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता” प्रविष्टि गद्य, प्रयोगात्मक लघुकथा आ “स्त्री-पुरुष समानता भौतिक परीक्षणमे सांस्कृतिक पक्षपात उधार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3578 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर:

२२९. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३४. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३५. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३६. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७. खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3579 : विदेह-सदेह 28 — हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली): दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)

२३८. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा युग्म
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सत्ता-विसंगति: अख्तियार आ दृश्यकोण – अपराधी मन्त्री आ पड़ोसीक दोहरा व्यवहार

२४२. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सत्ता-विसंगति: अख्तियार आ दृश्यकोण – अपराधी मन्त्री आ पड़ोसीक दोहरा व्यवहार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा युग्म
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथा युग्मक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४६. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270मे हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा युग्म आ “सत्ता-विसंगति: अख्तियार आ दृश्यकोण – अपराधी मन्त्री आ पड़ोसीक दोहरा व्यवहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3580 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर:

२४८. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४९. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५०. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५१. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५३. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५४. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५५. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५६. खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3581 : विदेह-सदेह 28 — तारा केसी (नेपाली): अपन परिचय

२५७. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अपन परिचय
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५८. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५९. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) स्त्री-चेतना कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६०. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आत्म-परिचय / अस्तित्ववाद: दहेज, घर, भौतिकता नै, साक्षर साथी चाही – समानान्तर नारी-आवाज।

२६१. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आत्म-परिचय / अस्तित्ववाद: दहेज, घर, भौतिकता नै, साक्षर साथी चाही – समानान्तर नारी-आवाज।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक तारा केसी (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा स्त्री-चेतना कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६३. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६४. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ स्त्री-चेतना कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६५. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६६. खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272मे तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टि गद्य, स्त्री-चेतना कथा आ “आत्म-परिचय / अस्तित्ववाद: दहेज, घर, भौतिकता नै, साक्षर साथी चाही – समानान्तर नारी-आवाज।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3582 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर:

२६७. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६८. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६९. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७०. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७१. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७३. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७४. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७५. खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3583 : विदेह-सदेह 28 — रचना शर्मा (नेपाली): चरित्र

२७६. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चरित्र
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७८. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७९. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नाम-विडम्बना: ‘चरित्रबहादुर’ अध्यापकक पाखण्ड

२८०. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नाम-विडम्बना: ‘चरित्रबहादुर’ अध्यापकक पाखण्ड
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८१. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रचना शर्मा (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८३. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८४. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८५. खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274मे रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नाम-विडम्बना: ‘चरित्रबहादुर’ अध्यापकक पाखण्ड” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3584 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर:

२८६. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८८. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८९. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९०. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९१. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९३. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९४. खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3585 : विदेह-सदेह 28 — डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी): क्रांति

२९५. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) क्रांति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९६. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) पंजाबी लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९८. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) क्रान्ति-चिन्तन

२९९. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) क्रान्ति-चिन्तन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३००. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी), विधा गद्य, उप-विधा पंजाबी लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०१. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०२. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ पंजाबी लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०३. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०४. खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276मे डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति” प्रविष्टि गद्य, पंजाबी लघुकथा आ “क्रान्ति-चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3586 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: सान्त्वना मिश्र:

३०५. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०६. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०७. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०८. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०९. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: सान्त्वना मिश्र, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१०. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३११. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१२. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१३. खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3587 : विदेह-सदेह 28 — निरंजन बोहा (पंजाबी): करुगर सत्य

३१४. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करुगर सत्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) करुगर सत्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१५. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करुगर सत्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१६. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करुगर सत्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१७. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करुगर सत्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पीड़ित परिवारक स्त्रीक अन्तर-विरोध: सरकारी सहायता लेल पति आतंकवादी हत्या – नैतिक द्वन्द्व।

३१८. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करुगर सत्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पीड़ित परिवारक स्त्रीक अन्तर-विरोध: सरकारी सहायता लेल पति आतंकवादी हत्या – नैतिक द्वन्द्व।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१९. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक निरंजन बोहा (पंजाबी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२०. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२१. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२२. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२३. खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278मे निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करूगर सत्य” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पीड़ित परिवारक स्त्रीक अन्तर-विरोध: सरकारी सहायता लेल पति आतंकवादी हत्या – नैतिक द्वन्द्व।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3588 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: सान्त्वना मिश्र:

३२४. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२५. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२६. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२७. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२८. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: सान्त्वना मिश्र, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२९. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३०. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३१. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३२. खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3589 : विदेह-सदेह 28 — जगदीश अरमानी (पंजाबी): कथानक

३३३. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कथानक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३४. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३५. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३६. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लेखक-कथानकक मेटा-फिक्शन

३३७. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लेखक-कथानकक मेटा-फिक्शन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३८. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदीश अरमानी (पंजाबी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३९. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४०. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४१. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४२. खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3589, सूचकांक पंक्ति 2280मे जगदीश अरमानी (पंजाबी)क “कथानक” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “लेखक-कथानकक मेटा-फिक्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3590 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: सान्त्वना मिश्र:

३४३. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४४. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४५. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४६. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४७. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: सान्त्वना मिश्र, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४८. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४९. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५०. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५१. खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3590, सूचकांक पंक्ति 2281मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3591 : विदेह-सदेह 28 — जंगबहादुर सिंह घुमण (पंजाबी): आचरण

३५२. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: जंगबहादुर सिंह घुमण (पंजाबी)क “आचरण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आचरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५३. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: जंगबहादुर सिंह घुमण (पंजाबी)क “आचरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५४. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: जंगबहादुर सिंह घुमण (पंजाबी)क “आचरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५५. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: जंगबहादुर सिंह घुमण (पंजाबी)क “आचरण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शोषित नाती-दादा संवाद: एकटा रुपियाक मृत्युपत्र – राज्यक व्यङ्ग्य।

३५६. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: जंगबहादुर सिंह घुमण (पंजाबी)क “आचरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शोषित नाती-दादा संवाद: एकटा रुपियाक मृत्युपत्र – राज्यक व्यङ्ग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५७. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: जंगबहादुर सिंह घुमण (पंजाबी)क “आचरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जंगबहादुर सिंह घुमण (पंजाबी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५८. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी)क “आचरण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५९. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी)क “आचरण”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६०. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी)क “आचरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६१. खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3591, सूचकांक पंक्ति 2282मे जंगबहादुर सिंह घुम्मण (पंजाबी)क “आचरण” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शोषित नाती-दादा संवाद: एकटा रुपियाक मृत्युपत्र – राज्यक व्यङ्ग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3592 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: सान्त्वना मिश्र:

३६२. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६३. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६४. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६५. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६६. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: सान्त्वना मिश्र, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६७. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६८. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६९. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७०. खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3593 : विदेह-सदेह 28 — दीपक बुदकी (उर्दू): जन्नत (स्वर्ग)

३७१. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जन्नत (स्वर्ग)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७२. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७३. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) उर्दू लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७४. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) समानान्तर-व्यंग्य: जन्नतक दरोगा आतंकवादीकेँ हटलर, चंगेज खाँ बीच पठाबैत अछि – पाप-पुण्य सापेक्षता।

३७५. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) समानान्तर-व्यंग्य: जन्नतक दरोगा आतंकवादीकेँ हटलर, चंगेज खाँ बीच पठाबैत अछि – पाप-पुण्य सापेक्षता।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७६. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक दीपक बुदकी (उर्दू), विधा गद्य, उप-विधा उर्दू लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७७. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७८. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ उर्दू लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७९. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८०. खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284मे दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्नत (स्वर्ग)” प्रविष्टि गद्य, उर्दू लघुकथा आ “समानान्तर-व्यंग्य: जन्नतक दरोगा आतंकवादीकेँ हटलर, चंगेज खाँ बीच पठाबैत अछि – पाप-पुण्य सापेक्षता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3594 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. आभा झा:

३८१. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८२. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८३. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८४. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८५. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: डॉ. आभा झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८६. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८७. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८८. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८९. खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3595 : विदेह-सदेह 28 — मुबशिशर अली जैदी (उर्दू): ईनाम

३९०. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ईनाम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९१. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९२. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९३. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सपनाक बदला ईनाम: झूठ सपना ईनाम ‘सरकारी नौकरी’ देबाक खतरा – भ्रष्टाचारक ध्वनि।

३९४. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सपनाक बदला ईनाम: झूठ सपना ईनाम ‘सरकारी नौकरी’ देबाक खतरा – भ्रष्टाचारक ध्वनि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९५. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुबशिशर अली जैदी (उर्दू), विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९६. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९७. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्य लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९८. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९९. खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286मे मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य लघुकथा आ “सपनाक बदला ईनाम: झूठ सपना ईनाम ‘सरकारी नौकरी’ देबाक खतरा – भ्रष्टाचारक ध्वनि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3596 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. आभा झा:

४००. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०१. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०२. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०३. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०४. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: डॉ. आभा झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०५. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०६. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४०७. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०८. खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3597 : विदेह-सदेह 28 — इब्न आसी (उर्दू): फेर मनुक्खक की भेले?

४०९. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) फेर मनुक्खक की भेले?
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१०. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४११. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) दार्शनिक लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१२. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नूहक नाउ सन्दर्भ: ‘मनुक्ख’ नै सवारी – आधुनिक अमानवीयता प्रश्न।

४१३. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नूहक नाउ सन्दर्भ: ‘मनुक्ख’ नै सवारी – आधुनिक अमानवीयता प्रश्न।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१४. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक इब्न आसी (उर्दू), विधा गद्य, उप-विधा दार्शनिक लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१५. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१६. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ दार्शनिक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१७. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१८. खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288मे इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टि गद्य, दार्शनिक लघुकथा आ “नूहक नाउ सन्दर्भ: ‘मनुक्ख’ नै सवारी – आधुनिक अमानवीयता प्रश्न।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3598 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. आभा झा:

४१९. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२०. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२१. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२२. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२३. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: डॉ. आभा झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२४. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२५. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२६. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२७. खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3599 : विदेह-सदेह 28 — रतन सिंह (उर्दू): बिना शीर्षकक

४२८. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बिना शीर्षकक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२९. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३०. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा/सूक्ति
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३१. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) तोता-उल्लू संवाद: ‘सञ्चय पूँजीवाद’क व्यङ्ग्य

४३२. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) तोता-उल्लू संवाद: ‘सञ्चय पूँजीवाद’क व्यङ्ग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३३. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रतन सिंह (उर्दू), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/सूक्ति
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३४. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३५. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथा/सूक्तिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४३६. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३७. खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290मे रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/सूक्ति आ “तोता-उल्लू संवाद: ‘सञ्चय पूँजीवाद’क व्यङ्ग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3600 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. आभा झा:

४३८. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३९. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४०. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४१. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४२. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: डॉ. आभा झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४३. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४४. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४५. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४६. खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3601 : विदेह-सदेह 28 — सच्चिदानन्द कर (ओडिया): तितली आ प्रेम

४४७. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) तितली आ प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४८. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्यात्मक गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४९. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रेम-आख्यानिका
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५०. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भारतीय काम-सूत्रीय रीति: तितली-चिड़िया रूपक – प्रेमक कोमल आकस्मिकता, शृङ्गार रस।

४५१. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भारतीय काम-सूत्रीय रीति: तितली-चिड़िया रूपक – प्रेमक कोमल आकस्मिकता, शृङ्गार रस।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५२. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सच्चिदानन्द कर (ओडिया), विधा पद्यात्मक गद्य, उप-विधा प्रेम-आख्यानिका
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५३. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५४. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम”कें विदेह-सदेह 28क पद्यात्मक गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रेम-आख्यानिकाक रूपमे पद्यात्मक गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४५५. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५६. खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292मे सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टि पद्यात्मक गद्य, प्रेम-आख्यानिका आ “भारतीय काम-सूत्रीय रीति: तितली-चिड़िया रूपक – प्रेमक कोमल आकस्मिकता, शृङ्गार रस।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3602 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: जोनासलका महान्ति:

४५७. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५८. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५९. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६०. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६१. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: जोनासलका महान्ति, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६२. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६३. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४६४. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६५. खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293मे अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3603 : विदेह-सदेह 28 — प्रज्ञा महान्ति (ओडिया): मेमोरीचिप्स

४६६. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मेमोरीचिप्स
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६७. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६८. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) वैज्ञानिक लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६९. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मृत्यु-पश्चात मेमोरी चिप – नव्य-न्यायक ‘आत्मा’ बहसक वैज्ञानिक पुनर्पाठ।

४७०. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मृत्यु-पश्चात मेमोरी चिप – नव्य-न्यायक ‘आत्मा’ बहसक वैज्ञानिक पुनर्पाठ।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७१. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रज्ञा महान्ति (ओडिया), विधा गद्य, उप-विधा वैज्ञानिक लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७२. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७३. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ वैज्ञानिक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४७४. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७५. खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294मे प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टि गद्य, वैज्ञानिक लघुकथा आ “मृत्यु-पश्चात मेमोरी चिप – नव्य-न्यायक ‘आत्मा’ बहसक वैज्ञानिक पुनर्पाठ।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3604 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: जोनासलका महान्ति:

४७६. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७७. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७८. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७९. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८०. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: जोनासलका महान्ति, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८१. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८२. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४८३. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८४. खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295मे अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3605 : विदेह-सदेह 28 — विनय कुमार दास (ओडिया): कर्मफल

४८५. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कर्मफल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८६. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८७. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८८. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भूत-कथा शैलीमे कर्मफलक उपदेश

४८९. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भूत-कथा शैलीमे कर्मफलक उपदेश
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९०. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विनय कुमार दास (ओडिया), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९१. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९२. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९३. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९४. खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296मे विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “भूत-कथा शैलीमे कर्मफलक उपदेश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3606 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: जोनासलका महान्ति:

४९५. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९६. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९७. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९८. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९९. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: जोनासलका महान्ति, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५००. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०१. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५०२. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०३. खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297मे अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3607 : विदेह-सदेह 28 — गायत्री दास (ओडिया): बुझौअलि

५०४. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बुझौअलि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०५. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०६. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०७. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ड्रग्स पीड़ित बेटाक बापक डाक्टर सँ बिनती – निहित वक्रोक्ति: ‘बुझाइ’ पाखण्डक उधार।

५०८. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ड्रग्स पीड़ित बेटाक बापक डाक्टर सँ बिनती – निहित वक्रोक्ति: ‘बुझाइ’ पाखण्डक उधार।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०९. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गायत्री दास (ओडिया), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१०. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५११. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५१२. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१३. खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298मे गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ड्रग्स पीड़ित बेटाक बापक डाक्टर सँ बिनती – निहित वक्रोक्ति: ‘बुझाइ’ पाखण्डक उधार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3608 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: तन्मया तपस्विनी:

५१४. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१५. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१६. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१७. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१८. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: तन्मया तपस्विनी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१९. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२०. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५२१. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२२. खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299मे अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3609 : विदेह-सदेह 28 — मिनती प्रधान (ओडिया): संगी

५२३. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संगी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२४. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२५. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२६. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मित्रताक अन्तरंगता

५२७. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मित्रताक अन्तरंगता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२८. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मिनती प्रधान (ओडिया), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२९. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३०. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५३१. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३२. खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300मे मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मित्रताक अन्तरंगता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3610 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: तन्मया तपस्विनी:

५३३. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३४. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३५. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३६. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३७. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: तन्मया तपस्विनी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३८. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३९. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५४०. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४१. खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301मे अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3611 : विदेह-सदेह 28 — गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी): एकटा आर रबि

५४२. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) एकटा आर रबि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४३. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४४. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४५. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अकेल बूढ़ व्यक्तिक दिनचर्या

५४६. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अकेल बूढ़ व्यक्तिक दिनचर्या
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४७. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४८. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४९. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५५०. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५१. खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302मे गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “अकेल बूढ़ व्यक्तिक दिनचर्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3612 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंह:

५५२. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५३. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५४. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५५. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५६. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५७. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५८. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५५९. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६०. खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303मे अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3613 : विदेह-सदेह 28 — सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी): सोंगर

५६१. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सोंगर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६२. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६३. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लोक-व्यवहार कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६४. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बलि/मांसभोजी परम्पराक मार्क्सवादी-मनोवैज्ञानिक छानबीन

५६५. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बलि/मांसभोजी परम्पराक मार्क्सवादी-मनोवैज्ञानिक छानबीन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६६. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी), विधा गद्य, उप-विधा लोक-व्यवहार कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६७. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६८. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर”कें विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लोक-व्यवहार कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५६९. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७०. खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304मे सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर” प्रविष्टि गद्य, लोक-व्यवहार कथा आ “बलि/मांसभोजी परम्पराक मार्क्सवादी-मनोवैज्ञानिक छानबीन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3614 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंह:

५७१. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७२. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७३. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७४. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७५. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७६. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७७. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५७८. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७९. खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305मे अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3615 : विदेह-सदेह 28 — वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी): मृत्युकें टारब, नागपंचमी

५८०. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकें टारब, नागपंचमी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मृत्युकें टारब, नागपंचमी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८१. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकें टारब, नागपंचमी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८२. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकें टारब, नागपंचमी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८३. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकें टारब, नागपंचमी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मृत्यु-अनुष्ठान, अर्ध-जीवित बेटा – सामाजिक दबाव, वर्गीय शोषण

५८४. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मृत्यु-अनुष्ठान, अर्ध-जीवित बेटा – सामाजिक दबाव, वर्गीय शोषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८५. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८६. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८७. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी”केँ विदेह-सदेह 28क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५८८. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८९. खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306मे वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकेँ टारब, नागपंचमी” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मृत्यु-अनुष्ठान, अर्ध-जीवित बेटा – सामाजिक दबाव, वर्गीय शोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3616 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीस:

५९०. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “ ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९१. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९२. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९३. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९४. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीस, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९५. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९६. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९७. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९८. खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307मे अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3617 : विदेह-सदेह 28 — इस्मिता सारंगी (ओडिया): गप, हिलकोर

५९९. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गप, हिलकोर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६००. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०१. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आधुनिक कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०२. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्त्री-मनक तरंग

६०३. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्त्री-मनक तरंग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०४. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक इस्मिता सारंगी (ओडिया), विधा पद्य, उप-विधा आधुनिक कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०५. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०६. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर”कें विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आधुनिक कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६०७. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०८. खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308मे इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर” प्रविष्टि पद्य, आधुनिक कविता आ “स्त्री-मनक तरंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3618 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर:

६०९. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१०. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६११. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१२. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१३. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१४. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१५. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६१६. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१७. खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309मे अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3619 : विदेह-सदेह 28 — अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु): अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर

६१८. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१९. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२०. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) तेलुगु कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२१. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) तेलंगाना किसान आत्महत्याक करुण पक्ष

६२२. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) तेलंगाना किसान आत्महत्याक करुण पक्ष
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२३. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु), विधा पद्य, उप-विधा तेलुगु कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२४. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२५. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर”कें विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ तेलुगु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६२६. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२७. खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310मे अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर” प्रविष्टि पद्य, तेलुगु कविता आ “तेलंगाना किसान आत्महत्याक करुण पक्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3620 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुर:

६२८. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२९. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३०. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३१. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३२. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३३. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३४. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६३५. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३६. खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311मे अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3621 : विदेह-सदेह 28 — हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती): पद्य

६३७. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पद्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३८. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गुजराती कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३९. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) उत्तर-आधुनिक प्रेम/समीकरण; नव्य-न्याय: दू ध्रुवक असमानान्तर सापेक्षता।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४०. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पद्य

६४१. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पद्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४२. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती), विधा गुजराती कविता, उप-विधा उत्तर-आधुनिक प्रेम/समीकरण; नव्य-न्याय: दू ध्रुवक असमानान्तर सापेक्षता।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४३. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४४. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य”कें विदेह-सदेह 28क गुजराती कविता-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ उत्तर-आधुनिक प्रेम/समीकरण; नव्य-न्याय: दू ध्रुवक असमानान्तर सापेक्षता।क रूपमे गुजराती कविता-संसारसँ जुड़ल अछि।

६४५. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४६. खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3621, सूचकांक पंक्ति 2312मे हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क “पद्य” प्रविष्टि गुजराती कविता, उत्तर-आधुनिक प्रेम/समीकरण; नव्य-न्याय: दू ध्रुवक असमानान्तर सापेक्षता। आ “पद्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3622 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुर:

६४७. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४८. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४९. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५०. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५१. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५२. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५३. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “”कँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६५४. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५५. खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3622, सूचकांक पंक्ति 2313मे अनुवाद: देसाइ, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3623 : विदेह-सदेह 28 — अजय सरवैया (गुजराती): अहाँक तामस हमर स्वागतपथ

६५६. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अहाँक तामस हमर स्वागतपथ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५७. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५८. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गुजराती कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५९. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम-स्वीकार आ तामसक द्वन्द्व

६६०. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम-स्वीकार आ तामसक द्वन्द्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६१. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अजय सरवैया (गुजराती), विधा पद्य, उप-विधा गुजराती कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६२. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६३. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गुजराती कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६६४. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६५. खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3623, सूचकांक पंक्ति 2314मे अजय सरवैया (गुजराती)क “अहाँक तामस हमर स्वागतपथ” प्रविष्टि पद्य, गुजराती कविता आ “प्रेम-स्वीकार आ तामसक द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3624 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर:

६६६. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६७. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६८. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६९. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७०. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७१. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७२. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६७३. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७४. खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3624, सूचकांक पंक्ति 2315मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3625 : विदेह-सदेह 28 — राजेन्द्र पटेल (गुजराती): गुजराती कविता

६७५. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गुजराती कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७६. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) हाथक स्मृति-मुद्रा; भारतीय सामुद्रिक शास्त्र आ पाश्चात्य स्पर्श-मनोविज्ञान सम्मिलन।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७७. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७८. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गुजराती कविता

६७९. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गुजराती कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८०. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजेन्द्र पटेल (गुजराती), विधा हाथक स्मृति-मुद्रा; भारतीय सामुद्रिक शास्त्र आ पाश्चात्य स्पर्श-मनोविज्ञान सम्मिलन।, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८१. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८२. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता”क विदेह-सदेह 28क हाथक स्मृति-मुद्रा; भारतीय सामुद्रिक शास्त्र आ पाश्चात्य स्पर्श-मनोविज्ञान सम्मिलन।-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे हाथक स्मृति-मुद्रा; भारतीय सामुद्रिक शास्त्र आ पाश्चात्य स्पर्श-मनोविज्ञान सम्मिलन।-संसारसँ जुड़ल अछि।

६८३. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८४. खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3625, सूचकांक पंक्ति 2316मे राजेन्द्र पटेल (गुजराती)क “गुजराती कविता” प्रविष्टि हाथक स्मृति-मुद्रा; भारतीय सामुद्रिक शास्त्र आ पाश्चात्य स्पर्श-मनोविज्ञान सम्मिलन।, प्रविष्टि आ “गुजराती कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3626 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर:

६८५. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८६. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८७. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८८. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८९. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९०. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९१. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६९२. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९३. खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3626, सूचकांक पंक्ति 2317मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3627 : विदेह-सदेह 28 — पीयूष ठक्कर (गुजराती): सांध्य बेला

६९४. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सांध्य बेला
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९५. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९६. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गुजराती कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९७. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साँझ, ध्यान, अस्तित्वक प्रश्न – पाश्चात्य अस्तित्ववाद आ भारतीय सन्ध्या-वन्दनाक समन्वय।

६९८. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साँझ, ध्यान, अस्तित्वक प्रश्न – पाश्चात्य अस्तित्ववाद आ भारतीय सन्ध्या-वन्दनाक समन्वय।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९९. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक पीयूष ठक्कर (गुजराती), विधा पद्य, उप-विधा गुजराती कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७००. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०१. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला”कें विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गुजराती कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७०२. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०३. खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3627, सूचकांक पंक्ति 2318मे पीयूष ठक्कर (गुजराती)क “सांध्य बेला” प्रविष्टि पद्य, गुजराती कविता आ “साँझ, ध्यान, अस्तित्वक प्रश्न – पाश्चात्य अस्तित्ववाद आ भारतीय सन्ध्या-वन्दनाक समन्वय।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3628 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर:

७०४. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०५. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०६. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०७. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०८. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०९. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१०. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७११. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१२. खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3628, सूचकांक पंक्ति 2319मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3629 : विदेह-सदेह 28 — पन्ना त्रिवेदी (गुजराती): आमद

७१३. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आमद
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१४. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१५. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गुजराती कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१६. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रवासी-अनुभव, स्त्री-विमर्श

७१७. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रवासी-अनुभव, स्त्री-विमर्श
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१८. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक पन्ना त्रिवेदी (गुजराती), विधा पद्य, उप-विधा गुजराती कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१९. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२०. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद”कें विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गुजराती कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७२१. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२२. खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3629, सूचकांक पंक्ति 2320मे पन्ना त्रिवेदी (गुजराती)क “आमद” प्रविष्टि पद्य, गुजराती कविता आ “प्रवासी-अनुभव, स्त्री-विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3630 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर:

७२३. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२४. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२५. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२६. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२७. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२८. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगौं बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२९. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७३०. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३१. खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3630, सूचकांक पंक्ति 2321मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3631 : विदेह-सदेह 28 — बाबू सुथार (गुजराती): गृहमोह

७३२. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गृहमोह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३३. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३४. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गुजराती कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३५. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गृह-प्रति आसक्ति

७३६. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गृह-प्रति आसक्ति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३७. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बाबू सुथार (गुजराती), विधा पद्य, उप-विधा गुजराती कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३८. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३९. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गुजराती कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७४०. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४१. खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3631, सूचकांक पंक्ति 2322मे बाबू सुथार (गुजराती)क “गृहमोह” प्रविष्टि पद्य, गुजराती कविता आ “गृह-प्रति आसक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3632 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर:

७४२. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४३. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४४. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४५. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४६. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४७. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४८. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७४९. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५०. खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3632, सूचकांक पंक्ति 2323मे अनुवाद: हेमांग देसाई, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3633 : विदेह-सदेह 28 — वासुदेव सुनानी (ओडिया): फूसि, अनुमति

७५१. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) फूसि, अनुमति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५२. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५३. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) ओडिया कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५४. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दलित-चेतना

७५५. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दलित-चेतना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५६. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक वासुदेव सुनानी (ओडिया), विधा पद्य, उप-विधा ओडिया कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५७. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५८. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति”कें विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ ओडिया कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७५९. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६०. खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324मे वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति” प्रविष्टि पद्य, ओडिया कविता आ “दलित-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3634 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुर:

७६१. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६२. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६३. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६४. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६५. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६६. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६७. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७६८. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६९. खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325मे अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3635 : विदेह-सदेह 28 — भरत माँझी (ओडिया): हमर घुरलाक बाद

७७०. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हमर घुरलाक बाद
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७१. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७२. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) ओडिया कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७३. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रवासक बाद घर-वापसीक प्रश्न

७७४. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रवासक बाद घर-वापसीक प्रश्न
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७५. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक भरत माँझी (ओडिया), विधा पद्य, उप-विधा ओडिया कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७६. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७७. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद”कें विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ ओडिया कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७७८. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७९. खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326मे भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद” प्रविष्टि पद्य, ओडिया कविता आ “प्रवासक बाद घर-वापसीक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3636 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुर:

७८०. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८१. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८२. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८३. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८४. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८५. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८६. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७८७. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८८. खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327मे अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3637 : विदेह-सदेह 28 — शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु): पसीझक काँट

७८९. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पसीझक काँट
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९०. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९१. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) तेलुगु कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९२. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) समाजक सीमाबद्ध झाड़ी स्त्री-स्वतन्त्रता रोकेत अछि

७९३. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) समाजक सीमाबद्ध झाड़ी स्त्री-स्वतन्त्रता रोकेत अछि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९४. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु), विधा पद्य, उप-विधा तेलुगु कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९५. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९६. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट”कें विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ तेलुगु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७९७. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९८. खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328मे शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट” प्रविष्टि पद्य, तेलुगु कविता आ “समाजक सीमाबद्ध झाड़ी स्त्री-स्वतन्त्रता रोकेत अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3638 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुर:

७९९. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८००. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०१. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०२. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०३. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०४. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०५. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “”कँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८०६. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०७. खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329मे अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3639 : विदेह-सदेह 28 — एन. अरुणा (तेलुगु): ई सेहो अछि प्रवास

८०८. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई सेहो अछि प्रवास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०९. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१०. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) तेलुगु कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८११. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी-प्रवासक उदास व्यञ्जना

८१२. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी-प्रवासक उदास व्यञ्जना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१३. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक एन. अरुणा (तेलुगु), विधा पद्य, उप-विधा तेलुगु कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१४. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१५. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास”कें विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ तेलुगु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८१६. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१७. खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330मे एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास” प्रविष्टि पद्य, तेलुगु कविता आ “नारी-प्रवासक उदास व्यञ्जना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3640 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुर:

८१८. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१९. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२०. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२१. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२२. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२३. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२४. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८२५. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२६. खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331मे अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3641 : विदेह-सदेह 28 — भिखारी ठाकुर (भोजपुरी): वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२

८२७. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२८. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२९. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) भोजपुरी लोकपद्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३०. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक-व्यङ्ग्य, वृद्धाश्रमक विरोध

८३१. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक-व्यङ्ग्य, वृद्धाश्रमक विरोध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३२. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक भिखारी ठाकुर (भोजपुरी), विधा पद्य, उप-विधा भोजपुरी लोकपद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३३. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३४. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२”कें विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ भोजपुरी लोकपद्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८३५. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३६. खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332मे भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२” प्रविष्टि पद्य, भोजपुरी लोकपद्य आ “लोक-व्यङ्ग्य, वृद्धाश्रमक विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3642 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर:

८३७. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३८. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३९. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४०. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४१. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४२. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४३. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८४४. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४५. खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333मे अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3643 : विदेह-सदेह 28 — परिचय दास (भोजपुरी): बेसीकाल शब्द जखन

८४६. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बेसीकाल शब्द जखन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४७. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४८. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) भोजपुरी पद्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४९. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्मृति, शब्द, लेखकीय चिन्तन

८५०. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्मृति, शब्द, लेखकीय चिन्तन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५१. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक परिचय दास (भोजपुरी), विधा पद्य, उप-विधा भोजपुरी पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५२. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५३. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ भोजपुरी पद्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८५४. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५५. खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334मे परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन” प्रविष्टि पद्य, भोजपुरी पद्य आ “स्मृति, शब्द, लेखकीय चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3644 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विनीत उत्पल:

८५६. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५७. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५८. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५९. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६०. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६१. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६२. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८६३. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६४. खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3645 : विदेह-सदेह 28 — निराला (हिन्दी): देह विदेह (१-४)

८६५. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) देह विदेह (१-४)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६६. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६७. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) मुक्तक/दार्शनिक कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६८. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पाश्चात्य अस्तित्ववादक पूर्व पाठ

८६९. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पाश्चात्य अस्तित्ववादक पूर्व पाठ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७०. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक निराला (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा मुक्तक/दार्शनिक कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७१. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७२. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)”क विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ मुक्तक/दार्शनिक कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८७३. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७४. खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336मे निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)” प्रविष्टि पद्य, मुक्तक/दार्शनिक कविता आ “पाश्चात्य अस्तित्ववादक पूर्व पाठ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3646 : विदेह-सदेह 28 — पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी): डायरी खण्ड आ कविता खंड

८७५. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) डायरी खण्ड आ कविता खंड
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७६. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य/गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७७. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) डायरी/सूक्ति
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७८. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नव्य-न्यायक ‘प्रमाण’ आ ‘तर्क’क साहित्यिक प्रयोग

८७९. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नव्य-न्यायक ‘प्रमाण’ आ ‘तर्क’क साहित्यिक प्रयोग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८०. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी), विधा पद्य/गद्य, उप-विधा डायरी/सूक्ति
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८१. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८२. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड”कें विदेह-सदेह 28क पद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ डायरी/सूक्तिक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८८३. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८४. खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337मे पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड” प्रविष्टि पद्य/गद्य, डायरी/सूक्ति आ “नव्य-न्यायक ‘प्रमाण’ आ ‘तर्क’क साहित्यिक प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3647 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: आशीष अनचिन्हार:

८८५. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८६. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८७. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८८. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८९. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९०. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९१. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८९२. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९३. खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3648 : विदेह-सदेह 28 — संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी): गिट्ट, मेघक दूभि

८९४. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ट, मेघक दूभि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गिट्ट, मेघक दूभि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९५. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ट, मेघक दूभि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९६. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ट, मेघक दूभि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) हिन्दी कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९७. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ट, मेघक दूभि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रकृति-चेतना, मेघ-दूबक प्रतीकसँ समर्पण

८९८. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ट, मेघक दूभि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रकृति-चेतना, मेघ-दूबक प्रतीकसँ समर्पण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९९. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ट, मेघक दूभि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९००. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ट, मेघक दूभि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ट, मेघक दूभि”क विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०२. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ट, मेघक दूभि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339मे संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ट, मेघक दूभि” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “प्रकृति-चेतना, मेघ-दूबक प्रतीकसँ समर्पण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3649 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: आशीष अनचिन्हार:

१०४. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” केँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१११. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3650 : विदेह-सदेह 28 — वीरू सोनकर (हिन्दी): उपलब्धि, नून, दिन

११३. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) उपलब्धि, नून, दिन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) हिन्दी कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शोषित मजदूरक तीन पाठ

११७. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शोषित मजदूरक तीन पाठ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक वीरू सोनकर (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन”कें विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२१. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341मे वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “शोषित मजदूरक तीन पाठ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3651 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: आशीष अनचिन्हार:

१२३. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३०. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१. खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3652 : विदेह-सदेह 28 — मंगलेश डबराल (हिन्दी): कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि

१३२. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) हिन्दी कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शहरी एकान्त, इतिहास-प्रति अविश्वास

१३६. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शहरी एकान्त, इतिहास-प्रति अविश्वास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मंगलेश डबराल (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३८. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३९. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि”क विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९४०. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४१. खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343मे मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “शहरी एकान्त, इतिहास-प्रति अविश्वास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3653 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: विनीत उत्पल:

९४२. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४३. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४४. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: अनुवाद: विनीत उत्पलक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४९. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3654 : विदेह-सदेह 28 — नित्यानन्द गायेन (हिन्दी): हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि

१५१. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) हिन्दी कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मृत्यु-भ्रष्टाचारक बीच जीवित रहबाक अभिशाप

१५५. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मृत्यु-भ्रष्टाचारक बीच जीवित रहबाक अभिशाप
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नित्यानन्द गायेन (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: नित्यानन्द गायेन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि”कें विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५९. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: नित्यानन्द गायन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०. खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345मे नित्यानन्द गायन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “मृत्यु-भ्रष्टाचारक बीच जीवित रहबाक अभिशाप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3655 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: आशीष अनचिन्हार:

१६१. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६८. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९. खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3656 : विदेह-सदेह 28 — प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी): स्नेह-भरल सनेस

१७०. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) स्नेह-भरल सनेस
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) डोगरी कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सैनिक-पत्नी पत्र – करुण रसक आधुनिक प्रयोग, राष्ट्र-प्रेम आ पृथक्करण।

१७४. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सैनिक-पत्नी पत्र – करुण रसक आधुनिक प्रयोग, राष्ट्र-प्रेम आ पृथक्करण।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकर्के की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी), विधा पद्य, उप-विधा डोगरी कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस”क विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ डोगरी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७८. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९. खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347मे प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस” प्रविष्टि पद्य, डोगरी कविता आ “सैनिक-पत्नी पत्र – करुण रसक आधुनिक प्रयोग, राष्ट्र-प्रेम आ पृथक्करण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3657 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह:

१८०. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८७. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3658 : विदेह-सदेह 28 — कुमार संभव 'भारद्वाज' (हिन्दी): हमर भारत देश महान

१८९. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: कुमार संभव 'भारद्वाज' (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हमर भारत देश महान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: कुमार संभव 'भारद्वाज' (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: कुमार संभव 'भारद्वाज' (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) देशभक्ति कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: कुमार संभव 'भारद्वाज' (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सरल देहाती देश-प्रेम

१९३. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: कुमार संभव 'भारद्वाज' (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सरल देहाती देश-प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: कुमार संभव 'भारद्वाज' (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कुमार संभव 'भारद्वाज' (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा देशभक्ति कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: कुमार संभव 'भारद्वाज' (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: कुमार संभव 'भारद्वाज' (हिन्दी)क "हमर भारत देश महान"कें विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ देशभक्ति कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९७. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: कुमार संभव 'भारद्वाज' (हिन्दी)क "हमर भारत देश महान" प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८. खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349मे कुमार संभव 'भारद्वाज' (हिन्दी)क "हमर भारत देश महान" प्रविष्टि पद्य, देशभक्ति कविता आ "सरल देहाती देश-प्रेम" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3659 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह:

१९९. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक " " प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०००. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक " "क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००१. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक " "क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००२. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक " " प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००३. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक " "क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००४. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००५. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “”कँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१००६. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००७. खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3660 : विदेह-सदेह 28 — पसुपुलेटि गीता (तेलुगु): दुमर्जा

१००८. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दुमर्जा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००९. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१०. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) तेलुगु कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०११. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दिल्ली बलात्कार विरोधी आक्रोश

१०१२. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दिल्ली बलात्कार विरोधी आक्रोश
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१३. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक पसुपुलेटि गीता (तेलुगु), विधा पद्य, उप-विधा तेलुगु कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१४. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१५. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ तेलुगु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०१६. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१७. खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351मे पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा” प्रविष्टि पद्य, तेलुगु कविता आ “दिल्ली बलात्कार विरोधी आक्रोश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3661 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पल:

१०१८. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१९. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२०. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२१. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२२. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२३. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२४. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “”कें विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०२५. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२६. खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352मे अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3662 : विदेह-सदेह 28 — रहमान राही (कश्मीरी): छाह सभ

१०२७. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) छाह सभ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२८. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२९. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कश्मीरी कविता (ज्ञानपीठ)
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३०. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ‘छाया’ – स्मृति, संघर्ष, अस्तित्वक कश्मीरी संवेदना, उत्पीड़नक सौन्दर्य।

१०३१. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ‘छाया’ – स्मृति, संघर्ष, अस्तित्वक कश्मीरी संवेदना, उत्पीड़नक सौन्दर्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३२. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रहमान राही (कश्मीरी), विधा पद्य, उप-विधा कश्मीरी कविता (ज्ञानपीठ)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३३. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३४. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ”कें विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कश्मीरी कविता (ज्ञानपीठ)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०३५. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३६. खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353मे रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ” प्रविष्टि पद्य, कश्मीरी कविता (ज्ञानपीठ) आ “‘छाया’ – स्मृति, संघर्ष, अस्तित्वक कश्मीरी संवेदना, उत्पीड़नक सौन्दर्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3663 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुर:

१०३७. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३८. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३९. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४०. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४१. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४२. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४३. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “”कँ विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०४४. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४५. खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354मे अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3664 : विदेह-सदेह 28 — रजनी छाबड़ा (हिन्दी): किछु हिन्दी कविता (संग्रह)

१०४६. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किछु हिन्दी कविता (संग्रह)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४७. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४८. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) हिन्दी कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४९. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम, एकान्त, स्त्री-आत्मा के स्वीकार

१०५०. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम, एकान्त, स्त्री-आत्मा के स्वीकार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५१. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रजनी छाबड़ा (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५२. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५३. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)”केँ विदेह-सदेह 28क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०५४. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५५. खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355मे रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “प्रेम, एकान्त, स्त्री-आत्मा के स्वीकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3665 : विदेह-सदेह 28 — अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापति:

१०५६. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “ ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५७. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) साहित्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५८. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रविष्टि
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५९. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६०. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापति, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६१. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६२. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “”क विदेह-सदेह 28क साहित्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०६३. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “” प्रविष्टि विदेह-सदेह 28क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६४. खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356मे अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2245मे अनुवाद: विनीत उत्पलक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
२. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
५. (B) लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९. (B) खण्ड 3554, सूचकांक पंक्ति 2245मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०. (A) रेहन पर रघू — सूचकांक पंक्ति 2246मे काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क प्रविष्टि “रेहन पर रघू” रूपमे देल अछि।
११. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२. (C) उपन्यास — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास” अछि।
१३. (D) मार्क्सवादी + मनोवैज्ञानिक: सम्पूर्ण समाज ‘रेहन’ पर। नव्य-न्याय: ‘ऋण’ हेतु, ‘सब जकड़ल’ निगमन — टिप्पणीक पहिल संकेत “मार्क्सवादी + मनोवैज्ञानिक: सम्पूर्ण समाज ‘रेहन’ पर। नव्य-न्याय: ‘ऋण’ हेतु, ‘सब जकड़ल’ निगमन” अछि।
१४. (A) मार्क्सवादी + मनोवैज्ञानिक: सम्पूर्ण समाज ‘रेहन’ पर। नव्य-न्याय: ‘ऋण’ हेतु, ‘सब जकड़ल’ निगमन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मार्क्सवादी + मनोवैज्ञानिक: सम्पूर्ण समाज ‘रेहन’ पर। नव्य-न्याय: ‘ऋण’ हेतु, ‘सब जकड़ल’ निगमन” रूपमे देखाइत अछि।
१५. (B) लेखक काशीनाथ सिंह (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७. (D) ई पाठ उपन्यासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९. (B) खण्ड 3555, सूचकांक पंक्ति 2246मे काशीनाथ सिंह (हिन्दी)क “रेहन पर रघू” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास आ “मार्क्सवादी + मनोवैज्ञानिक: सम्पूर्ण समाज ‘रेहन’ पर। नव्य-न्याय: ‘ऋण’ हेतु, ‘सब जकड़ल’ निगमन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2247मे अनुवाद: विनीत उत्पलक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
२१. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
२३. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
२४. (B) लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२६. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२८. (B) खण्ड 3556, सूचकांक पंक्ति 2247मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३९. (A) भारतीय मुसलमान आ भारतीयता — सूचकांक पंक्ति 2248मे गीतेश शर्मा (हिन्दी)क प्रविष्टि “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता” रूपमे देल अछि।
३०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३१. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
३२. (D) दलित-वाम दृष्टि: भारतीय मुसलमानक दोहरा व्यवहार, कट्टरता आ वर्गीय विश्लेषण। समानान्तर इतिहास – राष्ट्रिय मुख्यधाराक पाछाँक जटिल पहिचान। — टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित-वाम दृष्टि: भारतीय मुसलमानक दोहरा व्यवहार, कट्टरता आ वर्गीय विश्लेषण। समानान्तर इतिहास – राष्ट्रिय मुख्यधाराक पाछाँक जटिल पहिचान।” अछि।
३३. (A) दलित-वाम दृष्टि: भारतीय मुसलमानक दोहरा व्यवहार, कट्टरता आ वर्गीय विश्लेषण। समानान्तर इतिहास – राष्ट्रिय मुख्यधाराक पाछाँक जटिल पहिचान। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दलित-वाम दृष्टि: भारतीय मुसलमानक दोहरा व्यवहार, कट्टरता आ वर्गीय विश्लेषण। समानान्तर इतिहास – राष्ट्रिय मुख्यधाराक पाछाँक जटिल पहिचान।” रूपमे देखाइत अछि।
३४. (B) लेखक गीतेश शर्मा (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३६. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३८. (B) खण्ड 3557, सूचकांक पंक्ति 2248मे गीतेश शर्मा (हिन्दी)क “भारतीय मुसलमान आ भारतीयता” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “दलित-वाम दृष्टि: भारतीय मुसलमानक दोहरा व्यवहार, कट्टरता आ वर्गीय विश्लेषण। समानान्तर इतिहास – राष्ट्रिय मुख्यधाराक पाछाँक जटिल पहिचान।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३९. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2249मे अनुवाद: उमेश मण्डलक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
४०. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४१. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४२. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
४३. (B) लेखक अनुवाद: उमेश मण्डल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४४. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४५. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४६. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४७. (B) खण्ड 3558, सूचकांक पंक्ति 2249मे अनुवाद: उमेश मण्डलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४८. (A) ठ'रल सीरक — सूचकांक पंक्ति 2250मे सुकेश साहनी (हिन्दी)क प्रविष्टि “ठ'रल सीरक” रूपमे देल अछि।
४९. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५०. (C) बीहिन कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहिन कथा” अछि।
५१. (D) स्त्रीवादी-मार्क्सवादी: एकठाम गर्मी, बेमार बच्चा, रजाइक संघर्ष – वर्गक कठोर यथार्थ। ध्वनि: न्यूनतम संसाधनमे जीवन-युद्ध। — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्रीवादी-मार्क्सवादी: एकठाम गर्मी, बेमार बच्चा, रजाइक संघर्ष – वर्गक कठोर यथार्थ। ध्वनि: न्यूनतम संसाधनमे जीवन-युद्ध।” अछि।
५२. (A) स्त्रीवादी-मार्क्सवादी: एकठाम गर्मी, बेमार बच्चा, रजाइक संघर्ष – वर्गक कठोर यथार्थ। ध्वनि: न्यूनतम संसाधनमे जीवन-युद्ध। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्रीवादी-मार्क्सवादी: एकठाम गर्मी, बेमार बच्चा, रजाइक संघर्ष – वर्गक कठोर यथार्थ। ध्वनि: न्यूनतम संसाधनमे जीवन-युद्ध।” रूपमे देखाइत अछि।
५३. (B) लेखक सुकेश साहनी (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५४. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५५. (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५६. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५७. (B) खण्ड 3559, सूचकांक पंक्ति 2250मे सुकेश साहनी (हिन्दी)क “ठ'रल सीरक” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “स्त्रीवादी-मार्क्सवादी: एकठाम गर्मी, बेमार बच्चा, रजाइक संघर्ष – वर्गक कठोर यथार्थ। ध्वनि: न्यूनतम संसाधनमे जीवन-युद्ध।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५८. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2251मे अनुवाद: मुन्नाजीक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
५९. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६०. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
६१. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
६२. (B) लेखक अनुवाद: मुन्नाजी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६४. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
६५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६६. (B) खण्ड 3560, सूचकांक पंक्ति 2251मे अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६७. (A) दायित्व — सूचकांक पंक्ति 2252मे वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क प्रविष्टि “दायित्व” रूपमे देल अछि।
६८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६९. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
७०. (D) पितृसत्ता / सास-पुतौहु मनोविज्ञान – कर्तव्य आ व्यक्तित्वक टकराव। उत्तर-स्त्रीवादी दृष्टि। — टिप्पणीक पहिल संकेत “पितृसत्ता / सास-पुतौहु मनोविज्ञान – कर्तव्य आ व्यक्तित्वक टकराव। उत्तर-स्त्रीवादी दृष्टि।” अछि।
७१. (A) पितृसत्ता / सास-पुतौहु मनोविज्ञान – कर्तव्य आ व्यक्तित्वक टकराव। उत्तर-स्त्रीवादी दृष्टि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पितृसत्ता / सास-पुतौहु मनोविज्ञान – कर्तव्य आ व्यक्तित्वक टकराव। उत्तर-स्त्रीवादी दृष्टि।” रूपमे देखाइत अछि।
७२. (B) लेखक वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७४. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७६. (B) खण्ड 3561, सूचकांक पंक्ति 2252मे वन्दना अवस्थी दुबे (हिन्दी)क “दायित्व” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पितृसत्ता / सास-पुतौहु मनोविज्ञान – कर्तव्य आ व्यक्तित्वक टकराव। उत्तर-स्त्रीवादी दृष्टि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७७. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2253मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
७८. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७९. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
८०. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
८१. (B) लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८३. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

८४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८५. (B) खण्ड 3562, सूचकांक पंक्ति 2253मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८६. (A) मुखिया — सूचकांक पंक्ति 2254मे अंजू खरबंदा (हिन्दी)क प्रविष्टि “मुखिया” रूपमे देल अछि।
८७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
८९. (D) स्त्री-मानसिकता / पुरुष-कपड़ाक प्रतीक: ‘मुखिया’ घर-रहबाक आश्वासन – पितृसत्ताक आन्तरिक भय। — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री-मानसिकता / पुरुष-कपड़ाक प्रतीक: ‘मुखिया’ घर-रहबाक आश्वासन – पितृसत्ताक आन्तरिक भय।” अछि।
९०. (A) स्त्री-मानसिकता / पुरुष-कपड़ाक प्रतीक: ‘मुखिया’ घर-रहबाक आश्वासन – पितृसत्ताक आन्तरिक भय। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्री-मानसिकता / पुरुष-कपड़ाक प्रतीक: ‘मुखिया’ घर-रहबाक आश्वासन – पितृसत्ताक आन्तरिक भय।” रूपमे देखाइत अछि।
९१. (B) लेखक अंजू खरबंदा (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
९२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
९३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
९४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९५. (B) खण्ड 3563, सूचकांक पंक्ति 2254मे अंजू खरबंदा (हिन्दी)क “मुखिया” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “स्त्री-मानसिकता / पुरुष-कपड़ाक प्रतीक: ‘मुखिया’ घर-रहबाक आश्वासन – पितृसत्ताक आन्तरिक भय।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
९६. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2255मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
९७. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९८. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
९९. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
१००. (B) लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१०१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०२. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१०३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०४. (B) खण्ड 3564, सूचकांक पंक्ति 2255मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०५. (A) अदकल जीह — सूचकांक पंक्ति 2256मे रवि प्रभाकर (हिन्दी)क प्रविष्टि “अदकल जीह” रूपमे देल अछि।
१०६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०७. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
१०८. (D) वक्रोक्ति सिद्धान्तक प्रयोग: बिना काजक बुढ़ीजी आ टेलिफोनक संवादसँ शिक्षाक विडम्बना ध्वनित। — टिप्पणीक पहिल संकेत “वक्रोक्ति सिद्धान्तक प्रयोग: बिना काजक बुढ़ीजी आ टेलिफोनक संवादसँ शिक्षाक विडम्बना ध्वनित।” अछि।
१०९. (A) वक्रोक्ति सिद्धान्तक प्रयोग: बिना काजक बुढ़ीजी आ टेलिफोनक संवादसँ शिक्षाक विडम्बना ध्वनित। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वक्रोक्ति सिद्धान्तक प्रयोग: बिना काजक बुढ़ीजी आ टेलिफोनक संवादसँ शिक्षाक विडम्बना ध्वनित।” रूपमे देखाइत अछि।
११०. (B) लेखक रवि प्रभाकर (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१११. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११२. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११४. (B) खण्ड 3565, सूचकांक पंक्ति 2256मे रवि प्रभाकर (हिन्दी)क “अदकल जीह” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “वक्रोक्ति सिद्धान्तक प्रयोग: बिना काजक बुढ़ीजी आ टेलिफोनक संवादसँ शिक्षाक विडम्बना ध्वनित।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११५. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2257मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
११६. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११७. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
११८. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
११९. (B) लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२१. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१२२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२३. (B) खण्ड 3566, सूचकांक पंक्ति 2257मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२४. (A) घुरपेंच — सूचकांक पंक्ति 2258मे सतीश खनगवाल (हिन्दी)क प्रविष्टि “घुरपेंच” रूपमे देल अछि।
१२५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२६. (C) व्यंग्य लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य लघुकथा” अछि।
१२७. (D) मार्क्सवादी-व्यंग्य: नेता-सत्ताक चाल आ ‘घुरपेंच’ — टिप्पणीक पहिल संकेत “मार्क्सवादी-व्यंग्य: नेता-सत्ताक चाल आ ‘घुरपेंच’” अछि।
१२८. (A) मार्क्सवादी-व्यंग्य: नेता-सत्ताक चाल आ ‘घुरपेंच’ — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मार्क्सवादी-व्यंग्य: नेता-सत्ताक चाल आ ‘घुरपेंच’” रूपमे देखाइत अछि।
१२९. (B) लेखक सतीश खनगवाल (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३१. (D) ई पाठ व्यंग्य लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१३२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३३. (B) खण्ड 3567, सूचकांक पंक्ति 2258मे सतीश खनगवाल (हिन्दी)क “घुरपेंच” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य लघुकथा आ “मार्क्सवादी-व्यंग्य: नेता-सत्ताक चाल आ ‘घुरपेंच’” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३४. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2259मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
१३५. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३६. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१३७. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
१३८. (B) लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१३९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४०. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१४१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४२. (B) खण्ड 3568, सूचकांक पंक्ति 2259मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४३. (A) अन्नदाता — सूचकांक पंक्ति 2260मे विजय 'विभोर' (हिन्दी)क प्रविष्टि “अन्नदाता” रूपमे देल अछि।
१४४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४५. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
१४६. (D) वर्गीय-विडम्बना: जमींदार-किसान संवाद – ‘अन्नदाता’क अर्थ बदलि कें सत्ताकोर निर्मिति। — टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्गीय-विडम्बना: जमींदार-किसान संवाद – ‘अन्नदाता’क अर्थ बदलि कें सत्ताकोर निर्मिति।” अछि।
१४७. (A) वर्गीय-विडम्बना: जमींदार-किसान संवाद – ‘अन्नदाता’क अर्थ बदलि कें सत्ताकोर निर्मिति। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्गीय-विडम्बना: जमींदार-किसान संवाद – ‘अन्नदाता’क अर्थ बदलि कें सत्ताकोर निर्मिति।” रूपमे देखाइत अछि।
१४८. (B) लेखक विजय 'विभोर' (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१४९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५०. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१५१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५२. (B) खण्ड 3569, सूचकांक पंक्ति 2260मे विजय 'विभोर' (हिन्दी)क “अन्नदाता” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “वर्गीय-विडम्बना: जमींदार-किसान संवाद – ‘अन्नदाता’क अर्थ बदलि कें सत्ताकोर निर्मिति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५३. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2261मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
१५४. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५५. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१५६. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
१५७. (B) लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१५८. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५९. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१६०. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६१. (B) खण्ड 3570, सूचकांक पंक्ति 2261मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६२. (A) थाल आ कमल — सूचकांक पंक्ति 2262मे योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क प्रविष्टि “थाल आ कमल” रूपमे देल अछि।
१६३. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६४. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
१६५. (D) प्रकृति-पुरुष / उत्पीड़न आ प्रतिरोधक प्रतीक। नव्य-न्याय: ‘थाल’मे ‘कमल’क सम्भावना – सामाजिक बदलावक आशा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति-पुरुष / उत्पीड़न आ प्रतिरोधक प्रतीक। नव्य-न्याय: ‘थाल’मे ‘कमल’क सम्भावना – सामाजिक बदलावक आशा।” अछि।
१६६. (A) प्रकृति-पुरुष / उत्पीड़न आ प्रतिरोधक प्रतीक। नव्य-न्याय: ‘थाल’मे ‘कमल’क सम्भावना – सामाजिक बदलावक आशा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति-पुरुष / उत्पीड़न आ प्रतिरोधक प्रतीक। नव्य-न्याय: ‘थाल’मे ‘कमल’क सम्भावना – सामाजिक बदलावक आशा।” रूपमे देखाइत अछि।

१६७. (B) लेखक योगराज प्रभाकर (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६८. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६९. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७०. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७१. (B) खण्ड 3571, सूचकांक पंक्ति 2262मे योगराज प्रभाकर (हिन्दी)क “थाल आ कमल” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “प्रकृति-पुरुष / उत्पीड़न आ प्रतिरोधक प्रतीक। नव्य-न्याय: ‘थाल’मे ‘कमल’क सम्भावना – सामाजिक बदलावक आशा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७२. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2263मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
१७३. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७४. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१७५. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
१७६. (B) लेखक अनुवाद: घनश्याम घनेरो, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७८. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८०. (B) खण्ड 3572, सूचकांक पंक्ति 2263मे अनुवाद: घनश्याम घनेरोक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८१. (A) नाडिर हिलेबाक फयदा — सूचकांक पंक्ति 2264मे सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क प्रविष्टि “नाडिर हिलेबाक फयदा” रूपमे देल अछि।
१८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८३. (C) लघुव्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुव्यंग्य” अछि।
१८४. (D) कुकुर-संवादमे मानव-संसारक व्यङ्ग्य: ‘पूँछ हिलाब’ सत्ताक अनुकरणक प्रतीक — टिप्पणीक पहिल संकेत “कुकुर-संवादमे मानव-संसारक व्यङ्ग्य: ‘पूँछ हिलाब’ सत्ताक अनुकरणक प्रतीक” अछि।
१८५. (A) कुकुर-संवादमे मानव-संसारक व्यङ्ग्य: ‘पूँछ हिलाब’ सत्ताक अनुकरणक प्रतीक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कुकुर-संवादमे मानव-संसारक व्यङ्ग्य: ‘पूँछ हिलाब’ सत्ताक अनुकरणक प्रतीक” रूपमे देखाइत अछि।
१८६. (B) लेखक सदानन्द कविश्वर (हिन्दी), विधा गद्य, उप-विधा लघुव्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८८. (D) ई पाठ लघुव्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९०. (B) खण्ड 3573, सूचकांक पंक्ति 2264मे सदानन्द कविश्वर (हिन्दी)क “नाडिर हिलेबाक फयदा” प्रविष्टि गद्य, लघुव्यंग्य आ “कुकुर-संवादमे मानव-संसारक व्यङ्ग्य: ‘पूँछ हिलाब’ सत्ताक अनुकरणक प्रतीक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९१. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2265मे अनुवाद: मुन्नाजीक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
१९२. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९३. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१९४. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

१९५. (B) लेखक अनुवाद: मुन्नाजी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकै एक साथ रखैत अछि।
१९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककै केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकै स्पष्ट करैत अछि।
१९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकै एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९९. (B) खण्ड 3574, सूचकांक पंक्ति 2265मे अनुवाद: मुन्नाजीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकै व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकै प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२००. (A) बहिष्करण — सूचकांक पंक्ति 2266मे डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क प्रविष्टि “बहिष्करण” रूपमे देल अछि।
२०१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकै “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०२. (C) नेपाली लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नेपाली लघुकथा” अछि।
२०३. (D) कोरोना-कालक बहिष्कारक मनोविज्ञान — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोरोना-कालक बहिष्कारक मनोविज्ञान” अछि।
२०४. (A) कोरोना-कालक बहिष्कारक मनोविज्ञान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोरोना-कालक बहिष्कारक मनोविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।
२०५. (B) लेखक डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा नेपाली लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकै एक साथ रखैत अछि।
२०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककै केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०७. (D) ई पाठ नेपाली लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकै स्पष्ट करैत अछि।
२०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकै एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०९. (B) खण्ड 3575, सूचकांक पंक्ति 2266मे डा. पुष्करराज भट्ट (नेपाली)क “बहिष्करण” प्रविष्टि गद्य, नेपाली लघुकथा आ “कोरोना-कालक बहिष्कारक मनोविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकै व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकै प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१०. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2267मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
२११. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकै “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
२१३. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
२१४. (B) लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकै एक साथ रखैत अछि।
२१५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककै केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१६. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकै स्पष्ट करैत अछि।
२१७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकै एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१८. (B) खण्ड 3576, सूचकांक पंक्ति 2267मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकै व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकै प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१९. (A) सौन्दर्य आ समानता — सूचकांक पंक्ति 2268मे प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क प्रविष्टि “सौन्दर्य आ समानता” रूपमे देल अछि।
२२०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकै “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२१. (C) प्रयोगात्मक लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रयोगात्मक लघुकथा” अछि।
२२२. (D) स्त्री-पुरुष समानता भौतिक परीक्षणमे सांस्कृतिक पक्षपात उधार — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री-पुरुष समानता भौतिक परीक्षणमे सांस्कृतिक पक्षपात उधार” अछि।

२२३. (A) स्त्री-पुरुष समानता भौतिक परीक्षणमे सांस्कृतिक पक्षपात उधार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्री-पुरुष समानता भौतिक परीक्षणमे सांस्कृतिक पक्षपात उधार” रूपमे देखाइत अछि।
२२४. (B) लेखक प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा प्रयोगात्मक लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२२५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२६. (D) ई पाठ प्रयोगात्मक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२२७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२८. (B) खण्ड 3577, सूचकांक पंक्ति 2268मे प्रा. डा. कपिल लामिछाने (नेपाली)क “सौन्दर्य आ समानता” प्रविष्टि गद्य, प्रयोगात्मक लघुकथा आ “स्त्री-पुरुष समानता भौतिक परीक्षणमे सांस्कृतिक पक्षपात उधार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२९. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2269मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
२३०. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३१. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
२३२. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
२३३. (B) लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२३४. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३५. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२३६. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३७. (B) खण्ड 3578, सूचकांक पंक्ति 2269मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३८. (A) दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण) — सूचकांक पंक्ति 2270मे हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क प्रविष्टि “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)” रूपमे देल अछि।
२३९. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४०. (C) लघुकथा युग्म — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा युग्म” अछि।
२४१. (D) सत्ता-विसंगति: अख्तियार आ दृश्यकोण – अपराधी मन्त्री आ पड़ोसीक दोहरा व्यवहार — टिप्पणीक पहिल संकेत “सत्ता-विसंगति: अख्तियार आ दृश्यकोण – अपराधी मन्त्री आ पड़ोसीक दोहरा व्यवहार” अछि।
२४२. (A) सत्ता-विसंगति: अख्तियार आ दृश्यकोण – अपराधी मन्त्री आ पड़ोसीक दोहरा व्यवहार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सत्ता-विसंगति: अख्तियार आ दृश्यकोण – अपराधी मन्त्री आ पड़ोसीक दोहरा व्यवहार” रूपमे देखाइत अछि।
२४३. (B) लेखक हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा युग्म — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४४. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४५. (D) ई पाठ लघुकथा युग्मक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२४६. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४७. (B) खण्ड 3579, सूचकांक पंक्ति 2270मे हरिप्रसाद भण्डारी (नेपाली)क “दू टा बीहिन कथा (अख्तियार, दृश्यकोण)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा युग्म आ “सत्ता-विसंगति: अख्तियार आ दृश्यकोण – अपराधी मन्त्री आ पड़ोसीक दोहरा व्यवहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४८. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2271मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

२४९. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२५०. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
२५१. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
२५२. (B) लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२५३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२५४. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२५५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२५६. (B) खण्ड 3580, सूचकांक पंक्ति 2271मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२५७. (A) अपन परिचय — सूचकांक पंक्ति 2272मे तारा केसी (नेपाली)क प्रविष्टि “अपन परिचय” रूपमे देल अछि।
२५८. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२५९. (C) स्त्री-चेतना कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “स्त्री-चेतना कथा” अछि।
२६०. (D) आत्म-परिचय / अस्तित्ववाद: दहेज, घर, भौतिकता नै, साक्षर साथी चाही – समानान्तर नारी-आवाज। — टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्म-परिचय / अस्तित्ववाद: दहेज, घर, भौतिकता नै, साक्षर साथी चाही – समानान्तर नारी-आवाज।” अछि।
२६१. (A) आत्म-परिचय / अस्तित्ववाद: दहेज, घर, भौतिकता नै, साक्षर साथी चाही – समानान्तर नारी-आवाज। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्म-परिचय / अस्तित्ववाद: दहेज, घर, भौतिकता नै, साक्षर साथी चाही – समानान्तर नारी-आवाज।” रूपमे देखाइत अछि।
२६२. (B) लेखक तारा केसी (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा स्त्री-चेतना कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२६३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२६४. (D) ई पाठ स्त्री-चेतना कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२६५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२६६. (B) खण्ड 3581, सूचकांक पंक्ति 2272मे तारा केसी (नेपाली)क “अपन परिचय” प्रविष्टि गद्य, स्त्री-चेतना कथा आ “आत्म-परिचय / अस्तित्ववाद: दहेज, घर, भौतिकता नै, साक्षर साथी चाही – समानान्तर नारी-आवाज।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२६७. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2273मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
२६८. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२६९. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
२७०. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
२७१. (B) लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२७२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२७३. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२७४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२७५. (B) खण्ड 3582, सूचकांक पंक्ति 2273मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२७६. (A) चरित्र — सूचकांक पंक्ति 2274मे रचना शर्मा (नेपाली)क प्रविष्टि “चरित्र” रूपमे देल अछि।
२७७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२७८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
२७९. (D) नाम-विडम्बना: ‘चरित्रबहादुर’ अध्यापकक पाखण्ड — टिप्पणीक पहिल संकेत “नाम-विडम्बना: ‘चरित्रबहादुर’ अध्यापकक पाखण्ड” अछि।
२८०. (A) नाम-विडम्बना: ‘चरित्रबहादुर’ अध्यापकक पाखण्ड — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाम-विडम्बना: ‘चरित्रबहादुर’ अध्यापकक पाखण्ड” रूपमे देखाइत अछि।
२८१. (B) लेखक रचना शर्मा (नेपाली), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२८२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२८३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२८४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२८५. (B) खण्ड 3583, सूचकांक पंक्ति 2274मे रचना शर्मा (नेपाली)क “चरित्र” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नाम-विडम्बना: ‘चरित्रबहादुर’ अध्यापकक पाखण्ड” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२८६. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2275मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
२८७. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२८८. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
२८९. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
२९०. (B) लेखक अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२९१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२९२. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२९३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२९४. (B) खण्ड 3584, सूचकांक पंक्ति 2275मे अनुवाद: विन्देश्वर ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२९५. (A) क्रांति — सूचकांक पंक्ति 2276मे डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क प्रविष्टि “क्रांति” रूपमे देल अछि।
२९६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२९७. (C) पंजाबी लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पंजाबी लघुकथा” अछि।
२९८. (D) क्रान्ति-चिन्तन — टिप्पणीक पहिल संकेत “क्रान्ति-चिन्तन” अछि।
२९९. (A) क्रान्ति-चिन्तन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “क्रान्ति-चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।
३००. (B) लेखक डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी), विधा गद्य, उप-विधा पंजाबी लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३०१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३०२. (D) ई पाठ पंजाबी लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३०३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३०४. (B) खण्ड 3585, सूचकांक पंक्ति 2276मे डॉ. प्रदीप कौड़ा (पंजाबी)क “क्रांति” प्रविष्टि गद्य, पंजाबी लघुकथा आ “क्रान्ति-चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३०५. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2277मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
३०६. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३०७. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

੩੦੮. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
੩੦੯. (B) लेखक अनुवाद: सान्त्वना मिश्र, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
੩੧੦. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
੩੧੧. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
੩੧੨. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
੩੧੩. (B) खण्ड 3586, सूचकांक पंक्ति 2277मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
੩੧੪. (A) करुण सत्य — सूचकांक पंक्ति 2278मे निरंजन बोहा (पंजाबी)क प्रविष्टि “करुण सत्य” रूपमे देल अछि।
੩੧੫. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
੩੧੬. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
੩੧੭. (D) पीड़ित परिवारक स्त्रीक अन्तर-विरोध: सरकारी सहायता लेल पति आतंकवादी हत्या – नैतिक द्वन्द्व। — टिप्पणीक पहिल संकेत “पीड़ित परिवारक स्त्रीक अन्तर-विरोध: सरकारी सहायता लेल पति आतंकवादी हत्या – नैतिक द्वन्द्व।” अछि।
੩੧੮. (A) पीड़ित परिवारक स्त्रीक अन्तर-विरोध: सरकारी सहायता लेल पति आतंकवादी हत्या – नैतिक द्वन्द्व। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पीड़ित परिवारक स्त्रीक अन्तर-विरोध: सरकारी सहायता लेल पति आतंकवादी हत्या – नैतिक द्वन्द्व।” रूपमे देखाइत अछि।
੩੧੯. (B) लेखक निरंजन बोहा (पंजाबी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
੩੨੦. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
੩੨੧. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
੩੨੨. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
੩੨੩. (B) खण्ड 3587, सूचकांक पंक्ति 2278मे निरंजन बोहा (पंजाबी)क “करुण सत्य” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “पीड़ित परिवारक स्त्रीक अन्तर-विरोध: सरकारी सहायता लेल पति आतंकवादी हत्या – नैतिक द्वन्द्व।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
੩੨੪. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2279मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
੩੨੫. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
੩੨੬. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
੩੨੭. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
੩੨੮. (B) लेखक अनुवाद: सान्त्वना मिश्र, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
੩੨੯. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
੩੩੦. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
੩੩੧. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
੩੩੨. (B) खण्ड 3588, सूचकांक पंक्ति 2279मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
੩੩੩. (A) कथानक — सूचकांक पंक्ति 2280मे जगदीश अरमानी (पंजाबी)क प्रविष्टि “कथानक” रूपमे देल अछि।
੩੩੪. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
੩੩੫. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
੩੩੬. (D) लेखक-कथानकक मेटा-फिक्शन — टिप्पणीक पहिल संकेत “लेखक-कथानकक मेटा-फिक्शन” अछि।

੩੩੭. (A) ਲੇਖਕ-ਕਥਾਨਕਕ ਮੈਟਾ-ਫਿਕਸ਼ਨ — ਸਮਾਲੋਚਨਾਤਮਕ ਟਿੱਪਣੀਮੇ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਅਰਥ-ਦਿਸ਼ਾ “ਲੇਖਕ-ਕਥਾਨਕਕ ਮੈਟਾ-ਫਿਕਸ਼ਨ” ਰੂਪਮੇ ਦੇਖਾਓਤ ਅਛਿ।
੩੩੮. (B) ਲੇਖਕ ਜਗਦੀਸ਼ ਅਰਮਾਨੀ (ਪੰਜਾਬੀ), ਵਿਧਾ ਗਧ, ਉਪ-ਵਿਧਾ ਲਘੁਕਥਾ — ਸੂਚਕਾਂਕ ਲੇਖਕ, ਪਾਠ, ਵਿਧਾ ਆ ਉਪ-ਵਿਧਾਕੋਂ ਏਕ ਸਾਥ ਰਖੈਤ ਅਛਿ।
੩੩੯. (C) ਸਮਾਲੋਚਨਾਤਮਕ ਟਿੱਪਣੀਕ ਕਾਰਣ। — ਟਿੱਪਣੀ ਪਾਠਕਕੋਂ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ਨਹਿ, ਅਰਥ-ਦਿਸ਼ਾ ਸੇਹੋ ਦੈਤ ਅਛਿ।
੩੪੦. (D) ਈ ਪਾਠ ਲਘੁਕਥਾਕ ਰੂਪਮੇ ਗਧ-ਸੰਸਾਰਸੋਂ ਜੁਡਲ ਅਛਿ। — ਵਿਧਾ ਆ ਉਪ-ਵਿਧਾ ਦੁਨੂ ਏਹਿ ਪਾਠਕ ਸਾਹਿਤਿਕ ਸਵਰੂਪਕੋਂ ਸਪਸ਼ਟ ਕਰੈਤ ਅਛਿ।
੩੪੧. (A) ਓ ਲੇਖਕ, ਪਾਠ ਆ ਆਲੋਚਨਾਤਮਕ ਸੰਕੇਤਕੋਂ ਏਕ ਸਾਥ ਉਪਲਬਧ ਕਰਬੈਤ ਅਛਿ। — ਪ੍ਰਵਿਠਿ ਅਧਯਯਨਕ ਲੇਲ ਆਧਾਰ-ਸੂਚਨਾ ਆ ਅਰਥ-ਸੂਤ੍ਰ ਦੁਨੂ ਦੈਤ ਅਛਿ।
੩੪੨. (B) ਖਣਡ 3589, ਸੂਚਕਾਂਕ ਪੰਕਤਿ 2280ਮੇ ਜਗਦੀਸ਼ ਅਰਮਾਨੀ (ਪੰਜਾਬੀ)ਕ “ਕਥਾਨਕ” ਪ੍ਰਵਿਠਿ ਗਧ, ਲਘੁਕਥਾ ਆ “ਲੇਖਕ-ਕਥਾਨਕਕ ਮੈਟਾ-ਫਿਕਸ਼ਨ” ਸੰਕੇਤ ਦੁਆਰਾ ਵਿਦੇਹ-ਸਦੇਹ 28ਕ ਸਾਹਿਤਿਕ-ਸਾਂਸਕ੍ਰਿਤਿਕ ਪਰਿਦ੍ਰਸ਼ਯਕੋਂ ਵਧਵਸਥਿਤ ਕਰੈਤ ਅਛਿ। — ਈ ਖਣਡ ਏਕ ਸ੍ਰੋਤ-ਪ੍ਰਵਿਠਿਕੋਂ ਪ੍ਰਸ਼ਨੋਤ੍ਤਰੀ ਰੂਪਮੇ ਖੋਲੈਤ ਅਛਿ।
੩੪੩. (A) ਈ ਵਿਕਲਪ ਮੁੱਖ ਪਾਠ-ਵਿਚਾਰਸੋਂ ਮੇਲ ਨਹਿ ਖਾਓਤ ਅਛਿ। — ਸੂਚਕਾਂਕ ਪੰਕਤਿ 2281ਮੇ ਅਨੁਵਾਦ: ਸਾਨ੍ਵਨਾ ਮਿਸ਼ਰਕ ਪ੍ਰਵਿਠਿ “” ਰੂਪਮੇ ਦੇਲ ਅਛਿ।
੩੪੪. (B) ਸਾਹਿਤਯ — ਵਿਧਾ-ਸ੍ਰਮਭਮੇ ਏਹਿ ਪ੍ਰਵਿਠਿਕੋਂ “ਸਾਹਿਤਯ” ਰੂਪਮੇ ਅੰਕਿਤ ਕਏਲ ਗੇਲ ਅਛਿ।
੩੪੫. (C) ਪ੍ਰਵਿਠਿ — ਉਪ-ਵਿਧਾ-ਸ੍ਰਮਭਮੇ ਏਹਿ ਪਾਠਕ ਸਵਰੂਪ “ਪ੍ਰਵਿਠਿ” ਅਛਿ।
੩੪੬. (A) ਈ ਵਿਕਲਪ ਮੁੱਖ ਪਾਠ-ਵਿਚਾਰਸੋਂ ਮੇਲ ਨਹਿ ਖਾਓਤ ਅਛਿ। — ਸਮਾਲੋਚਨਾਤਮਕ ਟਿੱਪਣੀਮੇ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਅਰਥ-ਦਿਸ਼ਾ “” ਰੂਪਮੇ ਦੇਖਾਓਤ ਅਛਿ।
੩੪੭. (B) ਲੇਖਕ ਅਨੁਵਾਦ: ਸਾਨ੍ਵਨਾ ਮਿਸ਼ਰ, ਵਿਧਾ ਸਾਹਿਤਯ, ਉਪ-ਵਿਧਾ ਪ੍ਰਵਿਠਿ — ਸੂਚਕਾਂਕ ਲੇਖਕ, ਪਾਠ, ਵਿਧਾ ਆ ਉਪ-ਵਿਧਾਕੋਂ ਏਕ ਸਾਥ ਰਖੈਤ ਅਛਿ।
੩੪੮. (C) ਸਮਾਲੋਚਨਾਤਮਕ ਟਿੱਪਣੀਕ ਕਾਰਣ। — ਟਿੱਪਣੀ ਪਾਠਕਕੋਂ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ਨਹਿ, ਅਰਥ-ਦਿਸ਼ਾ ਸੇਹੋ ਦੈਤ ਅਛਿ।
੩੪੯. (D) ਈ ਪਾਠ ਪ੍ਰਵਿਠਿਕ ਰੂਪਮੇ ਸਾਹਿਤਯ-ਸੰਸਾਰਸੋਂ ਜੁਡਲ ਅਛਿ। — ਵਿਧਾ ਆ ਉਪ-ਵਿਧਾ ਦੁਨੂ ਏਹਿ ਪਾਠਕ ਸਾਹਿਤਿਕ ਸਵਰੂਪਕੋਂ ਸਪਸ਼ਟ ਕਰੈਤ ਅਛਿ।
੩੫੦. (A) ਓ ਲੇਖਕ, ਪਾਠ ਆ ਆਲੋਚਨਾਤਮਕ ਸੰਕੇਤਕੋਂ ਏਕ ਸਾਥ ਉਪਲਬਧ ਕਰਬੈਤ ਅਛਿ। — ਪ੍ਰਵਿਠਿ ਅਧਯਯਨਕ ਲੇਲ ਆਧਾਰ-ਸੂਚਨਾ ਆ ਅਰਥ-ਸੂਤ੍ਰ ਦੁਨੂ ਦੈਤ ਅਛਿ।
੩੫੧. (B) ਖਣਡ 3590, ਸੂਚਕਾਂਕ ਪੰਕਤਿ 2281ਮੇ ਅਨੁਵਾਦ: ਸਾਨ੍ਵਨਾ ਮਿਸ਼ਰਕ “” ਪ੍ਰਵਿਠਿ ਸਾਹਿਤਯ, ਪ੍ਰਵਿਠਿ ਆ “” ਸੰਕੇਤ ਦੁਆਰਾ ਵਿਦੇਹ-ਸਦੇਹ 28ਕ ਸਾਹਿਤਿਕ-ਸਾਂਸਕ੍ਰਿਤਿਕ ਪਰਿਦ੍ਰਸ਼ਯਕੋਂ ਵਧਵਸਥਿਤ ਕਰੈਤ ਅਛਿ। — ਈ ਖਣਡ ਏਕ ਸ੍ਰੋਤ-ਪ੍ਰਵਿਠਿਕੋਂ ਪ੍ਰਸ਼ਨੋਤ੍ਤਰੀ ਰੂਪਮੇ ਖੋਲੈਤ ਅਛਿ।
੩੫੨. (A) ਆਚਰਣ — ਸੂਚਕਾਂਕ ਪੰਕਤਿ 2282ਮੇ ਜੰਗਬਹਾਦੁਰ ਸਿੰਹ ਧੁਮ੍ਮਣ (ਪੰਜਾਬੀ)ਕ ਪ੍ਰਵਿਠਿ “ਆਚਰਣ” ਰੂਪਮੇ ਦੇਲ ਅਛਿ।
੩੫੩. (B) ਗਧ — ਵਿਧਾ-ਸ੍ਰਮਭਮੇ ਏਹਿ ਪ੍ਰਵਿਠਿਕੋਂ “ਗਧ” ਰੂਪਮੇ ਅੰਕਿਤ ਕਏਲ ਗੇਲ ਅਛਿ।
੩੫੪. (C) ਲਘੁਕਥਾ — ਉਪ-ਵਿਧਾ-ਸ੍ਰਮਭਮੇ ਏਹਿ ਪਾਠਕ ਸਵਰੂਪ “ਲਘੁਕਥਾ” ਅਛਿ।
੩੫੫. (D) ਸ਼ੋਸ਼ਿਤ ਨਾਤੀ-ਦਾਦਾ ਸੰਵਾਦ: ਏਕਟਾ ਰੁਪਿਯਾਕ ਮ੍ਰਿਯੁਪਤ੍ਰ – ਰਾਜਯਕ ਵਯਙ੍ਯ। — ਟਿੱਪਣੀਕ ਪਹਿਲ ਸੰਕੇਤ “ਸ਼ੋਸ਼ਿਤ ਨਾਤੀ-ਦਾਦਾ ਸੰਵਾਦ: ਏਕਟਾ ਰੁਪਿਯਾਕ ਮ੍ਰਿਯੁਪਤ੍ਰ – ਰਾਜਯਕ ਵਯਙ੍ਯ।” ਅਛਿ।
੩੫੬. (A) ਸ਼ੋਸ਼ਿਤ ਨਾਤੀ-ਦਾਦਾ ਸੰਵਾਦ: ਏਕਟਾ ਰੁਪਿਯਾਕ ਮ੍ਰਿਯੁਪਤ੍ਰ – ਰਾਜਯਕ ਵਯਙ੍ਯ। — ਸਮਾਲੋਚਨਾਤਮਕ ਟਿੱਪਣੀਮੇ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਅਰਥ-ਦਿਸ਼ਾ “ਸ਼ੋਸ਼ਿਤ ਨਾਤੀ-ਦਾਦਾ ਸੰਵਾਦ: ਏਕਟਾ ਰੁਪਿਯਾਕ ਮ੍ਰਿਯੁਪਤ੍ਰ – ਰਾਜਯਕ ਵਯਙ੍ਯ।” ਰੂਪਮੇ ਦੇਖਾਓਤ ਅਛਿ।
੩੫੭. (B) ਲੇਖਕ ਜੰਗਬਹਾਦੁਰ ਸਿੰਹ ਧੁਮ੍ਮਣ (ਪੰਜਾਬੀ), ਵਿਧਾ ਗਧ, ਉਪ-ਵਿਧਾ ਲਘੁਕਥਾ — ਸੂਚਕਾਂਕ ਲੇਖਕ, ਪਾਠ, ਵਿਧਾ ਆ ਉਪ-ਵਿਧਾਕੋਂ ਏਕ ਸਾਥ ਰਖੈਤ ਅਛਿ।
੩੫੮. (C) ਸਮਾਲੋਚਨਾਤਮਕ ਟਿੱਪਣੀਕ ਕਾਰਣ। — ਟਿੱਪਣੀ ਪਾਠਕਕੋਂ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ਨਹਿ, ਅਰਥ-ਦਿਸ਼ਾ ਸੇਹੋ ਦੈਤ ਅਛਿ।
੩੫੯. (D) ਈ ਪਾਠ ਲਘੁਕਥਾਕ ਰੂਪਮੇ ਗਧ-ਸੰਸਾਰਸੋਂ ਜੁਡਲ ਅਛਿ। — ਵਿਧਾ ਆ ਉਪ-ਵਿਧਾ ਦੁਨੂ ਏਹਿ ਪਾਠਕ ਸਾਹਿਤਿਕ ਸਵਰੂਪਕੋਂ ਸਪਸ਼ਟ ਕਰੈਤ ਅਛਿ।
੩੬੦. (A) ਓ ਲੇਖਕ, ਪਾਠ ਆ ਆਲੋਚਨਾਤਮਕ ਸੰਕੇਤਕੋਂ ਏਕ ਸਾਥ ਉਪਲਬਧ ਕਰਬੈਤ ਅਛਿ। — ਪ੍ਰਵਿਠਿ ਅਧਯਯਨਕ ਲੇਲ ਆਧਾਰ-ਸੂਚਨਾ ਆ ਅਰਥ-ਸੂਤ੍ਰ ਦੁਨੂ ਦੈਤ ਅਛਿ।
੩੬੧. (B) ਖਣਡ 3591, ਸੂਚਕਾਂਕ ਪੰਕਤਿ 2282ਮੇ ਜੰਗਬਹਾਦੁਰ ਸਿੰਹ ਧੁਮ੍ਮਣ (ਪੰਜਾਬੀ)ਕ “ਆਚਰਣ” ਪ੍ਰਵਿਠਿ ਗਧ, ਲਘੁਕਥਾ ਆ “ਸ਼ੋਸ਼ਿਤ ਨਾਤੀ-ਦਾਦਾ ਸੰਵਾਦ: ਏਕਟਾ ਰੁਪਿਯਾਕ ਮ੍ਰਿਯੁਪਤ੍ਰ – ਰਾਜਯਕ ਵਯਙ੍ਯ।” ਸੰਕੇਤ ਦੁਆਰਾ ਵਿਦੇਹ-ਸਦੇਹ 28ਕ ਸਾਹਿਤਿਕ-ਸਾਂਸਕ੍ਰਿਤਿਕ ਪਰਿਦ੍ਰਸ਼ਯਕੋਂ ਵਧਵਸਥਿਤ ਕਰੈਤ ਅਛਿ। — ਈ ਖਣਡ ਏਕ ਸ੍ਰੋਤ-ਪ੍ਰਵਿਠਿਕੋਂ ਪ੍ਰਸ਼ਨੋਤ੍ਤਰੀ ਰੂਪਮੇ ਖੋਲੈਤ ਅਛਿ।
੩੬੨. (A) ਈ ਵਿਕਲਪ ਮੁੱਖ ਪਾਠ-ਵਿਚਾਰਸੋਂ ਮੇਲ ਨਹਿ ਖਾਓਤ ਅਛਿ। — ਸੂਚਕਾਂਕ ਪੰਕਤਿ 2283ਮੇ ਅਨੁਵਾਦ: ਸਾਨ੍ਵਨਾ ਮਿਸ਼ਰਕ ਪ੍ਰਵਿਠਿ “” ਰੂਪਮੇ ਦੇਲ ਅਛਿ।
੩੬੩. (B) ਸਾਹਿਤਯ — ਵਿਧਾ-ਸ੍ਰਮਭਮੇ ਏਹਿ ਪ੍ਰਵਿਠਿਕੋਂ “ਸਾਹਿਤਯ” ਰੂਪਮੇ ਅੰਕਿਤ ਕਏਲ ਗੇਲ ਅਛਿ।
੩੬੪. (C) ਪ੍ਰਵਿਠਿ — ਉਪ-ਵਿਧਾ-ਸ੍ਰਮਭਮੇ ਏਹਿ ਪਾਠਕ ਸਵਰੂਪ “ਪ੍ਰਵਿਠਿ” ਅਛਿ।

३६५. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
३६६. (B) लेखक अनुवाद: सान्त्वना मिश्र, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३६८. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३७०. (B) खण्ड 3592, सूचकांक पंक्ति 2283मे अनुवाद: सान्त्वना मिश्रक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३७१. (A) जन्त (स्वर्ग) — सूचकांक पंक्ति 2284मे दीपक बुदकी (उर्दू)क प्रविष्टि “जन्त (स्वर्ग)” रूपमे देल अछि।
३७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३७३. (C) उर्दू लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उर्दू लघुकथा” अछि।
३७४. (D) समानान्तर-व्यंग्य: जन्तक दरोगा आतंकवादीकेँ हिटलर, चंगेज खाँ बीच पठाबैत अछि – पाप-पुण्य सापेक्षता। — टिप्पणीक पहिल संकेत “समानान्तर-व्यंग्य: जन्तक दरोगा आतंकवादीकेँ हिटलर, चंगेज खाँ बीच पठाबैत अछि – पाप-पुण्य सापेक्षता।” अछि।
३७५. (A) समानान्तर-व्यंग्य: जन्तक दरोगा आतंकवादीकेँ हिटलर, चंगेज खाँ बीच पठाबैत अछि – पाप-पुण्य सापेक्षता। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समानान्तर-व्यंग्य: जन्तक दरोगा आतंकवादीकेँ हिटलर, चंगेज खाँ बीच पठाबैत अछि – पाप-पुण्य सापेक्षता।” रूपमे देखाइत अछि।
३७६. (B) लेखक दीपक बुदकी (उर्दू), विधा गद्य, उप-विधा उर्दू लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३७८. (D) ई पाठ उर्दू लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३७९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३८०. (B) खण्ड 3593, सूचकांक पंक्ति 2284मे दीपक बुदकी (उर्दू)क “जन्त (स्वर्ग)” प्रविष्टि गद्य, उर्दू लघुकथा आ “समानान्तर-व्यंग्य: जन्तक दरोगा आतंकवादीकेँ हिटलर, चंगेज खाँ बीच पठाबैत अछि – पाप-पुण्य सापेक्षता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३८१. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2285मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
३८२. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३८३. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
३८४. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
३८५. (B) लेखक अनुवाद: डॉ. आभा झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३८७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३८९. (B) खण्ड 3594, सूचकांक पंक्ति 2285मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३९०. (A) ईनाम — सूचकांक पंक्ति 2286मे मुबशिर अली जैदी (उर्दू)क प्रविष्टि “ईनाम” रूपमे देल अछि।
३९१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३९२. (C) व्यंग्य लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य लघुकथा” अछि।

३९३. (D) सपनाक बदला ईनाम: झूठ सपना ईनाम 'सरकारी नौकरी' देबाक खतरा – भ्रष्टाचारक ध्वनि। — टिप्पणीक पहिल संकेत “सपनाक बदला ईनाम: झूठ सपना ईनाम 'सरकारी नौकरी' देबाक खतरा – भ्रष्टाचारक ध्वनि।” अछि।
३९४. (A) सपनाक बदला ईनाम: झूठ सपना ईनाम 'सरकारी नौकरी' देबाक खतरा – भ्रष्टाचारक ध्वनि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सपनाक बदला ईनाम: झूठ सपना ईनाम 'सरकारी नौकरी' देबाक खतरा – भ्रष्टाचारक ध्वनि।” रूपमे देखाइत अछि।
३९५. (B) लेखक मुबशिशर अली जैदी (उर्दू), विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३९७. (D) ई पाठ व्यंग्य लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३९९. (B) खण्ड 3595, सूचकांक पंक्ति 2286मे मुबशिशर अली जैदी (उर्दू)क “ईनाम” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य लघुकथा आ “सपनाक बदला ईनाम: झूठ सपना ईनाम 'सरकारी नौकरी' देबाक खतरा – भ्रष्टाचारक ध्वनि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४००. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2287मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
४०१. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४०२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४०३. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
४०४. (B) लेखक अनुवाद: डॉ. आभा झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४०५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४०६. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४०७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४०८. (B) खण्ड 3596, सूचकांक पंक्ति 2287मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४०९. (A) फेर मनुक्खक की भेले? — सूचकांक पंक्ति 2288मे इब्न आसी (उर्दू)क प्रविष्टि “फेर मनुक्खक की भेले?” रूपमे देल अछि।
४१०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४११. (C) दार्शनिक लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दार्शनिक लघुकथा” अछि।
४१२. (D) नूहक नाउ सन्दर्भ: ‘मनुक्ख’ नै सवारी – आधुनिक अमानवीयता प्रश्न। — टिप्पणीक पहिल संकेत “नूहक नाउ सन्दर्भ: ‘मनुक्ख’ नै सवारी – आधुनिक अमानवीयता प्रश्न।” अछि।
४१३. (A) नूहक नाउ सन्दर्भ: ‘मनुक्ख’ नै सवारी – आधुनिक अमानवीयता प्रश्न। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नूहक नाउ सन्दर्भ: ‘मनुक्ख’ नै सवारी – आधुनिक अमानवीयता प्रश्न।” रूपमे देखाइत अछि।
४१४. (B) लेखक इब्न आसी (उर्दू), विधा गद्य, उप-विधा दार्शनिक लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४१५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४१६. (D) ई पाठ दार्शनिक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४१७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४१८. (B) खण्ड 3597, सूचकांक पंक्ति 2288मे इब्न आसी (उर्दू)क “फेर मनुक्खक की भेले?” प्रविष्टि गद्य, दार्शनिक लघुकथा आ “नूहक नाउ सन्दर्भ: ‘मनुक्ख’ नै सवारी – आधुनिक अमानवीयता प्रश्न।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४१९. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2289मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

४२०. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४२१. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४२२. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
४२३. (B) लेखक अनुवाद: डॉ. आभा झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४२४. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४२५. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४२६. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४२७. (B) खण्ड 3598, सूचकांक पंक्ति 2289मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४२८. (A) बिना शीर्षकक — सूचकांक पंक्ति 2290मे रतन सिंह (उर्दू)क प्रविष्टि “बिना शीर्षकक” रूपमे देल अछि।
४२९. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४३०. (C) लघुकथा/सूक्ति — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/सूक्ति” अछि।
४३१. (D) तोता-उल्लू संवाद: ‘सञ्चय पूँजीवाद’क व्यङ्ग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “तोता-उल्लू संवाद: ‘सञ्चय पूँजीवाद’क व्यङ्ग्य” अछि।
४३२. (A) तोता-उल्लू संवाद: ‘सञ्चय पूँजीवाद’क व्यङ्ग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तोता-उल्लू संवाद: ‘सञ्चय पूँजीवाद’क व्यङ्ग्य” रूपमे देखाइत अछि।
४३३. (B) लेखक रतन सिंह (उर्दू), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/सूक्ति — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४३४. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४३५. (D) ई पाठ लघुकथा/सूक्तिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४३६. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४३७. (B) खण्ड 3599, सूचकांक पंक्ति 2290मे रतन सिंह (उर्दू)क “बिना शीर्षकक” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/सूक्ति आ “तोता-उल्लू संवाद: ‘सञ्चय पूँजीवाद’क व्यङ्ग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४३८. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2291मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
४३९. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४४०. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४४१. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
४४२. (B) लेखक अनुवाद: डॉ. आभा झा, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४४३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४४४. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४४५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४४६. (B) खण्ड 3600, सूचकांक पंक्ति 2291मे अनुवाद: डॉ. आभा झाक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४४७. (A) तितली आ प्रेम — सूचकांक पंक्ति 2292मे सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क प्रविष्टि “तितली आ प्रेम” रूपमे देल अछि।
४४८. (B) पद्यात्मक गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्यात्मक गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४४९. (C) प्रेम-आख्यानिका — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रेम-आख्यानिका” अछि।

४५०. (D) भारतीय काम-सूत्रीय रीति: तितली-चिड़िया रूपक – प्रेमक कोमल आकस्मिकता, शृङ्गार रस। — टिप्पणीक पहिल संकेत “भारतीय काम-सूत्रीय रीति: तितली-चिड़िया रूपक – प्रेमक कोमल आकस्मिकता, शृङ्गार रस।” अछि।
४५१. (A) भारतीय काम-सूत्रीय रीति: तितली-चिड़िया रूपक – प्रेमक कोमल आकस्मिकता, शृङ्गार रस। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भारतीय काम-सूत्रीय रीति: तितली-चिड़िया रूपक – प्रेमक कोमल आकस्मिकता, शृङ्गार रस।” रूपमे देखाइत अछि।
४५२. (B) लेखक सच्चिदानन्द कर (ओडिया), विधा पद्यात्मक गद्य, उप-विधा प्रेम-आख्यानिका — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४५३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४५४. (D) ई पाठ प्रेम-आख्यानिकाक रूपमे पद्यात्मक गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४५५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४५६. (B) खण्ड 3601, सूचकांक पंक्ति 2292मे सच्चिदानन्द कर (ओडिया)क “तितली आ प्रेम” प्रविष्टि पद्यात्मक गद्य, प्रेम-आख्यानिका आ “भारतीय काम-सूत्रीय रीति: तितली-चिड़िया रूपक – प्रेमक कोमल आकस्मिकता, शृङ्गार रस।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४५७. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2293मे अनुवाद: जोनासलका महान्तिक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
४५८. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४५९. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४६०. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
४६१. (B) लेखक अनुवाद: जोनासलका महान्ति, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४६२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४६३. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४६४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४६५. (B) खण्ड 3602, सूचकांक पंक्ति 2293मे अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४६६. (A) मेमोरीचिप्स — सूचकांक पंक्ति 2294मे प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क प्रविष्टि “मेमोरीचिप्स” रूपमे देल अछि।
४६७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४६८. (C) वैज्ञानिक लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “वैज्ञानिक लघुकथा” अछि।
४६९. (D) मृत्यु-पश्चात मेमोरी चिप – नव्य-न्यायक ‘आत्मा’ बहसक वैज्ञानिक पुनर्पाठ। — टिप्पणीक पहिल संकेत “मृत्यु-पश्चात मेमोरी चिप – नव्य-न्यायक ‘आत्मा’ बहसक वैज्ञानिक पुनर्पाठ।” अछि।
४७०. (A) मृत्यु-पश्चात मेमोरी चिप – नव्य-न्यायक ‘आत्मा’ बहसक वैज्ञानिक पुनर्पाठ। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मृत्यु-पश्चात मेमोरी चिप – नव्य-न्यायक ‘आत्मा’ बहसक वैज्ञानिक पुनर्पाठ।” रूपमे देखाइत अछि।
४७१. (B) लेखक प्रज्ञा महान्ति (ओडिया), विधा गद्य, उप-विधा वैज्ञानिक लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४७२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४७३. (D) ई पाठ वैज्ञानिक लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४७४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४७५. (B) खण्ड 3603, सूचकांक पंक्ति 2294मे प्रज्ञा महान्ति (ओडिया)क “मेमोरीचिप्स” प्रविष्टि गद्य, वैज्ञानिक लघुकथा आ “मृत्यु-पश्चात मेमोरी चिप – नव्य-न्यायक ‘आत्मा’ बहसक वैज्ञानिक पुनर्पाठ।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई

खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४७६. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2295मे अनुवाद: जोनासलका महान्तिक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
४७७. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४७८. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४७९. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
४८०. (B) लेखक अनुवाद: जोनासलका महान्ति, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४८१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४८२. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४८३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४८४. (B) खण्ड 3604, सूचकांक पंक्ति 2295मे अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४८५. (A) कर्मफल — सूचकांक पंक्ति 2296मे विनय कुमार दास (ओडिया)क प्रविष्टि “कर्मफल” रूपमे देल अछि।
४८६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४८७. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
४८८. (D) भूत-कथा शैलीमे कर्मफलक उपदेश — टिप्पणीक पहिल संकेत “भूत-कथा शैलीमे कर्मफलक उपदेश” अछि।
४८९. (A) भूत-कथा शैलीमे कर्मफलक उपदेश — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भूत-कथा शैलीमे कर्मफलक उपदेश” रूपमे देखाइत अछि।
४९०. (B) लेखक विनय कुमार दास (ओडिया), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४९१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४९२. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४९३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४९४. (B) खण्ड 3605, सूचकांक पंक्ति 2296मे विनय कुमार दास (ओडिया)क “कर्मफल” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “भूत-कथा शैलीमे कर्मफलक उपदेश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४९५. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2297मे अनुवाद: जोनासलका महान्तिक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
४९६. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४९७. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
४९८. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
४९९. (B) लेखक अनुवाद: जोनासलका महान्ति, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५०१. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५०२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५०३. (B) खण्ड 3606, सूचकांक पंक्ति 2297मे अनुवाद: जोनासलका महान्तिक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५०४. (A) बुझौअलि — सूचकांक पंक्ति 2298मे गायत्री दास (ओडिया)क प्रविष्टि “बुझौअलि” रूपमे देल अछि।

५०५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५०६. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
५०७. (D) ड्रग्स पीड़ित बेटाक बापक डाक्टर सँ बिनती – निहित वक्रोक्ति: ‘बुझाइ’ पाखण्डक उधार। — टिप्पणीक पहिल संकेत “ड्रग्स पीड़ित बेटाक बापक डाक्टर सँ बिनती – निहित वक्रोक्ति: ‘बुझाइ’ पाखण्डक उधार।” अछि।
५०८. (A) ड्रग्स पीड़ित बेटाक बापक डाक्टर सँ बिनती – निहित वक्रोक्ति: ‘बुझाइ’ पाखण्डक उधार। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ड्रग्स पीड़ित बेटाक बापक डाक्टर सँ बिनती – निहित वक्रोक्ति: ‘बुझाइ’ पाखण्डक उधार।” रूपमे देखाइत अछि।
५०९. (B) लेखक गायत्री दास (ओडिया), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५१०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५११. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५१२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५१३. (B) खण्ड 3607, सूचकांक पंक्ति 2298मे गायत्री दास (ओडिया)क “बुझौअलि” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ड्रग्स पीड़ित बेटाक बापक डाक्टर सँ बिनती – निहित वक्रोक्ति: ‘बुझाइ’ पाखण्डक उधार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५१४. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2299मे अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
५१५. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५१६. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
५१७. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
५१८. (B) लेखक अनुवाद: तन्मया तपस्विनी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५१९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५२०. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५२१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५२२. (B) खण्ड 3608, सूचकांक पंक्ति 2299मे अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५२३. (A) संगी — सूचकांक पंक्ति 2300मे मिनती प्रधान (ओडिया)क प्रविष्टि “संगी” रूपमे देल अछि।
५२४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५२५. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
५२६. (D) मित्रताक अन्तरंगता — टिप्पणीक पहिल संकेत “मित्रताक अन्तरंगता” अछि।
५२७. (A) मित्रताक अन्तरंगता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मित्रताक अन्तरंगता” रूपमे देखाइत अछि।
५२८. (B) लेखक मिनती प्रधान (ओडिया), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५२९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५३०. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५३१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५३२. (B) खण्ड 3609, सूचकांक पंक्ति 2300मे मिनती प्रधान (ओडिया)क “संगी” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मित्रताक अन्तरंगता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५३३. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2301मे अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

५३४. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५३५. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
५३६. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
५३७. (B) लेखक अनुवाद: तन्मया तपस्विनी, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५३८. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५३९. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५४०. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५४१. (B) खण्ड 3610, सूचकांक पंक्ति 2301मे अनुवाद: तन्मया तपस्विनीक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५४२. (A) एकटा आर रबि — सूचकांक पंक्ति 2302मे गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क प्रविष्टि “एकटा आर रबि” रूपमे देल अछि।
५४३. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५४४. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
५४५. (D) अकेल बूढ़ व्यक्तिक दिनचर्या — टिप्पणीक पहिल संकेत “अकेल बूढ़ व्यक्तिक दिनचर्या” अछि।
५४६. (A) अकेल बूढ़ व्यक्तिक दिनचर्या — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अकेल बूढ़ व्यक्तिक दिनचर्या” रूपमे देखाइत अछि।
५४७. (B) लेखक गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५४८. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५४९. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५५०. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५५१. (B) खण्ड 3611, सूचकांक पंक्ति 2302मे गैस्पर अल्मीडा (अंग्रेजी)क “एकटा आर रबि” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “अकेल बूढ़ व्यक्तिक दिनचर्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५५२. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2303मे अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
५५३. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५५४. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
५५५. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
५५६. (B) लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५५८. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५६०. (B) खण्ड 3612, सूचकांक पंक्ति 2303मे अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५६१. (A) सोंगर — सूचकांक पंक्ति 2304मे सेबी फर्नाण्डिस (कोंकणी)क प्रविष्टि “सोंगर” रूपमे देल अछि।
५६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५६३. (C) लोक-व्यवहार कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लोक-व्यवहार कथा” अछि।

५६४. (D) बलि/मांसभोजी परम्पराक मार्क्सवादी-मनोवैज्ञानिक छानबीन — टिप्पणीक पहिल संकेत “बलि/मांसभोजी परम्पराक मार्क्सवादी-मनोवैज्ञानिक छानबीन” अछि।
५६५. (A) बलि/मांसभोजी परम्पराक मार्क्सवादी-मनोवैज्ञानिक छानबीन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बलि/मांसभोजी परम्पराक मार्क्सवादी-मनोवैज्ञानिक छानबीन” रूपमे देखाइत अछि।
५६६. (B) लेखक सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी), विधा गद्य, उप-विधा लोक-व्यवहार कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५६८. (D) ई पाठ लोक-व्यवहार कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५६९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५७०. (B) खण्ड 3613, सूचकांक पंक्ति 2304मे सेबी फर्नाण्डीस (कोंकणी)क “सोंगर” प्रविष्टि गद्य, लोक-व्यवहार कथा आ “बलि/मांसभोजी परम्पराक मार्क्सवादी-मनोवैज्ञानिक छानबीन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५७१. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2305मे अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
५७२. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५७३. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
५७४. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
५७५. (B) लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५७७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५७९. (B) खण्ड 3614, सूचकांक पंक्ति 2305मे अनुवाद: डॉ. शम्भु सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५८०. (A) मृत्युकें टारब, नागपंचमी — सूचकांक पंक्ति 2306मे वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क प्रविष्टि “मृत्युकें टारब, नागपंचमी” रूपमे देल अछि।
५८१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५८२. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
५८३. (D) मृत्यु-अनुष्ठान, अर्ध-जीवित बेटा – सामाजिक दबाव, वर्गीय शोषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “मृत्यु-अनुष्ठान, अर्ध-जीवित बेटा – सामाजिक दबाव, वर्गीय शोषण” अछि।
५८४. (A) मृत्यु-अनुष्ठान, अर्ध-जीवित बेटा – सामाजिक दबाव, वर्गीय शोषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मृत्यु-अनुष्ठान, अर्ध-जीवित बेटा – सामाजिक दबाव, वर्गीय शोषण” रूपमे देखाइत अछि।
५८५. (B) लेखक वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी), विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५८७. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५८९. (B) खण्ड 3615, सूचकांक पंक्ति 2306मे वसन्त भगवंत सावंत (कोंकणी)क “मृत्युकें टारब, नागपंचमी” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मृत्यु-अनुष्ठान, अर्ध-जीवित बेटा – सामाजिक दबाव, वर्गीय शोषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५९०. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2307मे अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
५९१. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५९२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
५९३. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
५९४. (B) लेखक अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीस, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५९५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५९६. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५९७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५९८. (B) खण्ड 3616, सूचकांक पंक्ति 2307मे अनुवाद: सेबी फर्नाण्डीसक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५९९. (A) गप, हिलकोर — सूचकांक पंक्ति 2308मे इस्मिता सारंगी (ओडिया)क प्रविष्टि “गप, हिलकोर” रूपमे देल अछि।
६००. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६०१. (C) आधुनिक कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आधुनिक कविता” अछि।
६०२. (D) स्त्री-मनक तरंग — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री-मनक तरंग” अछि।
६०३. (A) स्त्री-मनक तरंग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्री-मनक तरंग” रूपमे देखाइत अछि।
६०४. (B) लेखक इस्मिता सारंगी (ओडिया), विधा पद्य, उप-विधा आधुनिक कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६०५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६०६. (D) ई पाठ आधुनिक कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६०७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६०८. (B) खण्ड 3617, सूचकांक पंक्ति 2308मे इस्मिता सारंगी (ओडिया)क “गप, हिलकोर” प्रविष्टि पद्य, आधुनिक कविता आ “स्त्री-मनक तरंग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६०९. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2309मे अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
६१०. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६११. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
६१२. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
६१३. (B) लेखक अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६१४. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६१५. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६१६. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६१७. (B) खण्ड 3618, सूचकांक पंक्ति 2309मे अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६१८. (A) अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर — सूचकांक पंक्ति 2310मे अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क प्रविष्टि “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर” रूपमे देल अछि।
६१९. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६२०. (C) तेलुगु कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “तेलुगु कविता” अछि।
६२१. (D) तेलंगाना किसान आत्महत्याक करुण पक्ष — टिप्पणीक पहिल संकेत “तेलंगाना किसान आत्महत्याक करुण पक्ष” अछि।
६२२. (A) तेलंगाना किसान आत्महत्याक करुण पक्ष — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तेलंगाना किसान आत्महत्याक करुण पक्ष” रूपमे देखाइत अछि।
६२३. (B) लेखक अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु), विधा पद्य, उप-विधा तेलुगु कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६२४. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६२५. (D) ई पाठ तेलुगु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
६२६. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६२७. (B) खण्ड 3619, सूचकांक पंक्ति 2310मे अन्नावरन देवेन्दर (तेलुगु)क “अन्तिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर” प्रविष्टि पद्य, तेलुगु कविता आ “तेलंगाना किसान आत्महत्याक करुण पक्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६२८. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2311मे अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
६२९. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६३०. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
६३१. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
६३२. (B) लेखक अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६३३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६३४. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
६३५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६३६. (B) खण्ड 3620, सूचकांक पंक्ति 2311मे अनुवाद: पी.जयलक्ष्मी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६३७. (A) पद्य — सूचकांक पंक्ति 2312मे हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती)क प्रविष्टि “पद्य” रूपमे देल अछि।
६३८. (B) गुजराती कविता — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गुजराती कविता” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६३९. (C) उत्तर-आधुनिक प्रेम/समीकरण; नव्य-न्याय: दू ध्रुवक असमानान्तर सापेक्षता। — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उत्तर-आधुनिक प्रेम/समीकरण; नव्य-न्याय: दू ध्रुवक असमानान्तर सापेक्षता।” अछि।
६४०. (D) पद्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “पद्य” अछि।
६४१. (A) पद्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पद्य” रूपमे देखाइत अछि।
६४२. (B) लेखक हेमांग आश्विनकुमार देसाइ (गुजराती), विधा गुजराती कविता, उप-विधा उत्तर-आधुनिक प्रेम/समीकरण; नव्य-न्याय: दू ध्रुवक असमानान्तर सापेक्षता। — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६४३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६४४. (D) ई पाठ उत्तर-आधुनिक प्रेम/समीकरण; नव्य-न्याय: दू ध्रुवक असमानान्तर सापेक्षता।क रूपमे गुजराती कविता-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
६४५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

૬૪૬. (B) ખણ્ડ 3621, સૂચકાંક પંક્તિ 2312મે હેમાંગ આશ્વિનકુમાર દેસાઈ (ગુજરાતી)ક “પઘ” પ્રવિષ્ટિ ગુજરાતી કવિતા, ઉત્તર-આધુનિક પ્રેમ/સમીકરણ; નવ્ય-ન્યાય: દૂ ધ્રુવક અસમાનાન્તર સાપેક્ષતા। આ “પઘ” સંકેત દ્વારા વિદેહ-સદેહ 28ક સાહિત્યિક-સાંસ્કૃતિક પરિદૃશ્યકેં વ્યવસ્થિત કરૈત અણિ। — ઈં ખણ્ડ ંક સ્રોત-પ્રવિષ્ટિકેં પ્રશ્નોત્તરી રૂપમે ઁલૈત અણિ।
૬૪૭. (A) ઈં વિકલ્પ મુખ્ય પાઠ-વિચારસેં મેલ નહિ ઁાઈત અણિ। — સૂચકાંક પંક્તિ 2313મે અનુવાદ: દેસાઈ, ગજેન્દ્ર ઠાકુરક પ્રવિષ્ટિ “” રૂપમે દેલ અણિ।
૬૪૮. (B) સાહિત્ય — વિધા-સ્તમ્ભમે ંહિ પ્રવિષ્ટિકેં “સાહિત્ય” રૂપમે અંકિત કંલ ગેલ અણિ।
૬૪૯. (C) પ્રવિષ્ટિ — ઁપ-વિધા-સ્તમ્ભમે ંહિ પાઠક સ્વરૂપ “પ્રવિષ્ટિ” અણિ।
૬૫૦. (A) ઈં વિકલ્પ મુખ્ય પાઠ-વિચારસેં મેલ નહિ ઁાઈત અણિ। — સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીમે પ્રમુખ અર્થ-દિશા “” રૂપમે દેઁાઈત અણિ।
૬૫૧. (B) લેખક અનુવાદ: દેસાઈ, ગજેન્દ્ર ઠાકુર, વિધા સાહિત્ય, ઁપ-વિધા પ્રવિષ્ટિ — સૂચકાંક લેખક, પાઠ, વિધા આ ઁપ-વિધાકેં ંક સાથ રઁત અણિ।
૬૫૨. (C) સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીક કારણ। — ટિપ્પણી પાઠકકેં કેવલ નામ નહિ, અર્થ-દિશા સેહો દૈત અણિ।
૬૫૩. (D) ઈં પાઠ પ્રવિષ્ટિક રૂપમે સાહિત્ય-સંસારસેં ઁુઢલ અણિ। — વિધા આ ઁપ-વિધા ઢુનૂ ંહિ પાઠક સાહિત્યિક સ્વરૂપકેં સ્પષ્ટ કરૈત અણિ।
૬૫૪. (A) ંો લેખક, પાઠ આ આલોચનાત્મક સંકેતકેં ંક સાથ ઁપલબ્ધ કરૈત અણિ। — પ્રવિષ્ટિ અધ્યયનક લેલ આધાર-સૂચના આ અર્થ-સૂત્ર ઢુનૂ દૈત અણિ।
૬૫૫. (B) ઁણ્ડ 3622, સૂચકાંક પંક્તિ 2313મે અનુવાદ: દેસાઈ, ગજેન્દ્ર ઠાકુરક “” પ્રવિષ્ટિ સાહિત્ય, પ્રવિષ્ટિ આ “” સંકેત દ્વારા વિદેહ-સદેહ 28ક સાહિત્યિક-સાંસ્કૃતિક પરિદૃશ્યકેં વ્યવસ્થિત કરૈત અણિ। — ઈં ઁણ્ડ ંક સ્રોત-પ્રવિષ્ટિકેં પ્રશ્નોત્તરી રૂપમે ઁલૈત અણિ।
૬૫૬. (A) અહાંક તામસ હમર સ્વાગતપથ — સૂચકાંક પંક્તિ 2314મે અજય સરવૈયા (ગુજરાતી)ક પ્રવિષ્ટિ “અહાંક તામસ હમર સ્વાગતપથ” રૂપમે દેલ અણિ।
૬૫૭. (B) પઘ — વિધા-સ્તમ્ભમે ંહિ પ્રવિષ્ટિકેં “પઘ” રૂપમે અંકિત કંલ ગેલ અણિ।
૬૫૮. (C) ગુજરાતી કવિતા — ઁપ-વિધા-સ્તમ્ભમે ંહિ પાઠક સ્વરૂપ “ગુજરાતી કવિતા” અણિ।
૬૫૯. (D) પ્રેમ-સ્વીકાર આ તામસક ઢ્વન્દ્વ — ટિપ્પણીક પહિલ સંકેત “પ્રેમ-સ્વીકાર આ તામસક ઢ્વન્દ્વ” અણિ।
૬૬૦. (A) પ્રેમ-સ્વીકાર આ તામસક ઢ્વન્દ્વ — સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીમે પ્રમુખ અર્થ-દિશા “પ્રેમ-સ્વીકાર આ તામસક ઢ્વન્દ્વ” રૂપમે દેઁાઈત અણિ।
૬૬૧. (B) લેખક અજય સરવૈયા (ગુજરાતી), વિધા પઘ, ઁપ-વિધા ગુજરાતી કવિતા — સૂચકાંક લેખક, પાઠ, વિધા આ ઁપ-વિધાકેં ંક સાથ રઁત અણિ।
૬૬૨. (C) સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીક કારણ। — ટિપ્પણી પાઠકકેં કેવલ નામ નહિ, અર્થ-દિશા સેહો દૈત અણિ।
૬૬૩. (D) ઈં પાઠ ગુજરાતી કવિતાક રૂપમે પઘ-સંસારસેં ઁુઢલ અણિ। — વિધા આ ઁપ-વિધા ઢુનૂ ંહિ પાઠક સાહિત્યિક સ્વરૂપકેં સ્પષ્ટ કરૈત અણિ।
૬૬૪. (A) ંો લેખક, પાઠ આ આલોચનાત્મક સંકેતકેં ંક સાથ ઁપલબ્ધ કરૈત અણિ। — પ્રવિષ્ટિ અધ્યયનક લેલ આધાર-સૂચના આ અર્થ-સૂત્ર ઢુનૂ દૈત અણિ।
૬૬૫. (B) ઁણ્ડ 3623, સૂચકાંક પંક્તિ 2314મે અજય સરવૈયા (ગુજરાતી)ક “અહાંક તામસ હમર સ્વાગતપથ” પ્રવિષ્ટિ પઘ, ગુજરાતી કવિતા આ “પ્રેમ-સ્વીકાર આ તામસક ઢ્વન્દ્વ” સંકેત દ્વારા વિદેહ-સદેહ 28ક સાહિત્યિક-સાંસ્કૃતિક પરિદૃશ્યકેં વ્યવસ્થિત કરૈત અણિ। — ઈં ઁણ્ડ ંક સ્રોત-પ્રવિષ્ટિકેં પ્રશ્નોત્તરી રૂપમે ઁલૈત અણિ।
૬૬૬. (A) ઈં વિકલ્પ મુખ્ય પાઠ-વિચારસેં મેલ નહિ ઁાઈત અણિ। — સૂચકાંક પંક્તિ 2315મે અનુવાદ: હેમાંગ દેસાઈ, ગજેન્દ્ર ઠાકુરક પ્રવિષ્ટિ “” રૂપમે દેલ અણિ।
૬૬૭. (B) સાહિત્ય — વિધા-સ્તમ્ભમે ંહિ પ્રવિષ્ટિકેં “સાહિત્ય” રૂપમે અંકિત કંલ ગેલ અણિ।
૬૬૮. (C) પ્રવિષ્ટિ — ઁપ-વિધા-સ્તમ્ભમે ંહિ પાઠક સ્વરૂપ “પ્રવિષ્ટિ” અણિ।
૬૬૯. (A) ઈં વિકલ્પ મુખ્ય પાઠ-વિચારસેં મેલ નહિ ઁાઈત અણિ। — સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીમે પ્રમુખ અર્થ-દિશા “” રૂપમે દેઁાઈત અણિ।
૬૭૦. (B) લેખક અનુવાદ: હેમાંગ દેસાઈ, ગજેન્દ્ર ઠાકુર, વિધા સાહિત્ય, ઁપ-વિધા પ્રવિષ્ટિ — સૂચકાંક લેખક, પાઠ, વિધા આ ઁપ-વિધાકેં ંક સાથ રઁત અણિ।
૬૭૧. (C) સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીક કારણ। — ટિપ્પણી પાઠકકેં કેવલ નામ નહિ, અર્થ-દિશા સેહો દૈત અણિ।
૬૭૨. (D) ઈં પાઠ પ્રવિષ્ટિક રૂપમે સાહિત્ય-સંસારસેં ઁુઢલ અણિ। — વિધા આ ઁપ-વિધા ઢુનૂ ંહિ પાઠક સાહિત્યિક સ્વરૂપકેં સ્પષ્ટ કરૈત અણિ।
૬૭૩. (A) ંો લેખક, પાઠ આ આલોચનાત્મક સંકેતકેં ંક સાથ ઁપલબ્ધ કરૈત અણિ। — પ્રવિષ્ટિ અધ્યયનક લેલ આધાર-સૂચના આ અર્થ-સૂત્ર ઢુનૂ દૈત અણિ।

૬૭૪. (B) ખણ્ડ 3624, સૂચકાંક પંક્તિ 2315મે અનુવાદ: હેમાંગ દેસાઈ, ગજેન્દ્ર ઠાકુરક “” પ્રવિષ્ઠિ સાહિત્ય, પ્રવિષ્ઠિ આ “” સંકેત દ્વારા વિદેહ-સદેહ 28ક સાહિત્યિક-સાંસ્કૃતિક પરિદૃશ્યકે વ્યવસ્થિત કરૈત અણિ. — ઈ ઁણ્ડ ઁક સ્રોત-પ્રવિષ્ઠિકે પ્રશ્નોત્તરી રૂપમે ઁોલૈત અણિ.
૬૭૫. (A) ગુજરાતી કવિતા — સૂચકાંક પંક્તિ 2316મે રાજેન્દ્ર પટેલ (ગુજરાતી)ક પ્રવિષ્ઠિ “ગુજરાતી કવિતા” રૂપમે દેલ અણિ.
૬૭૬. (B) હાથક સ્મૃતિ-મુદ્રા; ભારતીય સામુદ્રિક શાસ્ત્ર આ પાશ્ચાત્ય સ્પર્શ-મનોવિજ્ઞાન સમ્મિલન. — વિધા-સ્તમ્ભમે ઁહિ પ્રવિષ્ઠિકે “હાથક સ્મૃતિ-મુદ્રા; ભારતીય સામુદ્રિક શાસ્ત્ર આ પાશ્ચાત્ય સ્પર્શ-મનોવિજ્ઞાન સમ્મિલન.” રૂપમે અંકિત કઁલ ગેલ અણિ.
૬૭૭. (C) પ્રવિષ્ઠિ — ઁપ-વિધા-સ્તમ્ભમે ઁહિ પાઠક સ્વરૂપ “પ્રવિષ્ઠિ” અણિ.
૬૭૮. (D) ગુજરાતી કવિતા — ટિપ્પણીક પહિલ સંકેત “ગુજરાતી કવિતા” અણિ.
૬૭૯. (A) ગુજરાતી કવિતા — સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીમે પ્રમુખ અર્થ-દિશા “ગુજરાતી કવિતા” રૂપમે દેઁાઈત અણિ.
૬૮૦. (B) લેખક રાજેન્દ્ર પટેલ (ગુજરાતી), વિધા હાથક સ્મૃતિ-મુદ્રા; ભારતીય સામુદ્રિક શાસ્ત્ર આ પાશ્ચાત્ય સ્પર્શ-મનોવિજ્ઞાન સમ્મિલન, ઁપ-વિધા પ્રવિષ્ઠિ — સૂચકાંક લેખક, પાઠ, વિધા આ ઁપ-વિધાકે ઁક સાથ રઁઁત અણિ.
૬૮૧. (C) સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીક કારણ. — ટિપ્પણી પાઠકકે કેવલ નામ નહિ, અર્થ-દિશા સેહો દૈત અણિ.
૬૮૨. (D) ઈ પાઠ પ્રવિષ્ઠિક રૂપમે હાથક સ્મૃતિ-મુદ્રા; ભારતીય સામુદ્રિક શાસ્ત્ર આ પાશ્ચાત્ય સ્પર્શ-મનોવિજ્ઞાન સમ્મિલન-સંસારસં જુડલ અણિ. — વિધા આ ઁપ-વિધા ઁનૂ ઁહિ પાઠક સાહિત્યિક સ્વરૂપકે સ્પષ્ટ કરૈત અણિ.
૬૮૩. (A) ઁો લેખક, પાઠ આ આલોચનાત્મક સંકેતકે ઁક સાથ ઁપલબ્ધ કરૈત અણિ. — પ્રવિષ્ઠિ અધ્યયનક લેલ આધાર-સૂચના આ અર્થ-સૂત્ર ઁનૂ દૈત અણિ.
૬૮૪. (B) ઁણ્ડ 3625, સૂચકાંક પંક્તિ 2316મે રાજેન્દ્ર પટેલ (ગુજરાતી)ક “ગુજરાતી કવિતા” પ્રવિષ્ઠિ હાથક સ્મૃતિ-મુદ્રા; ભારતીય સામુદ્રિક શાસ્ત્ર આ પાશ્ચાત્ય સ્પર્શ-મનોવિજ્ઞાન સમ્મિલન, પ્રવિષ્ઠિ આ “ગુજરાતી કવિતા” સંકેત દ્વારા વિદેહ-સદેહ 28ક સાહિત્યિક-સાંસ્કૃતિક પરિદૃશ્યકે વ્યવસ્થિત કરૈત અણિ. — ઈ ઁણ્ડ ઁક સ્રોત-પ્રવિષ્ઠિકે પ્રશ્નોત્તરી રૂપમે ઁોલૈત અણિ.
૬૮૫. (A) ઈ વિકલ્પ મુખ્ય પાઠ-વિચારસં મેલ નહિ ઁાઈત અણિ. — સૂચકાંક પંક્તિ 2317મે અનુવાદ: હેમાંગ દેસાઈ, ગજેન્દ્ર ઠાકુરક પ્રવિષ્ઠિ “” રૂપમે દેલ અણિ.
૬૮૬. (B) સાહિત્ય — વિધા-સ્તમ્ભમે ઁહિ પ્રવિષ્ઠિકે “સાહિત્ય” રૂપમે અંકિત કઁલ ગેલ અણિ.
૬૮૭. (C) પ્રવિષ્ઠિ — ઁપ-વિધા-સ્તમ્ભમે ઁહિ પાઠક સ્વરૂપ “પ્રવિષ્ઠિ” અણિ.
૬૮૮. (A) ઈ વિકલ્પ મુખ્ય પાઠ-વિચારસં મેલ નહિ ઁાઈત અણિ. — સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીમે પ્રમુખ અર્થ-દિશા “” રૂપમે દેઁાઈત અણિ.
૬૮૯. (B) લેખક અનુવાદ: હેમાંગ દેસાઈ, ગજેન્દ્ર ઠાકુર, વિધા સાહિત્ય, ઁપ-વિધા પ્રવિષ્ઠિ — સૂચકાંક લેખક, પાઠ, વિધા આ ઁપ-વિધાકે ઁક સાથ રઁઁત અણિ.
૬૯૦. (C) સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીક કારણ. — ટિપ્પણી પાઠકકે કેવલ નામ નહિ, અર્થ-દિશા સેહો દૈત અણિ.
૬૯૧. (D) ઈ પાઠ પ્રવિષ્ઠિક રૂપમે સાહિત્ય-સંસારસં જુડલ અણિ. — વિધા આ ઁપ-વિધા ઁનૂ ઁહિ પાઠક સાહિત્યિક સ્વરૂપકે સ્પષ્ટ કરૈત અણિ.
૬૯૨. (A) ઁો લેખક, પાઠ આ આલોચનાત્મક સંકેતકે ઁક સાથ ઁપલબ્ધ કરૈત અણિ. — પ્રવિષ્ઠિ અધ્યયનક લેલ આધાર-સૂચના આ અર્થ-સૂત્ર ઁનૂ દૈત અણિ.
૬૯૩. (B) ઁણ્ડ 3626, સૂચકાંક પંક્તિ 2317મે અનુવાદ: હેમાંગ દેસાઈ, ગજેન્દ્ર ઠાકુરક “” પ્રવિષ્ઠિ સાહિત્ય, પ્રવિષ્ઠિ આ “” સંકેત દ્વારા વિદેહ-સદેહ 28ક સાહિત્યિક-સાંસ્કૃતિક પરિદૃશ્યકે વ્યવસ્થિત કરૈત અણિ. — ઈ ઁણ્ડ ઁક સ્રોત-પ્રવિષ્ઠિકે પ્રશ્નોત્તરી રૂપમે ઁોલૈત અણિ.
૬૯૪. (A) સાંધ્ય બેલા — સૂચકાંક પંક્તિ 2318મે પીયૂષ ઠવ્કર (ગુજરાતી)ક પ્રવિષ્ઠિ “સાંધ્ય બેલા” રૂપમે દેલ અણિ.
૬૯૫. (B) પઘ — વિધા-સ્તમ્ભમે ઁહિ પ્રવિષ્ઠિકે “પઘ” રૂપમે અંકિત કઁલ ગેલ અણિ.
૬૯૬. (C) ગુજરાતી કવિતા — ઁપ-વિધા-સ્તમ્ભમે ઁહિ પાઠક સ્વરૂપ “ગુજરાતી કવિતા” અણિ.
૬૯૭. (D) સાંઝ, ધ્યાન, અસ્તિત્વક પ્રશ્ન – પાશ્ચાત્ય અસ્તિત્વવાદ આ ભારતીય સન્ધ્યા-વન્દનાક સમન્વય. — ટિપ્પણીક પહિલ સંકેત “સાંઝ, ધ્યાન, અસ્તિત્વક પ્રશ્ન – પાશ્ચાત્ય અસ્તિત્વવાદ આ ભારતીય સન્ધ્યા-વન્દનાક સમન્વય.” અણિ.
૬૯૮. (A) સાંઝ, ધ્યાન, અસ્તિત્વક પ્રશ્ન – પાશ્ચાત્ય અસ્તિત્વવાદ આ ભારતીય સન્ધ્યા-વન્દનાક સમન્વય. — સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીમે પ્રમુખ અર્થ-દિશા “સાંઝ, ધ્યાન, અસ્તિત્વક પ્રશ્ન – પાશ્ચાત્ય અસ્તિત્વવાદ આ ભારતીય સન્ધ્યા-વન્દનાક સમન્વય.” રૂપમે દેઁાઈત અણિ.
૬૯૯. (B) લેખક પીયૂષ ઠવ્કર (ગુજરાતી), વિધા પઘ, ઁપ-વિધા ગુજરાતી કવિતા — સૂચકાંક લેખક, પાઠ, વિધા આ ઁપ-વિધાકે ઁક સાથ રઁઁત અણિ.

૭૦૦. (C) સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીક કારણ। — ટિપ્પણી પાઠકર્કે કેવલ નામ નહિ, અર્થ-દિશા સેહો દૈત અછિ।
૭૦૧. (D) ઈ પાઠ ગુજરાતી કવિતાક રૂપમે પદ્ય-સંસારસં જુડલ અછિ। — વિધા આ ઉપ-વિધા ઢુનૂ ંહિ પાઠક સાહિત્યિક સ્વરૂપકેં સ્પષ્ટ કરૈત અછિ।
૭૦૨. (A) ઓ લેખક, પાઠ આ આલોચનાત્મક સંકેતકેં ંક સાથ ઉપલબ્ધ કરબૈત અછિ। — પ્રવિષ્ટિ અધ્યયનક લેલ આધાર-સૂચના આ અર્થ-સૂત્ર ઢુનૂ દૈત અછિ।
૭૦૩. (B) ઁખંડ 3627, સૂચકાંક પંક્તિ 2318મે પીયૂષ ઠવકર (ગુજરાતી)ક “સાંધ્ય બેલા” પ્રવિષ્ટિ પદ્ય, ગુજરાતી કવિતા આ “સાંઝ, ધ્યાન, અસ્તિત્વક પ્રશ્ન – પાશ્ચાત્ય અસ્તિત્વવાદ આ ભારતીય સન્ધ્યા-વન્દનાક સમન્વય।” સંકેત ઢ્વારા વિદેહ-સદેહ 28ક સાહિત્યિક-સાંસ્કૃતિક પરિદૃશ્યકેં વ્યવસ્થિત કરૈત અછિ। — ઈ ઁખંડ ંક સ્રોત-પ્રવિષ્ટિકેં પ્રશ્નોત્તરી રૂપમે ઁલૈત અછિ।
૭૦૪. (A) ઈ વિકલ્પ મુખ્ય પાઠ-વિચારસં મેલ નહિ ઁાઙત અછિ। — સૂચકાંક પંક્તિ 2319મે અનુવાદ: હેમાંગ દેસાઈ, ગજેન્દ્ર ઠાકુરક પ્રવિષ્ટિ “” રૂપમે દેલ અછિ।
૭૦૫. (B) સાહિત્ય — વિધા-સ્તમ્ભમે ંહિ પ્રવિષ્ટિકેં “સાહિત્ય” રૂપમે અંકિત કંલ ગેલ અછિ।
૭૦૬. (C) પ્રવિષ્ટિ — ઉપ-વિધા-સ્તમ્ભમે ંહિ પાઠક સ્વરૂપ “પ્રવિષ્ટિ” અછિ।
૭૦૭. (A) ઈ વિકલ્પ મુખ્ય પાઠ-વિચારસં મેલ નહિ ઁાઙત અછિ। — સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીમે પ્રમુખ અર્થ-દિશા “” રૂપમે દેઁાઙત અછિ।
૭૦૮. (B) લેખક અનુવાદ: હેમાંગ દેસાઈ, ગજેન્દ્ર ઠાકુર, વિધા સાહિત્ય, ઉપ-વિધા પ્રવિષ્ટિ — સૂચકાંક લેખક, પાઠ, વિધા આ ઉપ-વિધાકેં ંક સાથ રઁત અછિ।
૭૦૯. (C) સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીક કારણ। — ટિપ્પણી પાઠકર્કે કેવલ નામ નહિ, અર્થ-દિશા સેહો દૈત અછિ।
૭૧૦. (D) ઈ પાઠ પ્રવિષ્ટિક રૂપમે સાહિત્ય-સંસારસં જુડલ અછિ। — વિધા આ ઉપ-વિધા ઢુનૂ ંહિ પાઠક સાહિત્યિક સ્વરૂપકેં સ્પષ્ટ કરૈત અછિ।
૭૧૧. (A) ઓ લેખક, પાઠ આ આલોચનાત્મક સંકેતકેં ંક સાથ ઉપલબ્ધ કરબૈત અછિ। — પ્રવિષ્ટિ અધ્યયનક લેલ આધાર-સૂચના આ અર્થ-સૂત્ર ઢુનૂ દૈત અછિ।
૭૧૨. (B) ઁખંડ 3628, સૂચકાંક પંક્તિ 2319મે અનુવાદ: હેમાંગ દેસાઈ, ગજેન્દ્ર ઠાકુરક “” પ્રવિષ્ટિ સાહિત્ય, પ્રવિષ્ટિ આ “” સંકેત ઢ્વારા વિદેહ-સદેહ 28ક સાહિત્યિક-સાંસ્કૃતિક પરિદૃશ્યકેં વ્યવસ્થિત કરૈત અછિ। — ઈ ઁખંડ ંક સ્રોત-પ્રવિષ્ટિકેં પ્રશ્નોત્તરી રૂપમે ઁલૈત અછિ।
૭૧૩. (A) આમદ — સૂચકાંક પંક્તિ 2320મે પન્ના ત્રિવેદી (ગુજરાતી)ક પ્રવિષ્ટિ “આમદ” રૂપમે દેલ અછિ।
૭૧૪. (B) પદ્ય — વિધા-સ્તમ્ભમે ંહિ પ્રવિષ્ટિકેં “પદ્ય” રૂપમે અંકિત કંલ ગેલ અછિ।
૭૧૫. (C) ગુજરાતી કવિતા — ઉપ-વિધા-સ્તમ્ભમે ંહિ પાઠક સ્વરૂપ “ગુજરાતી કવિતા” અછિ।
૭૧૬. (D) પ્રવાસી-અનુભવ, સ્ત્રી-વિમર્શ — ટિપ્પણીક પહિલ સંકેત “પ્રવાસી-અનુભવ, સ્ત્રી-વિમર્શ” અછિ।
૭૧૭. (A) પ્રવાસી-અનુભવ, સ્ત્રી-વિમર્શ — સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીમે પ્રમુખ અર્થ-દિશા “પ્રવાસી-અનુભવ, સ્ત્રી-વિમર્શ” રૂપમે દેઁાઙત અછિ।
૭૧૮. (B) લેખક પન્ના ત્રિવેદી (ગુજરાતી), વિધા પદ્ય, ઉપ-વિધા ગુજરાતી કવિતા — સૂચકાંક લેખક, પાઠ, વિધા આ ઉપ-વિધાકેં ંક સાથ રઁત અછિ।
૭૧૯. (C) સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીક કારણ। — ટિપ્પણી પાઠકર્કે કેવલ નામ નહિ, અર્થ-દિશા સેહો દૈત અછિ।
૭૨૦. (D) ઈ પાઠ ગુજરાતી કવિતાક રૂપમે પદ્ય-સંસારસં જુડલ અછિ। — વિધા આ ઉપ-વિધા ઢુનૂ ંહિ પાઠક સાહિત્યિક સ્વરૂપકેં સ્પષ્ટ કરૈત અછિ।
૭૨૧. (A) ઓ લેખક, પાઠ આ આલોચનાત્મક સંકેતકેં ંક સાથ ઉપલબ્ધ કરબૈત અછિ। — પ્રવિષ્ટિ અધ્યયનક લેલ આધાર-સૂચના આ અર્થ-સૂત્ર ઢુનૂ દૈત અછિ।
૭૨૨. (B) ઁખંડ 3629, સૂચકાંક પંક્તિ 2320મે પન્ના ત્રિવેદી (ગુજરાતી)ક “આમદ” પ્રવિષ્ટિ પદ્ય, ગુજરાતી કવિતા આ “પ્રવાસી-અનુભવ, સ્ત્રી-વિમર્શ” સંકેત ઢ્વારા વિદેહ-સદેહ 28ક સાહિત્યિક-સાંસ્કૃતિક પરિદૃશ્યકેં વ્યવસ્થિત કરૈત અછિ। — ઈ ઁખંડ ંક સ્રોત-પ્રવિષ્ટિકેં પ્રશ્નોત્તરી રૂપમે ઁલૈત અછિ।
૭૨૩. (A) ઈ વિકલ્પ મુખ્ય પાઠ-વિચારસં મેલ નહિ ઁાઙત અછિ। — સૂચકાંક પંક્તિ 2321મે અનુવાદ: હેમાંગ દેસાઈ, ગજેન્દ્ર ઠાકુરક પ્રવિષ્ટિ “” રૂપમે દેલ અછિ।
૭૨૪. (B) સાહિત્ય — વિધા-સ્તમ્ભમે ંહિ પ્રવિષ્ટિકેં “સાહિત્ય” રૂપમે અંકિત કંલ ગેલ અછિ।
૭૨૫. (C) પ્રવિષ્ટિ — ઉપ-વિધા-સ્તમ્ભમે ંહિ પાઠક સ્વરૂપ “પ્રવિષ્ટિ” અછિ।
૭૨૬. (A) ઈ વિકલ્પ મુખ્ય પાઠ-વિચારસં મેલ નહિ ઁાઙત અછિ। — સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીમે પ્રમુખ અર્થ-દિશા “” રૂપમે દેઁાઙત અછિ।

૭૨૭. (B) લેખક અનુવાદ: હેમાંગ દેસાઈ, ગજેન્દ્ર ઠાકુર, વિદ્યા સાહિત્ય, ઉપ-વિદ્યા પ્રવિષ્ટિ — સૂચકાંક લેખક, પાઠ, વિદ્યા આ ઉપ-વિદ્યાકેં એક સાથ રખેત અછિ।
૭૨૮. (C) સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીક કારણ। — ટિપ્પણી પાઠકકેં કેવલ નામ નહિ, અર્થ-દિશા સેહો દૈત અછિ।
૭૨૯. (D) ઈ પાઠ પ્રવિષ્ટિક રૂપમે સાહિત્ય-સંસારસં જુડલ અછિ। — વિદ્યા આ ઉપ-વિદ્યા ઢુનૂ એહિ પાઠક સાહિત્યિક સ્વરૂપકેં સ્પષ્ટ કરૈત અછિ।
૭૩૦. (A) ઓ લેખક, પાઠ આ આલોચનાત્મક સંકેતકેં એક સાથ ઉપલબ્ધ કરબૈત અછિ। — પ્રવિષ્ટિ અધ્યયનક લેલ આધાર-સૂચના આ અર્થ-સૂત્ર ઢુનૂ દૈત અછિ।
૭૩૧. (B) ખંડ 3630, સૂચકાંક પંક્તિ 2321મે અનુવાદ: હેમાંગ દેસાઈ, ગજેન્દ્ર ઠાકુરક “” પ્રવિષ્ટિ સાહિત્ય, પ્રવિષ્ટિ આ “” સંકેત દ્વારા વિદેહ-સદેહ 28ક સાહિત્યિક-સાંસ્કૃતિક પરિદૃશ્યકેં વ્યવસ્થિત કરૈત અછિ। — ઈ ખંડ એક સ્રોત-પ્રવિષ્ટિકેં પ્રશ્નોત્તરી રૂપમે ધોલૈત અછિ।
૭૩૨. (A) ગૃહમોહ — સૂચકાંક પંક્તિ 2322મે બાબૂ સુથાર (ગુજરાતી)ક પ્રવિષ્ટિ “ગૃહમોહ” રૂપમે દેલ અછિ।
૭૩૩. (B) પદ્ય — વિદ્યા-સ્તમ્ભમે એહિ પ્રવિષ્ટિકેં “પદ્ય” રૂપમે અંકિત કએલ ગેલ અછિ।
૭૩૪. (C) ગુજરાતી કવિતા — ઉપ-વિદ્યા-સ્તમ્ભમે એહિ પાઠક સ્વરૂપ “ગુજરાતી કવિતા” અછિ।
૭૩૫. (D) ગૃહ-પ્રતિ આસક્તિ — ટિપ્પણીક પહિલ સંકેત “ગૃહ-પ્રતિ આસક્તિ” અછિ।
૭૩૬. (A) ગૃહ-પ્રતિ આસક્તિ — સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીમે પ્રમુખ અર્થ-દિશા “ગૃહ-પ્રતિ આસક્તિ” રૂપમે દેખાઈત અછિ।
૭૩૭. (B) લેખક બાબૂ સુથાર (ગુજરાતી), વિદ્યા પદ્ય, ઉપ-વિદ્યા ગુજરાતી કવિતા — સૂચકાંક લેખક, પાઠ, વિદ્યા આ ઉપ-વિદ્યાકેં એક સાથ રખેત અછિ।
૭૩૮. (C) સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીક કારણ। — ટિપ્પણી પાઠકકેં કેવલ નામ નહિ, અર્થ-દિશા સેહો દૈત અછિ।
૭૩૯. (D) ઈ પાઠ ગુજરાતી કવિતાક રૂપમે પદ્ય-સંસારસં જુડલ અછિ। — વિદ્યા આ ઉપ-વિદ્યા ઢુનૂ એહિ પાઠક સાહિત્યિક સ્વરૂપકેં સ્પષ્ટ કરૈત અછિ।
૭૪૦. (A) ઓ લેખક, પાઠ આ આલોચનાત્મક સંકેતકેં એક સાથ ઉપલબ્ધ કરબૈત અછિ। — પ્રવિષ્ટિ અધ્યયનક લેલ આધાર-સૂચના આ અર્થ-સૂત્ર ઢુનૂ દૈત અછિ।
૭૪૧. (B) ખંડ 3631, સૂચકાંક પંક્તિ 2322મે બાબૂ સુથાર (ગુજરાતી)ક “ગૃહમોહ” પ્રવિષ્ટિ પદ્ય, ગુજરાતી કવિતા આ “ગૃહ-પ્રતિ આસક્તિ” સંકેત દ્વારા વિદેહ-સદેહ 28ક સાહિત્યિક-સાંસ્કૃતિક પરિદૃશ્યકેં વ્યવસ્થિત કરૈત અછિ। — ઈ ખંડ એક સ્રોત-પ્રવિષ્ટિકેં પ્રશ્નોત્તરી રૂપમે ધોલૈત અછિ।
૭૪૨. (A) ઈ વિકલ્પ મુખ્ય પાઠ-વિચારસં મેલ નહિ ધાઈત અછિ। — સૂચકાંક પંક્તિ 2323મે અનુવાદ: હેમાંગ દેસાઈ, ગજેન્દ્ર ઠાકુરક પ્રવિષ્ટિ “” રૂપમે દેલ અછિ।
૭૪૩. (B) સાહિત્ય — વિદ્યા-સ્તમ્ભમે એહિ પ્રવિષ્ટિકેં “સાહિત્ય” રૂપમે અંકિત કએલ ગેલ અછિ।
૭૪૪. (C) પ્રવિષ્ટિ — ઉપ-વિદ્યા-સ્તમ્ભમે એહિ પાઠક સ્વરૂપ “પ્રવિષ્ટિ” અછિ।
૭૪૫. (A) ઈ વિકલ્પ મુખ્ય પાઠ-વિચારસં મેલ નહિ ધાઈત અછિ। — સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીમે પ્રમુખ અર્થ-દિશા “” રૂપમે દેખાઈત અછિ।
૭૪૬. (B) લેખક અનુવાદ: હેમાંગ દેસાઈ, ગજેન્દ્ર ઠાકુર, વિદ્યા સાહિત્ય, ઉપ-વિદ્યા પ્રવિષ્ટિ — સૂચકાંક લેખક, પાઠ, વિદ્યા આ ઉપ-વિદ્યાકેં એક સાથ રખેત અછિ।
૭૪૭. (C) સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીક કારણ। — ટિપ્પણી પાઠકકેં કેવલ નામ નહિ, અર્થ-દિશા સેહો દૈત અછિ।
૭૪૮. (D) ઈ પાઠ પ્રવિષ્ટિક રૂપમે સાહિત્ય-સંસારસં જુડલ અછિ। — વિદ્યા આ ઉપ-વિદ્યા ઢુનૂ એહિ પાઠક સાહિત્યિક સ્વરૂપકેં સ્પષ્ટ કરૈત અછિ।
૭૪૯. (A) ઓ લેખક, પાઠ આ આલોચનાત્મક સંકેતકેં એક સાથ ઉપલબ્ધ કરબૈત અછિ। — પ્રવિષ્ટિ અધ્યયનક લેલ આધાર-સૂચના આ અર્થ-સૂત્ર ઢુનૂ દૈત અછિ।
૭૫૦. (B) ખંડ 3632, સૂચકાંક પંક્તિ 2323મે અનુવાદ: હેમાંગ દેસાઈ, ગજેન્દ્ર ઠાકુરક “” પ્રવિષ્ટિ સાહિત્ય, પ્રવિષ્ટિ આ “” સંકેત દ્વારા વિદેહ-સદેહ 28ક સાહિત્યિક-સાંસ્કૃતિક પરિદૃશ્યકેં વ્યવસ્થિત કરૈત અછિ। — ઈ ખંડ એક સ્રોત-પ્રવિષ્ટિકેં પ્રશ્નોત્તરી રૂપમે ધોલૈત અછિ।
૭૫૧. (A) ફૂસિ, અનુમતિ — સૂચકાંક પંક્તિ 2324મે વાસુદેવ સુનાની (ઓડિયા)ક પ્રવિષ્ટિ “ફૂસિ, અનુમતિ” રૂપમે દેલ અછિ।
૭૫૨. (B) પદ્ય — વિદ્યા-સ્તમ્ભમે એહિ પ્રવિષ્ટિકેં “પદ્ય” રૂપમે અંકિત કએલ ગેલ અછિ।
૭૫૩. (C) ઓડિયા કવિતા — ઉપ-વિદ્યા-સ્તમ્ભમે એહિ પાઠક સ્વરૂપ “ઓડિયા કવિતા” અછિ।
૭૫૪. (D) દલિત-ચેતના — ટિપ્પણીક પહિલ સંકેત “દલિત-ચેતના” અછિ।
૭૫૫. (A) દલિત-ચેતના — સમાલોચનાત્મક ટિપ્પણીમે પ્રમુખ અર્થ-દિશા “દલિત-ચેતના” રૂપમે દેખાઈત અછિ।

७५६. (B) लेखक वासुदेव सुनानी (ओडिया), विधा पद्य, उप-विधा ओडिया कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७५८. (D) ई पाठ ओडिया कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७६०. (B) खण्ड 3633, सूचकांक पंक्ति 2324मे वासुदेव सुनानी (ओडिया)क “फूसि, अनुमति” प्रविष्टि पद्य, ओडिया कविता आ “दलित-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७६१. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2325मे अनुवाद: शैलेन राउत्राय, गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
७६२. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७६३. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
७६४. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
७६५. (B) लेखक अनुवाद: शैलेन राउत्राय, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७६७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७६९. (B) खण्ड 3634, सूचकांक पंक्ति 2325मे अनुवाद: शैलेन राउत्राय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७७०. (A) हमर घुरलाक बाद — सूचकांक पंक्ति 2326मे भरत माँझी (ओडिया)क प्रविष्टि “हमर घुरलाक बाद” रूपमे देल अछि।
७७१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७७२. (C) ओडिया कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “ओडिया कविता” अछि।
७७३. (D) प्रवासक बाद घर-वापसीक प्रश्न — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासक बाद घर-वापसीक प्रश्न” अछि।
७७४. (A) प्रवासक बाद घर-वापसीक प्रश्न — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासक बाद घर-वापसीक प्रश्न” रूपमे देखाइत अछि।
७७५. (B) लेखक भरत माँझी (ओडिया), विधा पद्य, उप-विधा ओडिया कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७७७. (D) ई पाठ ओडिया कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७७९. (B) खण्ड 3635, सूचकांक पंक्ति 2326मे भरत माँझी (ओडिया)क “हमर घुरलाक बाद” प्रविष्टि पद्य, ओडिया कविता आ “प्रवासक बाद घर-वापसीक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७८०. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2327मे अनुवाद: शैलेन राउत्राय, गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
७८१. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७८२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
७८३. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

७८४. (B) लेखक अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७८५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७८६. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७८७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७८८. (B) खण्ड 3636, सूचकांक पंक्ति 2327मे अनुवाद: शैलेन राउत्रॉय, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७८९. (A) पसीझक काँट — सूचकांक पंक्ति 2328मे शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क प्रविष्टि “पसीझक काँट” रूपमे देल अछि।
७९०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७९१. (C) तेलुगु कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “तेलुगु कविता” अछि।
७९२. (D) समाजक सीमाबद्ध झाड़ी स्त्री-स्वतन्त्रता रोकैत अछि — टिप्पणीक पहिल संकेत “समाजक सीमाबद्ध झाड़ी स्त्री-स्वतन्त्रता रोकैत अछि” अछि।
७९३. (A) समाजक सीमाबद्ध झाड़ी स्त्री-स्वतन्त्रता रोकैत अछि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समाजक सीमाबद्ध झाड़ी स्त्री-स्वतन्त्रता रोकैत अछि” रूपमे देखाइत अछि।
७९४. (B) लेखक शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु), विधा पद्य, उप-विधा तेलुगु कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७९५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७९६. (D) ई पाठ तेलुगु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७९७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७९८. (B) खण्ड 3637, सूचकांक पंक्ति 2328मे शीला सुभद्रा देवी (तेलुगु)क “पसीझक काँट” प्रविष्टि पद्य, तेलुगु कविता आ “समाजक सीमाबद्ध झाड़ी स्त्री-स्वतन्त्रता रोकैत अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७९९. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2329मे अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
८००. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८०१. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
८०२. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
८०३. (B) लेखक अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८०४. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८०५. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८०६. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८०७. (B) खण्ड 3638, सूचकांक पंक्ति 2329मे अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८०८. (A) ई सेहो अछि प्रवास — सूचकांक पंक्ति 2330मे एन. अरुणा (तेलुगु)क प्रविष्टि “ई सेहो अछि प्रवास” रूपमे देल अछि।
८०९. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८१०. (C) तेलुगु कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “तेलुगु कविता” अछि।

८११. (D) नारी-प्रवासक उदास व्यञ्जना — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-प्रवासक उदास व्यञ्जना” अछि।
८१२. (A) नारी-प्रवासक उदास व्यञ्जना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-प्रवासक उदास व्यञ्जना” रूपमे देखाइत अछि।
८१३. (B) लेखक एन. अरुणा (तेलुगु), विधा पद्य, उप-विधा तेलुगु कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८१४. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८१५. (D) ई पाठ तेलुगु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८१६. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८१७. (B) खण्ड 3639, सूचकांक पंक्ति 2330मे एन. अरुणा (तेलुगु)क “ई सेहो अछि प्रवास” प्रविष्टि पद्य, तेलुगु कविता आ “नारी-प्रवासक उदास व्यञ्जना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८१८. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2331मे अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
८१९. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८२०. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
८२१. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
८२२. (B) लेखक अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८२३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८२४. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८२५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८२६. (B) खण्ड 3640, सूचकांक पंक्ति 2331मे अनुवाद: जयलक्ष्मी पोपुरी, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८२७. (A) वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२ — सूचकांक पंक्ति 2332मे भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क प्रविष्टि “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२” रूपमे देल अछि।
८२८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८२९. (C) भोजपुरी लोकपद्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भोजपुरी लोकपद्य” अछि।
८३०. (D) लोक-व्यङ्ग्य, वृद्धाश्रमक विरोध — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-व्यङ्ग्य, वृद्धाश्रमक विरोध” अछि।
८३१. (A) लोक-व्यङ्ग्य, वृद्धाश्रमक विरोध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-व्यङ्ग्य, वृद्धाश्रमक विरोध” रूपमे देखाइत अछि।
८३२. (B) लेखक भिखारी ठाकुर (भोजपुरी), विधा पद्य, उप-विधा भोजपुरी लोकपद्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
८३३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८३४. (D) ई पाठ भोजपुरी लोकपद्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
८३५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८३६. (B) खण्ड 3641, सूचकांक पंक्ति 2332मे भिखारी ठाकुर (भोजपुरी)क “वृद्धाश्रमक पक्षमे- बिरहा १-२” प्रविष्टि पद्य, भोजपुरी लोकपद्य आ “लोक-व्यङ्ग्य, वृद्धाश्रमक विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८३७. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2333मे अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
८३८. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८३९. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
८४०. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
८४१. (B) लेखक अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८४२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८४३. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८४४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८४५. (B) खण्ड 3642, सूचकांक पंक्ति 2333मे अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८४६. (A) बेसीकाल शब्द जखन — सूचकांक पंक्ति 2334मे परिचय दास (भोजपुरी)क प्रविष्टि “बेसीकाल शब्द जखन” रूपमे देल अछि।
८४७. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८४८. (C) भोजपुरी पद्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भोजपुरी पद्य” अछि।
८४९. (D) स्मृति, शब्द, लेखकीय चिन्तन — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्मृति, शब्द, लेखकीय चिन्तन” अछि।
८५०. (A) स्मृति, शब्द, लेखकीय चिन्तन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्मृति, शब्द, लेखकीय चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।
८५१. (B) लेखक परिचय दास (भोजपुरी), विधा पद्य, उप-विधा भोजपुरी पद्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८५२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८५३. (D) ई पाठ भोजपुरी पद्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८५४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८५५. (B) खण्ड 3643, सूचकांक पंक्ति 2334मे परिचय दास (भोजपुरी)क “बेसीकाल शब्द जखन” प्रविष्टि पद्य, भोजपुरी पद्य आ “स्मृति, शब्द, लेखकीय चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८५६. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2335मे अनुवाद: विनीत उत्पलक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
८५७. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८५८. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
८५९. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
८६०. (B) लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८६१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८६२. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८६३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८६४. (B) खण्ड 3644, सूचकांक पंक्ति 2335मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८६५. (A) देह विदेह (१-४) — सूचकांक पंक्ति 2336मे निराला (हिन्दी)क प्रविष्टि “देह विदेह (१-४)” रूपमे देल अछि।
८६६. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८६७. (C) मुक्तक/दार्शनिक कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “मुक्तक/दार्शनिक कविता” अछि।
८६८. (D) पाश्चात्य अस्तित्ववादक पूर्व पाठ — टिप्पणीक पहिल संकेत “पाश्चात्य अस्तित्ववादक पूर्व पाठ” अछि।

८६९. (A) पाश्चात्य अस्तित्ववादक पूर्व पाठ — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पाश्चात्य अस्तित्ववादक पूर्व पाठ” रूपमे देखाइत अछि।
८७०. (B) लेखक निराला (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा मुक्तक/दार्शनिक कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८७१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८७२. (D) ई पाठ मुक्तक/दार्शनिक कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८७३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८७४. (B) खण्ड 3645, सूचकांक पंक्ति 2336मे निराला (हिन्दी)क “देह विदेह (१-४)” प्रविष्टि पद्य, मुक्तक/दार्शनिक कविता आ “पाश्चात्य अस्तित्ववादक पूर्व पाठ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८७५. (A) डायरी खण्ड आ कविता खंड — सूचकांक पंक्ति 2337मे पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क प्रविष्टि “डायरी खण्ड आ कविता खंड” रूपमे देल अछि।
८७६. (B) पद्य/गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८७७. (C) डायरी/सूक्ति — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “डायरी/सूक्ति” अछि।
८७८. (D) नव्य-न्यायक ‘प्रमाण’ आ ‘तर्क’क साहित्यिक प्रयोग — टिप्पणीक पहिल संकेत “नव्य-न्यायक ‘प्रमाण’ आ ‘तर्क’क साहित्यिक प्रयोग” अछि।
८७९. (A) नव्य-न्यायक ‘प्रमाण’ आ ‘तर्क’क साहित्यिक प्रयोग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव्य-न्यायक ‘प्रमाण’ आ ‘तर्क’क साहित्यिक प्रयोग” रूपमे देखाइत अछि।
८८०. (B) लेखक पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी), विधा पद्य/गद्य, उप-विधा डायरी/सूक्ति — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८८१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८८२. (D) ई पाठ डायरी/सूक्तिक रूपमे पद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८८३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८८४. (B) खण्ड 3646, सूचकांक पंक्ति 2337मे पंकज चतुर्वेदी (हिन्दी)क “डायरी खण्ड आ कविता खंड” प्रविष्टि पद्य/गद्य, डायरी/सूक्ति आ “नव्य-न्यायक ‘प्रमाण’ आ ‘तर्क’क साहित्यिक प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८८५. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2338मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
८८६. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८८७. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
८८८. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
८८९. (B) लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८९१. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८९२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८९३. (B) खण्ड 3647, सूचकांक पंक्ति 2338मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८९४. (A) गिट्ट, मेघक दूभि — सूचकांक पंक्ति 2339मे संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क प्रविष्टि “गिट्ट, मेघक दूभि” रूपमे देल अछि।
८९५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८९६. (C) हिन्दी कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हिन्दी कविता” अछि।
८९७. (D) प्रकृति-चेतना, मेघ-दूबक प्रतीकसँ समर्पण — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति-चेतना, मेघ-दूबक प्रतीकसँ समर्पण” अछि।

८९८. (A) प्रकृति-चेतना, मेघ-दूबक प्रतीकसँ समर्पण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति-चेतना, मेघ-दूबक प्रतीकसँ समर्पण” रूपमे देखाइत अछि।
८९९. (B) लेखक संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
९००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
९०१. (D) ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
९०२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९०३. (B) खण्ड 3648, सूचकांक पंक्ति 2339मे संतोष कुमार चतुर्वेदी (हिन्दी)क “गिट्ट, मेघक दूभि” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “प्रकृति-चेतना, मेघ-दूबक प्रतीकसँ समर्पण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
९०४. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2340मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
९०५. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९०६. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
९०७. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
९०८. (B) लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
९०९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
९१०. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
९११. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९१२. (B) खण्ड 3649, सूचकांक पंक्ति 2340मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
९१३. (A) उपलब्धि, नून, दिन — सूचकांक पंक्ति 2341मे वीरू सोनकर (हिन्दी)क प्रविष्टि “उपलब्धि, नून, दिन” रूपमे देल अछि।
९१४. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९१५. (C) हिन्दी कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हिन्दी कविता” अछि।
९१६. (D) शोषित मजदूरक तीन पाठ — टिप्पणीक पहिल संकेत “शोषित मजदूरक तीन पाठ” अछि।
९१७. (A) शोषित मजदूरक तीन पाठ — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शोषित मजदूरक तीन पाठ” रूपमे देखाइत अछि।
९१८. (B) लेखक वीरू सोनकर (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
९१९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
९२०. (D) ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
९२१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९२२. (B) खण्ड 3650, सूचकांक पंक्ति 2341मे वीरू सोनकर (हिन्दी)क “उपलब्धि, नून, दिन” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “शोषित मजदूरक तीन पाठ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
९२३. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2342मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
९२४. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९२५. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
९२६. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
९२७. (B) लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२८. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२९. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१३०. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३१. (B) खण्ड 3651, सूचकांक पंक्ति 2342मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३२. (A) कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि — सूचकांक पंक्ति 2343मे मंगलेश डबराल (हिन्दी)क प्रविष्टि “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि” रूपमे देल अछि।
१३३. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३४. (C) हिन्दी कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हिन्दी कविता” अछि।
१३५. (D) शहरी एकान्त, इतिहास-प्रति अविश्वास — टिप्पणीक पहिल संकेत “शहरी एकान्त, इतिहास-प्रति अविश्वास” अछि।
१३६. (A) शहरी एकान्त, इतिहास-प्रति अविश्वास — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शहरी एकान्त, इतिहास-प्रति अविश्वास” रूपमे देखाइत अछि।
१३७. (B) लेखक मंगलेश डबराल (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१३८. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३९. (D) ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१४०. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४१. (B) खण्ड 3652, सूचकांक पंक्ति 2343मे मंगलेश डबराल (हिन्दी)क “कमरा, बाहर, लिखल चलल जाइत छलहुं, उम्मीद, अप्पन अधिकार, पहाड़ छथिन, एहन काल, बेर-बेर कहैत छलौं हम, दिल्ली मे एकटा दिन, भोथिआएल, अभिनय, किछु कालक लेल, घर शांत अछि” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “शहरी एकान्त, इतिहास-प्रति अविश्वास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४२. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2344मे अनुवाद: विनीत उत्पलक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
१४३. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४४. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१४५. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
१४६. (B) लेखक अनुवाद: विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४८. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१४९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५०. (B) खण्ड 3653, सूचकांक पंक्ति 2344मे अनुवाद: विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५१. (A) हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि — सूचकांक पंक्ति 2345मे नित्यानन्द गायन (हिन्दी)क प्रविष्टि “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि” रूपमे देल अछि।
१५२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५३. (C) हिन्दी कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हिन्दी कविता” अछि।

१५४. (D) मृत्यु-भ्रष्टाचारक बीच जीवित रहबाक अभिशाप — टिप्पणीक पहिल संकेत “मृत्यु-भ्रष्टाचारक बीच जीवित रहबाक अभिशाप” अछि।
१५५. (A) मृत्यु-भ्रष्टाचारक बीच जीवित रहबाक अभिशाप — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मृत्यु-भ्रष्टाचारक बीच जीवित रहबाक अभिशाप” रूपमे देखाइत अछि।
१५६. (B) लेखक नित्यानन्द गायन (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५८. (D) ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१५९. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६०. (B) खण्ड 3654, सूचकांक पंक्ति 2345मे नित्यानन्द गायन (हिन्दी)क “हम नै चाहै छी अपना उपर संदेह, रौद पघलि रहल अछि” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “मृत्यु-भ्रष्टाचारक बीच जीवित रहबाक अभिशाप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६१. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2346मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
१६२. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६३. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१६४. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
१६५. (B) लेखक अनुवाद: आशीष अनचिन्हार, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६७. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६९. (B) खण्ड 3655, सूचकांक पंक्ति 2346मे अनुवाद: आशीष अनचिन्हारक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७०. (A) स्नेह-भरल सनेस — सूचकांक पंक्ति 2347मे प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क प्रविष्टि “स्नेह-भरल सनेस” रूपमे देल अछि।
१७१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७२. (C) डोगरी कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “डोगरी कविता” अछि।
१७३. (D) सैनिक-पत्नी पत्र – करुण रसक आधुनिक प्रयोग, राष्ट्र-प्रेम आ पृथक्करण। — टिप्पणीक पहिल संकेत “सैनिक-पत्नी पत्र – करुण रसक आधुनिक प्रयोग, राष्ट्र-प्रेम आ पृथक्करण।” अछि।
१७४. (A) सैनिक-पत्नी पत्र – करुण रसक आधुनिक प्रयोग, राष्ट्र-प्रेम आ पृथक्करण। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सैनिक-पत्नी पत्र – करुण रसक आधुनिक प्रयोग, राष्ट्र-प्रेम आ पृथक्करण।” रूपमे देखाइत अछि।
१७५. (B) लेखक प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी), विधा पद्य, उप-विधा डोगरी कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७७. (D) ई पाठ डोगरी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७९. (B) खण्ड 3656, सूचकांक पंक्ति 2347मे प्रो. चम्पा शर्मा (डोगरी)क “स्नेह-भरल सनेस” प्रविष्टि पद्य, डोगरी कविता आ “सैनिक-पत्नी पत्र – करुण रसक आधुनिक प्रयोग, राष्ट्र-प्रेम आ पृथक्करण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८०. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2348मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

१८१. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८२. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१८३. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
१८४. (B) लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८६. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८८. (B) खण्ड 3657, सूचकांक पंक्ति 2348मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८९. (A) हमर भारत देश महान — सूचकांक पंक्ति 2349मे कुमार संभव ‘भारद्वाज’ (हिन्दी)क प्रविष्टि “हमर भारत देश महान” रूपमे देल अछि।
१९०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९१. (C) देशभक्ति कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “देशभक्ति कविता” अछि।
१९२. (D) सरल देहाती देश-प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “सरल देहाती देश-प्रेम” अछि।
१९३. (A) सरल देहाती देश-प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरल देहाती देश-प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
१९४. (B) लेखक कुमार संभव ‘भारद्वाज’ (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा देशभक्ति कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१९५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९६. (D) ई पाठ देशभक्ति कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१९७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९८. (B) खण्ड 3658, सूचकांक पंक्ति 2349मे कुमार संभव ‘भारद्वाज’ (हिन्दी)क “हमर भारत देश महान” प्रविष्टि पद्य, देशभक्ति कविता आ “सरल देहाती देश-प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९९. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2350मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
१०००. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१००१. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१००२. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
१००३. (B) लेखक अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१००४. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१००५. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१००६. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१००७. (B) खण्ड 3659, सूचकांक पंक्ति 2350मे अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१००८. (A) दुमर्जा — सूचकांक पंक्ति 2351मे पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क प्रविष्टि “दुमर्जा” रूपमे देल अछि।
१००९. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०१०. (C) तेलुगु कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “तेलुगु कविता” अछि।

१०११. (D) दिल्ली बलात्कार विरोधी आक्रोश — टिप्पणीक पहिल संकेत “दिल्ली बलात्कार विरोधी आक्रोश” अछि।
१०१२. (A) दिल्ली बलात्कार विरोधी आक्रोश — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दिल्ली बलात्कार विरोधी आक्रोश” रूपमे देखाइत अछि।
१०१३. (B) लेखक पसुपुलेटि गीता (तेलुगु), विधा पद्य, उप-विधा तेलुगु कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०१४. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०१५. (D) ई पाठ तेलुगु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०१६. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०१७. (B) खण्ड 3660, सूचकांक पंक्ति 2351मे पसुपुलेटि गीता (तेलुगु)क “दुमर्जा” प्रविष्टि पद्य, तेलुगु कविता आ “दिल्ली बलात्कार विरोधी आक्रोश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०१८. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2352मे अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।
१०१९. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०२०. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।
१०२१. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।
१०२२. (B) लेखक अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पल, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०२३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०२४. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०२५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०२६. (B) खण्ड 3661, सूचकांक पंक्ति 2352मे अनुवाद: आर.शान्ता सुन्दरी, विनीत उत्पलक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०२७. (A) छाह सभ — सूचकांक पंक्ति 2353मे रहमान राही (कश्मीरी)क प्रविष्टि “छाह सभ” रूपमे देल अछि।
१०२८. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०२९. (C) कश्मीरी कविता (ज्ञानपीठ) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कश्मीरी कविता (ज्ञानपीठ)” अछि।
१०३०. (D) ‘छाया’ – स्मृति, संघर्ष, अस्तित्वक कश्मीरी संवेदना, उत्पीड़नक सौन्दर्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “‘छाया’ – स्मृति, संघर्ष, अस्तित्वक कश्मीरी संवेदना, उत्पीड़नक सौन्दर्य।” अछि।
१०३१. (A) ‘छाया’ – स्मृति, संघर्ष, अस्तित्वक कश्मीरी संवेदना, उत्पीड़नक सौन्दर्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘छाया’ – स्मृति, संघर्ष, अस्तित्वक कश्मीरी संवेदना, उत्पीड़नक सौन्दर्य।” रूपमे देखाइत अछि।
१०३२. (B) लेखक रहमान राही (कश्मीरी), विधा पद्य, उप-विधा कश्मीरी कविता (ज्ञानपीठ) — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०३३. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०३४. (D) ई पाठ कश्मीरी कविता (ज्ञानपीठ)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०३५. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०३६. (B) खण्ड 3662, सूचकांक पंक्ति 2353मे रहमान राही (कश्मीरी)क “छाह सभ” प्रविष्टि पद्य, कश्मीरी कविता (ज्ञानपीठ) आ “‘छाया’ – स्मृति, संघर्ष, अस्तित्वक कश्मीरी संवेदना, उत्पीड़नक सौन्दर्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

— ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिके प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०३७. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2354मे अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

१०३८. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिके “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०३९. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

१०४०. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

१०४१. (B) लेखक अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुर, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०४२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०४३. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०४४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०४५. (B) खण्ड 3663, सूचकांक पंक्ति 2354मे अनुवाद: ए.एल. इन्दु, गजेन्द्र ठाकुरक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिके प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०४६. (A) किछु हिन्दी कविता (संग्रह) — सूचकांक पंक्ति 2355मे रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क प्रविष्टि “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)” रूपमे देल अछि।

१०४७. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिके “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०४८. (C) हिन्दी कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हिन्दी कविता” अछि।

१०४९. (D) प्रेम, एकान्त, स्त्री-आत्मा के स्वीकार — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम, एकान्त, स्त्री-आत्मा के स्वीकार” अछि।

१०५०. (A) प्रेम, एकान्त, स्त्री-आत्मा के स्वीकार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम, एकान्त, स्त्री-आत्मा के स्वीकार” रूपमे देखाइत अछि।

१०५१. (B) लेखक रजनी छाबड़ा (हिन्दी), विधा पद्य, उप-विधा हिन्दी कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०५२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०५३. (D) ई पाठ हिन्दी कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०५४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०५५. (B) खण्ड 3664, सूचकांक पंक्ति 2355मे रजनी छाबड़ा (हिन्दी)क “किछु हिन्दी कविता (संग्रह)” प्रविष्टि पद्य, हिन्दी कविता आ “प्रेम, एकान्त, स्त्री-आत्मा के स्वीकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिके प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०५६. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — सूचकांक पंक्ति 2356मे अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक प्रविष्टि “” रूपमे देल अछि।

१०५७. (B) साहित्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिके “साहित्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०५८. (C) प्रविष्टि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रविष्टि” अछि।

१०५९. (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “” रूपमे देखाइत अछि।

१०६०. (B) लेखक अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापति, विधा साहित्य, उप-विधा प्रविष्टि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०६१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०६२. (D) ई पाठ प्रविष्टिक रूपमे साहित्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०६३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०६४. (B) खण्ड 3665, सूचकांक पंक्ति 2356मे अनुवाद: डॉ. सशिकुमार प्रजापतिक “” प्रविष्टि साहित्य, प्रविष्टि आ “” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 28क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

अध्याय २ : विदेह-सदेह २९ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड ३२ : विदेह-सदेह २९ — रवि भूषण पाठक आ डायरी-लेखन

१. विदेह-सदेह २९ मे रवि भूषण पाठकक जन्म-साल की?
(A) १९७३
(B) १९६३
(C) १९८३
(D) कोनो नहि
२. रवि भूषण पाठकक गाम कतय अछि?
(A) समस्तीपुरक करियन आ नानीगाम भिड़हा
(B) दरभंगा
(C) मधुबनी
(D) कोनो नहि
३. रवि भूषण पाठकक शिक्षा कतय-कतय भेल?
(A) करियन, वैद्यनाथपुर, दरभंगा, समस्तीपुर, पटना आ दिल्ली
(B) केवल दिल्ली
(C) केवल विदेश
(D) कोनो नहि
४. रवि भूषण पाठक कोन सरकारी विभागसँ जुड़ल छथि?
(A) उत्तर प्रदेशक बाट-माप विभाग
(B) रेलवे
(C) डाक विभाग
(D) कोनो नहि
५. विदेह-सदेह २९ मे 'औझका डायरी' शीर्षक रचनामे कोन कविक प्रशंसा अछि?
(A) जायसी (मलिक मुहम्मद जायसी)
(B) विद्यापति
(C) ज्योतिरीश्वर
(D) कोनो नहि
६. डायरीमे मैथिलीक आलोचककें केहन होएबाक चाही कहल गेल?
(A) केवल फार्म नहि, कंटेंट सेहो बुझनिहार, समय-सजग आ रसबोध सहित
(B) केवल प्रशंसक
(C) केवल कठोर
(D) कोनो नहि
७. 'ओकरा गाब' दियौ' सन पाँतिमे लेखकक चिन्ता की अछि?
(A) मैथिली/मिथिलापर अतिरिक्त राष्ट्रीय-राजनीतिक बोझ नहि लादब
(B) केवल हास्य
(C) निरर्थक
(D) कोनो नहि

खण्ड ६२ : विदेह-सदेह २९ — रवि भूषण पाठकक 'औझका डायरी' (विस्तार)

८. रवि भूषण पाठकक डायरी-स्तम्भक नाम की?

- (A) औझका डायरी
- (B) आँखिमे चित्र
- (C) पथ दर्शन
- (D) कोनो नहि

९. 'औझका डायरी' क प्रविष्टि कोन प्रारूपमे लिखल गेल अछि?

- (A) तारीखसहित छोट-छोट चिन्तनात्मक टिप्पणी
- (B) दीर्घ निबन्ध
- (C) पत्र-शैली
- (D) कोनो नहि

१०. डायरीमे ७ अप्रैल २०१७ क प्रविष्टिमे कोन मध्यकालीन कविक प्रसंग अछि?

- (A) मलिक मुहम्मद जायसी
- (B) विद्यापति
- (C) ज्योतिरीश्वर
- (D) कोनो नहि

११. डायरीक ११ अप्रैल २०१७ क प्रविष्टिमे लेखक कोन विषयपर चिन्तन करैत छथि?

- (A) मैथिलीकें चाही एहन आलोचकक स्वरूप
- (B) केवल हास्य
- (C) विदेश-यात्रा
- (D) कोनो नहि

१२. डायरीक १३ अप्रैल २०१७ प्रविष्टिमे लेखक कोन विषयपर सावधानी दैत छथि?

- (A) मिथिलाक कला/संगीतकें अनावश्यक उपराष्ट्रीयताक ठप्पासँ बचबाक
- (B) केवल आर्थिक विषय
- (C) विदेशी राजनीति
- (D) कोनो नहि

१३. रवि भूषण पाठक अपन सरकारी सेवा कोन विभागमे करैत छथि?

- (A) उत्तर प्रदेशक बाट-माप विभाग
- (B) रेलवे
- (C) डाक विभाग
- (D) कोनो नहि

१४. रवि भूषण पाठकक एक अन्य रचना-शृंखलाक नाम की, जे 'घर' शीर्षकसँ अछि?

- (A) घर (एक, दू, तीन आदि शृंखला)
- (B) औझका डायरी मात्र
- (C) केवल कविता
- (D) कोनो नहि

खण्ड ७० : विदेह-सदेह २९ — भामह आ दण्डीक काव्य-सिद्धान्त

१५. आचार्य भामह कोन काव्य-सिद्धान्त-धाराक प्रतिनिधि छथि?

- (A) अलंकारवादी
- (B) रसवादी
- (C) ध्वनिवादी
- (D) कोनो नहि

१६. संस्कृत आलोचनाक एक प्राचीन विवाद की छल, जकरासँ भामह परिचित छलाह?

- (A) काव्य-सौन्दर्यक मूलाधार शब्दालंकार वा अर्थालंकारमे अछि
- (B) छन्द-निर्धारण
- (C) भाषा-चयन
- (D) कोनो नहि

१७. भामहक प्रसिद्ध सूत्र 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' क भाव की?

- (A) शब्द आ अर्थक सहभावसँ काव्यक सृष्टि होइत अछि
- (B) केवल शब्द काव्य अछि
- (C) केवल अर्थ काव्य अछि
- (D) कोनो नहि

१८. दण्डी कोन ग्रन्थक रचनाकार छथि?

- (A) काव्यादर्श
- (B) नाट्यशास्त्र
- (C) ध्वन्यालोक
- (D) कोनो नहि

१९. दण्डी कविताक स्वरूपक विषयमे की मान्यता रखैत छथि?

- (A) कविता वांछित सरसता-युक्त, अलंकृत, रस-भाव-निरन्तर पदसमूह थिक
- (B) केवल छन्द-बद्ध शब्द
- (C) केवल अर्थहीन ध्वनि
- (D) कोनो नहि

२०. दण्डी अनुसार शब्दार्थ काव्यक की थिक, आ अलंकार की?

- (A) शब्दार्थ शरीर, अलंकार आत्मा
- (B) दुनू शरीर
- (C) दुनू आत्मा
- (D) कोनो नहि

२१. भामह आ दण्डीक काव्य-दृष्टिमे की समानता अछि, स्रोत अनुसार?

- (A) दुनूक लेल शब्दालंकार आ अर्थालंकार दुनू इष्ट छल
- (B) दुनूमे कोनो समानता नहि
- (C) दुनू अलंकारक विरोधी छलाह
- (D) कोनो नहि

खण्ड ७९ : विदेह-सदेह २९ — डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक 'मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक'

२२. 'मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक' शीर्षक आलेखक लेखक के छथि?

- (A) डॉ. कैलाश कुमार मिश्र
- (B) रवि भूषण पाठक
- (C) गजेन्द्र ठाकुर
- (D) कोनो नहि

२३. आलेखमे पाब्लो नेरुदाक कोन कविताक मैथिली अनुवाद देल गेल अछि?

- (A) You start dying slowly
- (B) Twenty Love Poems
- (C) Ode to my socks
- (D) कोनो नहि

२४. पाब्लो नेरुदा केकर कवि छथि, आलेख अनुसार?

- (A) स्पेनक कवि, साहित्यमे नोबेल पुरस्कार प्राप्त
- (B) अमेरिकाक कवि
- (C) इटलीक कवि
- (D) कोनो नहि

२५. रामायण-कथा सुनेनिहार काक भुशुंडी केकरा रामकथा सुनेने छलथिन, आलेख अनुसार?

- (A) पक्षीराज गरुड़
- (B) नारद
- (C) ब्रह्मा
- (D) कोनो नहि

२६. पंचतन्त्रक कथा अनुसार कौआ सभक राजाक नाम की छल?

- (A) मेघवर्ण
- (B) अरिमर्दन
- (C) स्थिरजीवी
- (D) कोनो नहि

२७. पंचतन्त्रक कथा अनुसार उल्लूक राजाक नाम की छल?

- (A) अरिमर्दन
- (B) मेघवर्ण
- (C) स्थिरजीवी
- (D) कोनो नहि

२८. पंचतन्त्रक कथामे कौआ सभक मध्य सबसँ चतुर आ बुद्धिमान कौआक नाम की छल?

- (A) स्थिरजीवी
- (B) मेघवर्ण
- (C) अरिमर्दन
- (D) कोनो नहि

२९. स्थिरजीवी अपन छलनीतिक तहत की केलक, जाहिसँ ओ उल्लूक राजाक विश्वास जीत सकल?

- (A) राजा मेघवर्णसँ अपनाकेँ अपमानित आ निष्कासित करबा लेलक
- (B) सीधे उल्लूसँ युद्ध केलक
- (C) उल्लूकेँ धोखा दऽ पकड़ि लेलक
- (D) कोनो नहि

३०. पंचतन्त्रक मूल रचनाकार के छथि, आलेख अनुसार?

- (A) विष्णु शर्मा
- (B) वाल्मीकि
- (C) व्यास
- (D) कोनो नहि

३१. 'दीनक नेना' शीर्षक गीतमय कविताक रचनाकार के छथि, आलेख अनुसार?

- (A) काली कान्त झा "बूच"
- (B) कृष्णमोहन झा
- (C) डॉ. कैलाश कुमार मिश्र
- (D) कोनो नहि

३२. आलेखमे 'फूलडालीक कनेर' शीर्षक छोट कविताक रचनाकार के छथि?

- (A) कृष्णमोहन झा
- (B) काली कान्त झा "बूच"
- (C) डॉ. कैलाश कुमार मिश्र
- (D) कोनो नहि

खण्ड ८० : विदेह-सदेह २९ — सौराठ गामक नामकरण-गाथा आ लोक-मान्यता

३३. लोक मान्यता अनुसार सौराठक मूल नाम की छल?

- (A) सौराष्ट्र
- (B) सतलखा
- (C) मंगलबनी
- (D) कोनो नहि

३४. 'सौराष्ट्र' शब्दक अर्थ की होइत अछि, लोक मान्यता अनुसार?

- (A) १०० राष्ट्र
- (B) ७ राष्ट्र
- (C) १००० राष्ट्र
- (D) कोनो नहि

३५. लोक कथाक मान्यता अनुसार सीताक स्वयंवर कतय भेल छल?

- (A) सौराठ
- (B) धनुखी
- (C) कनैल
- (D) कोनो नहि

३६. लोक मान्यता अनुसार सीता-स्वयंवर आ विवाहमे कतेक लोक आएल छला?

- (A) सात लाख
- (B) एक हजार
- (C) दस हजार
- (D) कोनो नहि

३७. सात लाख आगन्तुकक हेतु बनाओल गेल पैघ स्थान आब कोन नामसँ विख्यात अछि, लोक मान्यता अनुसार?

- (A) सतलखा
- (B) धनुखी
- (C) कनैल
- (D) कोनो नहि

३८. लोक मान्यता अनुसार भगवान शिवक धनुष जतय राखल गेल छल, ओ स्थान आब कोन नामसँ जानल जाइत अछि?

- (A) धनुखी गाम
- (B) कनैल गाम
- (C) मंगरौनी गाम
- (D) कोनो नहि

३९. राजा जनकक छोट भाए कनक ऋषि अपन आश्रम जतय बनौने छला, ओ स्थान आब कोन गामसँ जानल जाइत अछि?

- (A) कनैल गाम
- (B) धनुखी गाम
- (C) सतलखा गाम
- (D) कोनो नहि

४०. सीता जतय भोरे अपन संगी-बहिनपाक संग फूल लोढ़ै छलीह, ओ फुलबाड़ी 'मंगलबनी' अपभ्रंशित भऽ कोन गामक नाम भेल?

- (A) मंगरौनी
- (B) सतलखा
- (C) कनैल
- (D) कोनो नहि

४१. मधुबनी जिलाक सौराठ गाम साहित्य-इतिहासमे कोन कारणे विख्यात अछि?

- (A) केतेको सालसँ चलैत सभा (सभा-गाछी)
- (B) केवल कृषि
- (C) केवल व्यापार
- (D) कोनो नहि

खण्ड ८१ : विदेह-सदेह २९ — मैथिली लोकगीतमे भोजन-विन्यास, औषधि आ अकालकवित्त

४२. 'मैथिली लोकगीतमे भोजन विन्यास आ औषधि' आलेखक मूल स्रोत की अछि?

- (A) शोधकार्यक अवधिमे मिथिलाक गाम सभसँ संकलित लोकगीत
- (B) केवल पुस्तकीय अध्ययन
- (C) विदेशी स्रोत
- (D) कोनो नहि

४३. साप्ताहिक भोजन-विधान गीत अनुसार शुक्र (शुक्रवार) के दिन कोन भोज्य पदार्थ सुहाइत अछि?

- (A) दही
- (B) गुड़
- (C) धनियाँ
- (D) कोनो नहि

४४. साप्ताहिक भोजन-विधान गीत अनुसार शनिवार के दिन की खएला सँ 'कालौ काल कटति घर जाई' कहल गेल अछि?

- (A) अदरख
- (B) गुड़
- (C) राई
- (D) कोनो नहि

४५. बारहमासा-रूपी वैद्यगीत अनुसार सावनमे की नहि खएबाक चाही?

- (A) साग
- (B) दही
- (C) तेल
- (D) कोनो नहि

४६. बारहमासा-रूपी वैद्यगीतक अनुसार जेठ मासमे की नहि खएबाक चाही?

- (A) चलाब (चना/चरब)
- (B) गुड़
- (C) तेल
- (D) कोनो नहि

४७. बारहमासा-रूपी वैद्यगीतक अंतमे केकर नाम लऽ कऽ कहल गेल अछि जे एहि नियमक पालनसँ रोगसँ बचल जा सकैत अछि?

- (A) धनवन्तरि
- (B) चरक
- (C) सुश्रुत
- (D) कोनो नहि

४८. अकालकवित्तक रचनाकार लोक कवि के छथि?

- (A) फतुरी लाल
- (B) अब्राहम ग्रिएर्सन
- (C) काली कान्त झा बूच
- (D) कोनो नहि

४९. फतुरी लालक अकालकवित्त के कहिया हुनके मुहसँ सुनिकऽ लिखलनि?

- (A) अब्राहम ग्रिएर्सन, १८८७ ईस्वीमे
- (B) गजेन्द्र ठाकुर, २०१०मे
- (C) रवि भूषण पाठक
- (D) कोनो नहि

खण्ड 3666 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: घर १-३

५०. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: रवि भूषण पाठकक “घर १-३” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) घर १-३
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: रवि भूषण पाठकक “घर १-३”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: रवि भूषण पाठकक “घर १-३”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघु कथा/रेखाचित्र
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: रवि भूषण पाठकक “घर १-३” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) '‘डेली शुरू होय 'हमर बाबू एहन' ...' सँ आरम्भ घरेलू जीवनक व्यंग्यात्मक आ मार्मिक चित्रण

५४. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: रवि भूषण पाठकक “घर १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) '‘डेली शुरू होय 'हमर बाबू एहन' ...' सँ आरम्भ घरेलू जीवनक व्यंग्यात्मक आ मार्मिक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: रवि भूषण पाठकक “घर १-३”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा/रेखाचित्र
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: रवि भूषण पाठकक “घर १-३” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: रवि भूषण पाठकक “घर १-३”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघु कथा/रेखाचित्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५८. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: रवि भूषण पाठकक “घर १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९. खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357मे रवि भूषण पाठकक “घर १-३” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा/रेखाचित्र आ “'डेली शुरू होय 'हमर बाबू एहन'...'” सँ आरम्भ घरेलू जीवनक व्यंग्यात्मक आ मार्मिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3667 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: औझका डायरी

६०. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) औझका डायरी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) डायरी/आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य, आलोचना, भाषा आ समाजक समसामयिक प्रश्न पर विचार

६४. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य, आलोचना, भाषा आ समाजक समसामयिक प्रश्न पर विचार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा डायरी/आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ डायरी/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६८. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९. खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358मे रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी” प्रविष्टि गद्य, डायरी/आलेख आ “साहित्य, आलोचना, भाषा आ समाजक समसामयिक प्रश्न पर विचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3668 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ

७०. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना/निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विभा रानीक नाटक “भाग रौ” केँ सामाजिक-राजनैतिक अर्थगर्भिता सँ जोड़ि क देखल गेल अछि

७४. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विभा रानीक नाटक “भाग रौ” केँ सामाजिक-राजनैतिक अर्थगर्भिता सँ जोड़ि क देखल गेल अछि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचना/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७८. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: रवि भूषण पाठक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९. खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359मे रवि भूषण पाठक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/निबन्ध आ “विभा रानीक नाटक ”भाग रौ” केँ सामाजिक-राजनैतिक अर्थगर्भिता सँ जोड़ि क देखल गेल अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3669 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: झमेलिया बिआह

८०. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: रवि भूषण पाठक “झमेलिया बिआह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) झमेलिया बिआह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: रवि भूषण पाठक “झमेलिया बिआह”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: रवि भूषण पाठक “झमेलिया बिआह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) नाटक-आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: रवि भूषण पाठक “झमेलिया बिआह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक रचना-शिल्प, पात्र-विधान आ सामाजिक परिवेशक समालोचनात्मक अध्ययन

८४. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: रवि भूषण पाठक “झमेलिया बिआह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक रचना-शिल्प, पात्र-विधान आ सामाजिक परिवेशक समालोचनात्मक अध्ययन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: रवि भूषण पाठक “झमेलिया बिआह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा नाटक-आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: रवि भूषण पाठक “झमेलिया बिआह” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: रवि भूषण पाठक “झमेलिया बिआह”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ नाटक-आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८८. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: रवि भूषण पाठक “झमेलिया बिआह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९. खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360मे रवि भूषण पाठक “झमेलिया बिआह” प्रविष्टि गद्य, नाटक-आलोचना आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक रचना-शिल्प, पात्र-विधान आ सामाजिक परिवेशक समालोचनात्मक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3670 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन

९०. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: रवि भूषण पाठक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: रवि भूषण पाठक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) उपन्यास-आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "उत्थान-पतन" केर समीक्षा

९४. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "उत्थान-पतन" केर समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९५. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास-आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ उपन्यास-आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९८. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९. खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361मे रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास-आलोचना आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास “उत्थान-पतन” केर समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3671 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू

१००. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: रवि भूषण पाठकक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: रवि भूषण पाठकक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: रवि भूषण पाठकक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख/समालोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: रवि भूषण पाठकक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उपेक्षित कवि बूच बाबू (शिव कुमार झा) केर व्यक्तित्व आ कृतित्वक मार्मिक मूल्यांकन

१०४. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: रवि भूषण पाठकक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उपेक्षित कवि बूच बाबू (शिव कुमार झा) केर व्यक्तित्व आ कृतित्वक मार्मिक मूल्यांकन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: रवि भूषण पाठकक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/समालोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: रवि भूषण पाठक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: रवि भूषण पाठक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेख/समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०८. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: रवि भूषण पाठक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९. खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362मे रवि भूषण पाठक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू” प्रविष्टि गद्य, आलेख/समालोचना आ “उपेक्षित कवि बूच बाबू (शिव कुमार झा) केर व्यक्तित्व आ कृतित्वक मार्मिक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3672 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: गामक जिनगीक समीक्षा

११०. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: रवि भूषण पाठक “गामक जिनगीक समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गामक जिनगीक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: रवि भूषण पाठक “गामक जिनगीक समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: रवि भूषण पाठक “गामक जिनगीक समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा-संग्रह समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह “गामक जिनगी” कें कथाकारक सजग सामाजिक प्रतिबद्धता आ प्रगतिशील यथार्थवादक दृष्टिसँ विवेचना

११४. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह “गामक जिनगी” कें कथाकारक सजग सामाजिक प्रतिबद्धता आ प्रगतिशील यथार्थवादक दृष्टिसँ विवेचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा कथा-संग्रह समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथा-संग्रह समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११८. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९. खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363मे रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, कथा-संग्रह समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह “गामक जिनगी” कें कथाकारक सजग सामाजिक प्रतिबद्धता आ प्रगतिशील यथार्थवादक दृष्टिसँ विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3673 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: निराला:देह विदेह (१-४)

१२०. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: रवि भूषण पाठक “निराला:देह विदेह (१-४)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) निराला:देह विदेह (१-४)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: रवि भूषण पाठक “निराला:देह विदेह (१-४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: रवि भूषण पाठक “निराला:देह विदेह (१-४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: रवि भूषण पाठक “निराला:देह विदेह (१-४)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) हिन्दी कवि निरालाक चारिटा प्रतिनिधि कविता ("जूठि बान्ह नाव", "स्नेह निर्झर...", "रंगि गेल धरा...", "छाड़ल कारी कारी बादर...") केर मैथिली काव्यानुवाद

१२४. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: रवि भूषण पाठक “निराला:देह विदेह (१-४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) हिन्दी कवि निरालाक चारिटा प्रतिनिधि कविता ("जूठि बान्ह नाव", "स्नेह निर्झर...", "रंगि गेल धरा...", "छाड़ल कारी कारी बादर...") केर मैथिली काव्यानुवाद
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: रवि भूषण पाठक “निराला:देह विदेह (१-४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: रवि भूषण पाठक “निराला:देह विदेह (१-४)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: रवि भूषण पाठकक “निराला:देह विदेह (१-४)” के विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवादक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२८. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: रवि भूषण पाठकक “निराला:देह विदेह (१-४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९. खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364मे रवि भूषण पाठकक “निराला:देह विदेह (१-४)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद आ “हिन्दी कवि निरालाक चारिटा प्रतिनिधि कविता ("जूठि बान्ह नाव", "स्नेह निर्झर...", "रंगि गेल धरा...", "छाड़ल कारी कारी बादर...") केर मैथिली काव्यानुवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3674 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: आचार्य भामहक चिंतन

१३०. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आचार्य भामहक चिंतन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) संस्कृत काव्यशास्त्री भामहक "शब्दार्थे सहितौ काव्यम्" सिद्धान्तक व्याख्या

१३४. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) संस्कृत काव्यशास्त्री भामहक "शब्दार्थे सहितौ काव्यम्" सिद्धान्तक व्याख्या
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३८. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९. खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365मे रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “संस्कृत काव्यशास्त्री भामहक "शब्दार्थे सहितौ काव्यम्" सिद्धान्तक व्याख्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3675 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: दण्डी आ काव्यलक्षण

१४०. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दण्डी आ काव्यलक्षण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आचार्य दण्डीक काव्यादर्श अनुसार “इष्टार्थयुक्त पदावली” काव्यत्वक लक्षणक विवेचना

१४४. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आचार्य दण्डीक काव्यादर्श अनुसार “इष्टार्थयुक्त पदावली” काव्यत्वक लक्षणक विवेचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकक की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण”क विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४८. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतक एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९. खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366मे रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “आचार्य दण्डीक काव्यादर्श अनुसार “इष्टार्थयुक्त पदावली” काव्यत्वक लक्षणक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3676 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: लघुकथा- बोधिसत्व

१५०. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: रवि भूषण पाठकक “लघुकथा- बोधिसत्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लघुकथा- बोधिसत्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: रवि भूषण पाठकक “लघुकथा- बोधिसत्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: रवि भूषण पाठकक “लघुकथा- बोधिसत्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघु/दीर्घ कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: रवि भूषण पाठकक “लघुकथा- बोधिसत्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) एक युवक “भुद्ध झा” केर यात्रा-वृत्तान्तक माध्यमे मिथिलाक सामाजिक, जातीय आ मानसिक जटिलताक चित्रण

१५४. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: रवि भूषण पाठकक “लघुकथा- बोधिसत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) एक युवक “भुद्ध झा” केर यात्रा-वृत्तान्तक माध्यमे मिथिलाक सामाजिक, जातीय आ मानसिक जटिलताक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: रवि भूषण पाठकक “लघुकथा- बोधिसत्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु/दीर्घ कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: रवि भूषण पाठक “लघुकथा- बोधिसत्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: रवि भूषण पाठक “लघुकथा- बोधिसत्व”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघु/दीर्घ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५८. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: रवि भूषण पाठक “लघुकथा- बोधिसत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९. खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367मे रवि भूषण पाठक “लघुकथा- बोधिसत्व” प्रविष्टि गद्य, लघु/दीर्घ कथा आ “एक युवक “भुद्ध झा” केर यात्रा-वृत्तान्तक माध्यमे मिथिलाक सामाजिक, जातीय आ मानसिक जटिलताक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3677 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: तीनटा बीहनि कथा

१६०. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: रवि भूषण पाठक “तीनटा बीहनि कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) तीनटा बीहनि कथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: रवि भूषण पाठक “तीनटा बीहनि कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: रवि भूषण पाठक “तीनटा बीहनि कथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघु कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: रवि भूषण पाठक “तीनटा बीहनि कथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) तीन टा लघु कथाक संग्रह जाहिमे जीवनक विडम्बना, अभाव आ पारिवारिक अन्तर्विरोधक मार्मिक चित्रण अछि।

१६४. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: रवि भूषण पाठक “तीनटा बीहनि कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) तीन टा लघु कथाक संग्रह जाहिमे जीवनक विडम्बना, अभाव आ पारिवारिक अन्तर्विरोधक मार्मिक चित्रण अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: रवि भूषण पाठक “तीनटा बीहनि कथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: रवि भूषण पाठक “तीनटा बीहनि कथा” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: रवि भूषण पाठक “तीनटा बीहनि कथा”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६८. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: रवि भूषण पाठक “तीनटा बीहनि कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९. खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368मे रवि भूषण पाठक “तीनटा बीहनि कथा” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा आ “तीन टा लघु कथाक संग्रह जाहिमे जीवनक विडम्बना, अभाव आ पारिवारिक अन्तर्विरोधक मार्मिक चित्रण अछि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3678 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)

१७०. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: रवि भूषण पाठकक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: रवि भूषण पाठकक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: रवि भूषण पाठकक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) दीर्घ कथा/उपन्यासिका
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: रवि भूषण पाठकक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) “सूर्यकांत” पात्रक डायरीक माध्यमे मिथिलाक समाजिक-आर्थिक परिवर्तन, ब्राह्मण जजमानी प्रथा, बाल-विवाह, गामक अन्तर्कथा आ दम्पति जीवनक विस्तृत चित्रण

१७४. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: रवि भूषण पाठकक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) “सूर्यकांत” पात्रक डायरीक माध्यमे मिथिलाक समाजिक-आर्थिक परिवर्तन, ब्राह्मण जजमानी प्रथा, बाल-विवाह, गामक अन्तर्कथा आ दम्पति जीवनक विस्तृत चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: रवि भूषण पाठकक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकक की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा दीर्घ कथा/उपन्यासिका
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: रवि भूषण पाठकक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: रवि भूषण पाठक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)” के विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ दीर्घ कथा/उपन्यासिकाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७८. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: रवि भूषण पाठक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९. खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369मे रवि भूषण पाठक “ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)” प्रविष्टि गद्य, दीर्घ कथा/उपन्यासिका आ “सूर्यकांत” पात्रक डायरीक माध्यमे मिथिलाक समाजिक-आर्थिक परिवर्तन, ब्राह्मण जजमानी प्रथा, बाल-विवाह, गामक अन्तर्कथा आ दम्पति जीवनक विस्तृत चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3679 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: ओइ साल

१८०. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: रवि भूषण पाठक “ओइ साल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ओइ साल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: रवि भूषण पाठक “ओइ साल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: रवि भूषण पाठक “ओइ साल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरण/लघु कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: रवि भूषण पाठक “ओइ साल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) एक विशेष वर्षक घटनाक्रमक स्मरण जाहिमे आलूक अधिकता, अकाल, बाढ़ि आ सामाजिक घटनाक रोचक चित्रण अछि।

१८४. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: रवि भूषण पाठक “ओड़ साल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) एक विशेष वर्षक घटनाक्रमक स्मरण जाहिमे आलूक अधिकता, अकाल, बाढ़ि आ सामाजिक घटनाक रोचक चित्रण अछि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: रवि भूषण पाठक “ओड़ साल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण/लघु कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: रवि भूषण पाठक “ओड़ साल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: रवि भूषण पाठक “ओड़ साल”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरण/लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८८. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: रवि भूषण पाठक “ओड़ साल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९. खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370मे रवि भूषण पाठक “ओड़ साल” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण/लघु कथा आ “एक विशेष वर्षक घटनाक्रमक स्मरण जाहिमे आलूक अधिकता, अकाल, बाढ़ि आ सामाजिक घटनाक रोचक चित्रण अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3680 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: घर

१९०. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: रवि भूषण पाठक “घर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) घर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: रवि भूषण पाठकक “घर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: रवि भूषण पाठकक “घर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रेखाचित्र
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: रवि भूषण पाठकक “घर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) एक सामान्य मध्यवर्तीय घरक पारिवारिक अराजकता, सामूहिक प्रसन्नता, लड़ाई-झगड़ा, टी.वी. रिमोट लेल झगड़ा आ खर्चक प्राथमिकताक व्यंग्यात्मक चित्रण

१९४. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: रवि भूषण पाठकक “घर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) एक सामान्य मध्यवर्तीय घरक पारिवारिक अराजकता, सामूहिक प्रसन्नता, लड़ाई-झगड़ा, टी.वी. रिमोट लेल झगड़ा आ खर्चक प्राथमिकताक व्यंग्यात्मक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: रवि भूषण पाठकक “घर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा रेखाचित्र
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: रवि भूषण पाठकक “घर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: रवि भूषण पाठकक “घर”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रेखाचित्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९८. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: रवि भूषण पाठकक “घर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९. खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371मे रवि भूषण पाठकक “घर” प्रविष्टि गद्य, रेखाचित्र आ “एक सामान्य मध्यवर्तीय घरक पारिवारिक अराजकता, सामूहिक प्रसन्नता, लड़ाई-झगड़ा, टी.वी. रिमोट लेल झगड़ा आ खर्चक प्राथमिकताक व्यंग्यात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3681 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बाबूक चट्टी

२००. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाबूक चट्टी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरणात्मक कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पिताक पुरान चप्पलक प्रतीकक माध्यमे पैतृक स्नेह, स्मृति आ पीढ़ीगत परिवर्तनक मार्मिक कथा

२०४. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पिताक पुरान चप्पलक प्रतीकक माध्यमे पैतृक स्नेह, स्मृति आ पीढ़ीगत परिवर्तनक मार्मिक कथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरणात्मक कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरणात्मक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०८. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९. खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372मे रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” प्रविष्टि गद्य, संस्मरणात्मक कथा आ “पिताक पुरान चप्पलक प्रतीकक माध्यमे पैतृक स्नेह, स्मृति आ पीढ़ीगत परिवर्तनक मार्मिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3682 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय

२१०. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कार्यालयीन राजनीति, अफसरशाही, सिंह-झा-मिश्र-नेबोलाल जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार, जातीय समीकरण आ “कालजयी” होइबाक लालसाक तीखा व्यंग्य।

२१४. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कार्यालयीन राजनीति, अफसरशाही, सिंह-झा-मिश्र-नेबोलाल जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार, जातीय समीकरण आ “कालजयी” होइबाक लालसाक तीखा व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१८. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९. खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373मे रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “कार्यालयीन राजनीति, अफसरशाही, सिंह-झा-मिश्र-नेबोलाल जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार, जातीय समीकरण आ “कालजयी” होइबाक लालसाक तीखा व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3683 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस

२२०. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य/लघु कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) "रंजन जी" पात्रक माध्यमे कार्यालयीन चापलूसी, घूसक तकनीक, जातीय समीकरण आ समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचारक तीखा व्यंग्य

२२४. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) "रंजन जी" पात्रक माध्यमे कार्यालयीन चापलूसी, घूसक तकनीक, जातीय समीकरण आ समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचारक तीखा व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/लघु कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्य/लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२८. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९. खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374मे रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/लघु कथा आ “रंजन जी” पात्रक माध्यमे कार्यालयीन चापलूसी, घूसक तकनीक, जातीय समीकरण आ समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचारक तीखा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3684 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)

२३०. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनीतिक आ सामाजिक क्षेत्रमे व्यक्तिक प्रबन्धन आ षडयन्त्रक कला पर केन्द्रित व्यंग्य

२३४. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: रवि भूषण पाठक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?
- (A) राजनीतिक आ सामाजिक क्षेत्रमे व्यक्तिक प्रबन्धन आ षड्यन्त्रक कला पर केन्द्रित व्यंग्य
(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
२३५. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: रवि भूषण पाठक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
२३६. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: रवि भूषण पाठक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
२३७. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: रवि भूषण पाठक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
(D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
२३८. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: रवि भूषण पाठक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?
- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
२३९. खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375: एहि खण्डक सार की अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375मे रवि भूषण पाठक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “राजनीतिक आ सामाजिक क्षेत्रमे व्यक्तिक प्रबन्धन आ षड्यन्त्रक कला पर केन्द्रित व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- खण्ड 3685 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: फसाद आ आनंद (लघु कथा)**
२४०. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: रवि भूषण पाठक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?
- (A) फसाद आ आनंद (लघु कथा)
(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघु कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रामीण जीवनमे होइबला मारपीट आ विवादक कथात्मक चित्रण

२४४. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रामीण जीवनमे होइबला मारपीट आ विवादक कथात्मक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४८. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: रवि भूषण पाठक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४९. खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376मे रवि भूषण पाठक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा आ “ग्रामीण जीवनमे होइबला मारपीट आ विवादक कथात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3686 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)

२५०. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: रवि भूषण पाठक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५१. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: रवि भूषण पाठक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: रवि भूषण पाठक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५३. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: रवि भूषण पाठक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मधुबनी जिलाक कार्यालयीन राजनीति, गुटबाजी, सिंह-झा-मिश्र जेहन अधिकारीक कार्यशैली, आपसी दोस्ती-दुश्मनी, आ 'नेबोलाल' जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार आ नैतिक गिरावटक व्यंग्य।

२५४. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: रवि भूषण पाठक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मधुबनी जिलाक कार्यालयीन राजनीति, गुटबाजी, सिंह-झा-मिश्र जेहन अधिकारीक कार्यशैली, आपसी दोस्ती-दुश्मनी, आ 'नेबोलाल' जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार आ नैतिक गिरावटक व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५५. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: रवि भूषण पाठक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५६. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: रवि भूषण पाठक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५७. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: रवि भूषण पाठक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५८. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: रवि भूषण पाठक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५९. खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377मे रवि भूषण पाठक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “मधुबनी जिलाक कार्यालयीन राजनीति, गुटबाजी, सिंह-झा-मिश्र जेहन अधिकारीक कार्यशैली, आपसी दोस्ती-दुश्मनी, आ 'नेबोलाल' जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार आ नैतिक गिरावटक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3687 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: नाटक ‘रिहर्सल’

२६०. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: रवि भूषण पाठक “नाटक ‘रिहर्सल’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नाटक ‘रिहर्सल’
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६१. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: रवि भूषण पाठक “नाटक ‘रिहर्सल’”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य/पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) नाटक
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६३. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिलाक सांस्कृतिक संकट, जातीय समीकरण आ साहित्यिक राजनीतिकें ल' कऽ लिखल बहुअंकीय नाटक

२६४. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिलाक सांस्कृतिक संकट, जातीय समीकरण आ साहित्यिक राजनीतिकें ल' कऽ लिखल बहुअंकीय नाटक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६५. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा नाटक
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६६. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६७. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’”कें विदेह-सदेह 29क गद्य/पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६८. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६९. खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378मे रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’” प्रविष्टि गद्य/पद्य, नाटक आ “मिथिलाक सांस्कृतिक संकट, जातीय समीकरण आ साहित्यिक राजनीतिकें ल' कऽ लिखल बहुअंकीय नाटक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3688 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: टिल्लू जी (शिव कुमार झा)

२७०. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: रवि भूषण पाठक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) टिल्लू जी (शिव कुमार झा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७१. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: रवि भूषण पाठक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: रवि भूषण पाठक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) पत्र/प्रशस्ति
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७३. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: रवि भूषण पाठक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शिव कुमार झा (बूच भैया सुपुत्र) केर जन्मदिन पर मंगलकामनात्मक पत्र

२७४. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: रवि भूषण पाठक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शिव कुमार झा (बूच भैया सुपुत्र) केर जन्मदिन पर मंगलकामनात्मक पत्र
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७५. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: रवि भूषण पाठक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा पत्र/प्रशस्ति
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७६. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: रवि भूषण पाठक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: रवि भूषण पाठकक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)”क विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ पत्र/प्रशस्तिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७८. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: रवि भूषण पाठकक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७९. खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379मे रवि भूषण पाठकक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)” प्रविष्टि गद्य, पत्र/प्रशस्ति आ “शिव कुमार झा (बूच भैया सुपुत्र) केर जन्मदिन पर मंगलकामनात्मक पत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3689 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बाल कविता- 'क'

२८०. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल कविता- 'क'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८१. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बाल कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८३. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वर्णमाला 'क' सँ आरम्भ भऽ 'ड' तकक अक्षरक माध्यमे सहज बाल-मनोरंजन

२८४. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वर्णमाला 'क' सँ आरम्भ भऽ 'ड' तकक अक्षरक माध्यमे सहज बाल-मनोरंजन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८५. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८६. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८८. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८९. खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380मे रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “वर्णमाला 'क' सँ आरम्भ भऽ 'ड' तकक अक्षरक माध्यमे सहज बाल-मनोरंजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3690 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बाल कविता- मानसून

२९०. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल कविता- मानसून
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९१. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बाल कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९३. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मानसूनक पवन, हिमालय, अण्डमान, एलनीनो जेहन जटिल भूगोलीय अवधारणाक बाल-सुलभ भाषामे अभिव्यक्ति

२९४. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मानसूनक पवन, हिमालय, अण्डमान, एलनीनो जेहन जटिल भूगोलीय अवधारणाक बाल-सुलभ भाषामे अभिव्यक्ति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९५. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकक की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९६. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून”क विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९८. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतक एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९९. खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381मे रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “मानसूनक पवन, हिमालय, अण्डमान, एलनीनो जेहन जटिल भूगोलीय अवधारणाक बाल-सुलभ भाषामे अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3691 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बाल कविता- सुन वौआ सुन

३००. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- सुन वौआ सुन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल कविता- सुन वौआ सुन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०१. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- सुन वौआ सुन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०२. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- सुन वौआ सुन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बाल कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०३. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- सुन वौआ सुन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) “ऊ एगुन” के सङ्केतात्मक ध्वनिक माध्यमे बस यात्रा, खेल आ पाठक संग संवाद शैलीक बाल-गीत।

३०४. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- सुन वौआ सुन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) “ऊ एगुन” के सङ्केतात्मक ध्वनिक माध्यमे बस यात्रा, खेल आ पाठक संग संवाद शैलीक बाल-गीत।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०५. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- सुन वौआ सुन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०६. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: रवि भूषण पाठक “बाल कविता- सुन वौआ सुन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०७. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: रवि भूषण पाठक “बाल कविता- सुन वौआ सुन”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०८. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: रवि भूषण पाठक “बाल कविता- सुन वौआ सुन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०९. खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382मे रवि भूषण पाठक “बाल कविता- सुन वौआ सुन” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “ऊ णिन” के सङ्केतात्मक ध्वनिक माध्यमे बस यात्रा, खेल आ पाठक संग संवाद शैलीक बाल-गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3692 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बाल कविता- ब्लेक होल

३१०. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: रवि भूषण पाठक “बाल कविता- ब्लेक होल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल कविता- ब्लेक होल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३११. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: रवि भूषण पाठक “बाल कविता- ब्लेक होल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१२. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: रवि भूषण पाठक “बाल कविता- ब्लेक होल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बाल कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१३. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- ब्लेक होल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) खगोलीय वस्तु “ब्लेक होल” कें केन्द्रमे राखि लिखल ज्ञानवर्धक बाल कविता

३१४. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- ब्लेक होल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) खगोलीय वस्तु “ब्लेक होल” कें केन्द्रमे राखि लिखल ज्ञानवर्धक बाल कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१५. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- ब्लेक होल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१६. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- ब्लेक होल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१७. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- ब्लेक होल”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१८. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- ब्लेक होल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१९. खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383मे रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- ब्लेक होल” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “खगोलीय वस्तु “ब्लेक होल” कें केन्द्रमे राखि लिखल ज्ञानवर्धक बाल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3693 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे

३२०. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२१. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२२. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२३. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) एक साहित्यिक व्यक्तित्वक सम्मानमे लिखल कविता जे हुनकर दमदार व्यक्तित्व आ संघर्षक गाथा गबैत अछि।

३२४. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) एक साहित्यिक व्यक्तित्वक सम्मानमे लिखल कविता जे हुनकर दमदार व्यक्तित्व आ संघर्षक गाथा गबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२५. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२६. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२७. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे” के विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२८. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२९. खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384मे रवि भूषण पाठकक “श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक साहित्यिक व्यक्तित्वक सम्मानमे लिखल कविता जे हुनकर दमदार व्यक्तित्व आ संघर्षक गाथा गबैत अछि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3694 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: हजार-लाख मे

३३०. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: रवि भूषण पाठकक “हजार-लाख मे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हजार-लाख मे
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३१. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: रवि भूषण पाठकक “हजार-लाख मे”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३२. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: रवि भूषण पाठकक “हजार-लाख मे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३३. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: रवि भूषण पाठकक “हजार-लाख मे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक कोटेदारी, अन्नक कालाबाजारी आ गरीबक विस्थापनक यथार्थ पर तीखा कविता

३३४. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: रवि भूषण पाठक “हजार-लाख मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक कोटेदारी, अन्नक कालाबाजारी आ गरीबक विस्थापनक यथार्थ पर तीखा कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३५. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: रवि भूषण पाठक “हजार-लाख मे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३६. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: रवि भूषण पाठक “हजार-लाख मे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३७. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: रवि भूषण पाठक “हजार-लाख मे”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३८. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: रवि भूषण पाठक “हजार-लाख मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३९. खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385मे रवि भूषण पाठक “हजार-लाख मे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक कोटेदारी, अन्नक कालाबाजारी आ गरीबक विस्थापनक यथार्थ पर तीखा कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3695 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: डहकन

३४०. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: रवि भूषण पाठक “डहकन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) डहकन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४१. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: रवि भूषण पाठकक “डहकन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४२. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: रवि भूषण पाठकक “डहकन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) डहकन (लोकगीति शैली)
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४३. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: रवि भूषण पाठकक “डहकन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पारम्परिक डहकन शैलीमे तीखा व्यंग्य

३४४. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: रवि भूषण पाठकक “डहकन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पारम्परिक डहकन शैलीमे तीखा व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४५. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: रवि भूषण पाठकक “डहकन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा डहकन (लोकगीति शैली)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४६. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: रवि भूषण पाठकक “डहकन” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४७. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: रवि भूषण पाठकक “डहकन”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ डहकन (लोकगीति शैली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४८. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: रवि भूषण पाठकक “डहकन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४९. खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386मे रवि भूषण पाठकक “डहकन” प्रविष्टि पद्य, डहकन (लोकगीति शैली) आ “पारम्परिक डहकन शैलीमे तीखा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3696 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: खट्टा चूक्क

३५०. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) खट्टा चूक्क
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५१. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५२. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५३. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ईर्ष्या आ द्वेषक मनोवृत्तिक चित्रण

३५४. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ईर्ष्या आ द्वेषक मनोवृत्तिक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५५. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५६. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५७. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५८. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५९. खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387मे रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ईर्ष्या आ द्वेषक मनोवृत्तिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3697 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: हरियर

३६०. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: रवि भूषण पाठकक “हरियर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हरियर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६१. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: रवि भूषण पाठकक “हरियर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६२. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: रवि भूषण पाठकक “हरियर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६३. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: रवि भूषण पाठकक “हरियर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रंगसभक राजनीति आ सामाजिक अर्थक विवेचना

३६४. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: रवि भूषण पाठकक “हरियर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रंगसभक राजनीति आ सामाजिक अर्थक विवेचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६५. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: रवि भूषण पाठक “हरियर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६६. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: रवि भूषण पाठक “हरियर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६७. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: रवि भूषण पाठक “हरियर”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६८. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: रवि भूषण पाठक “हरियर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६९. खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388मे रवि भूषण पाठक “हरियर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रंगसभक राजनीति आ सामाजिक अर्थक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3698 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बहुत किछु विदा भ' गेल रहै

३७०. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: रवि भूषण पाठक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बहुत किछु विदा भ' गेल रहै
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७१. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: रवि भूषण पाठक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७२. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: रवि भूषण पाठक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७३. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आधुनिकता आ विस्थापनक दंश झेलैत मैथिली अस्मिता, लोकाचार आ पारम्परिक जीवनक विलोपक मार्मिक कविता

३७४. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आधुनिकता आ विस्थापनक दंश झेलैत मैथिली अस्मिता, लोकाचार आ पारम्परिक जीवनक विलोपक मार्मिक कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७५. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७६. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७७. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७८. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७९. खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389मे रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आधुनिकता आ विस्थापनक दंश झेलैत मैथिली अस्मिता, लोकाचार आ पारम्परिक जीवनक विलोपक मार्मिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3699 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: व्यर्थ प्रलापी

३८०. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) व्यर्थ प्रलापी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८१. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८२. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८३. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य जगतक षड्यन्त्रकारी प्रवृत्तिक चित्रित करैत कविता

३८४. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य जगतक षड्यन्त्रकारी प्रवृत्तिक चित्रित करैत कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८५. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८६. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८७. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८८. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८९. खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390मे रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य जगतक षड्यन्त्रकारी प्रवृत्तिक चित्रित करैत कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3700 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: झाबाद

३९०. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: रवि भूषण पाठकक “झाबाद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) झाबाद
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९१. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: रवि भूषण पाठकक “झाबाद”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९२. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: रवि भूषण पाठकक “झाबाद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९३. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: रवि भूषण पाठकक “झाबाद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विभिन्न समाजवादी राजनैतिक चेहराक जय-जयकारक बीच मिथिलाक अस्मिताक उद्घोष

३९४. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: रवि भूषण पाठकक “झाबाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विभिन्न समाजवादी राजनैतिक चेहराक जय-जयकारक बीच मिथिलाक अस्मिताक उद्घोष
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९५. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: रवि भूषण पाठकक “झाबाद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९६. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: रवि भूषण पाठकक “झाबाद” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगौं बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९७. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: रवि भूषण पाठकक “झाबाद”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९८. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: रवि भूषण पाठकक “झाबाद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९९. खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391मे रवि भूषण पाठकक “झाबाद” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विभिन्न समाजवादी राजनैतिक चेहराक जय-जयकारक बीच मिथिलाक अस्मिताक उद्घोष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3701 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: तीनटा कविता

४००. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) तीनटा कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०१. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०२. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०३. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) "समै भाग रहलै सत्य" आ "बूरहाक कान" जेहन विषय पर लिखल तीनटा कविताक संग्रह

४०४. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) "समै भाग रहलै सत्य" आ "बूरहाक कान" जेहन विषय पर लिखल तीनटा कविताक संग्रह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०५. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०६. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०७. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४०८. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०९. खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392मे रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “"समै भाग रहलै सत्य" आ "बूरहाक कान" जेहन विषय पर लिखल तीनटा कविताक संग्रह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3702 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: फसली पद्य १-७

४१०. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य १-७” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) फसली पद्य १-७
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४११. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य १-७”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१२. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: रवि भूषण पाठक “फसली पद्य १-७”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता (शृंखला)
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१३. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: रवि भूषण पाठक “फसली पद्य १-७” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) "मकड़ जिन्दाबाद", "खेसारी नवहतन", "भगिन मरूआ आ मिथिला", "अरुआ कऽ सप्पत", "महिकका धान", "कविता आ धान", "कनियाँ आ कविता" — मिथिलाक खेती, अनाज आ ओकर सामाजिक-आर्थिक पक्ष पर लिखल सात कविताक शृंखला।

४१४. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: रवि भूषण पाठक “फसली पद्य १-७” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) "मकड़ जिन्दाबाद", "खेसारी नवहतन", "भगिन मरूआ आ मिथिला", "अरुआ कऽ सप्पत", "महिकका धान", "कविता आ धान", "कनियाँ आ कविता" — मिथिलाक खेती, अनाज आ ओकर सामाजिक-आर्थिक पक्ष पर लिखल सात कविताक शृंखला।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१५. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: रवि भूषण पाठक “फसली पद्य १-७”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता (शृंखला)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१६. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: रवि भूषण पाठक “फसली पद्य १-७” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१७. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: रवि भूषण पाठक “फसली पद्य १-७”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविता (शृंखला)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१८. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: रवि भूषण पाठक “फसली पद्य १-७” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१९. खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393मे रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य १-७” प्रविष्टि पद्य, कविता (शृंखला) आ “”मकड़ जिन्दाबाद”, “खेसारी नवहतन”, “भगिान मरूआ आ मिथिला”, “अरुआ कऽ सप्पत”, “महिक्का धान”, “कविता आ धान”, “कनियाँ आ कविता” — मिथिलाक खेती, अनाज आ ओकर सामाजिक-आर्थिक पक्ष पर लिखल सात कविताक शृंखला।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3703 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: एहि बेर छठि मे

४२०. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) एहि बेर छठि मे
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२१. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२२. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२३. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) छठ पर्वक बदलैत स्वरूप आ सामाजिक विडम्बनाक चित्रण

४२४. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) छठ पर्वक बदलैत स्वरूप आ सामाजिक विडम्बनाक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२५. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२६. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२७. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२८. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२९. खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394मे रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “छठ पर्वक बदलैत स्वरूप आ सामाजिक विडम्बनाक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3704 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: हमर मैथिली

४३०. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हमर मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३१. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३२. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३३. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली भाषा आ संस्कृतिक पहचानक गौरवगाथा

४३४. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली भाषा आ संस्कृतिक पहचानक गौरवगाथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३५. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३६. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३७. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४३८. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३९. खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395मे रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मैथिली भाषा आ संस्कृतिक पहचानक गौरवगाथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3705 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: होली

४४०. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: रवि भूषण पाठकक “होली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) होली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४१. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: रवि भूषण पाठकक “होली”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४२. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: रवि भूषण पाठकक “होली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४३. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: रवि भूषण पाठकक “होली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उमर-क्रम आ साहित्यिक पुरस्कारक उपलब्धिक द्वन्द्व पर आधारित व्यंग्यात्मक कविता

४४४. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: रवि भूषण पाठकक “होली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उमर-क्रम आ साहित्यिक पुरस्कारक उपलब्धिक द्वन्द्व पर आधारित व्यंग्यात्मक कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४५. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: रवि भूषण पाठकक “होली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४६. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: रवि भूषण पाठकक “होली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४७. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: रवि भूषण पाठकक “होली”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४८. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: रवि भूषण पाठकक “होली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४९. खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396मे रवि भूषण पाठकक “होली” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “उमर-क्रम आ साहित्यिक पुरस्कारक उपलब्धिक द्वन्द्व पर आधारित व्यंग्यात्मक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3706 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)

४५०. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५१. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५२. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता (व्यंग्य)
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५३. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) हिन्दीक तथाकथित नामी आलोचक सभक गपौड़ी, उधरण-प्रदर्शन, आ मूल लेखनसँ दूरीक व्यंग्यात्मक चित्रण

४५४. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) हिन्दीक तथाकथित नामी आलोचक सभक गपौड़ी, उधरण-प्रदर्शन, आ मूल लेखनसँ दूरीक व्यंग्यात्मक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५५. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकक की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता (व्यंग्य)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५६. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५७. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविता (व्यंग्य)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४५८. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५९. खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397मे रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)” प्रविष्टि पद्य, कविता (व्यंग्य) आ “हिन्दीक तथाकथित नामी आलोचक सभक गपौड़ी, उधरण-प्रदर्शन, आ मूल लेखनसँ दूरीक व्यंग्यात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3707 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: मरणोपरांत-१-४

४६०. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मरणोपरांत-१-४
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६१. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६२. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता (शृंखला)
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६३. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मृत्यु आ ओकर बादक संस्कार, सामाजिक मूल्यांकन, विसंगति आ पारिवारिक राजनीतिकें केन्द्रमे राखि लिखल चारि कविताक शृंखला

४६४. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मृत्यु आ ओकर बादक संस्कार, सामाजिक मूल्यांकन, विसंगति आ पारिवारिक राजनीतिकें केन्द्रमे राखि लिखल चारि कविताक श्रृंखला
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६५. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता (श्रृंखला)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६६. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६७. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविता (श्रृंखला)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४६८. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६९. खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398मे रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४” प्रविष्टि पद्य, कविता (श्रृंखला) आ “मृत्यु आ ओकर बादक संस्कार, सामाजिक मूल्यांकन, विसंगति आ पारिवारिक राजनीतिकें केन्द्रमे राखि लिखल चारि कविताक श्रृंखला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3708 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बर्फ भोर

४७०. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बर्फ भोर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७१. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७२. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७३. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अत्यधिक जाड़क भोरक चित्रण

४७४. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अत्यधिक जाड़क भोरक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७५. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७६. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७७. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४७८. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७९. खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399मे रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अत्यधिक जाड़क भोरक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3709 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: देश आ गेयर

४८०. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) देश आ गेयर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८१. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८२. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८३. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बदलैत सामाजिक गतिकी, स्वार्थकेन्द्रित राजनीति आ देशक गेयर बदलबाक आवश्यकताक काव्यात्मक अभिव्यक्ति

४८४. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बदलैत सामाजिक गतिकी, स्वार्थकेन्द्रित राजनीति आ देशक गेयर बदलबाक आवश्यकताक काव्यात्मक अभिव्यक्ति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८५. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८६. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८७. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४८८. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८९. खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400मे रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बदलैत सामाजिक गतिकी, स्वार्थकेन्द्रित राजनीति आ देशक गेयर बदलबाक आवश्यकताक काव्यात्मक अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3710 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: पाँच केबी

४९०. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पाँच केबी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९१. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९२. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९३. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) इन्टरनेटक मन्द गतिमे फोटो खुजलाक दृश्यात्मक अनुभव

४९४. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) इन्टरनेटक मन्द गतिमे फोटो खुजलाक दृश्यात्मक अनुभव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९५. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९६. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९७. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९८. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९९. खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401मे रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “इन्टरनेटक मन्द गतिमे फोटो खुजलाक दृश्यात्मक अनुभव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3711 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: दोस महिम

५००. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: रवि भूषण पाठकक “दोस महिम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दोस महिम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०१. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: रवि भूषण पाठकक “दोस महिम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०२. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: रवि भूषण पाठकक “दोस महिम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०३. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: रवि भूषण पाठकक “दोस महिम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) "दोस" नामक पात्रक माध्यमे लोक-व्यवहार, मित्रताक छल-छद्म, आ सामाजिक जानकारीक सूक्ष्म दुरुपयोगक व्यंग्यात्मक चित्रण

५०४. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: रवि भूषण पाठकक “दोस महिम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) "दोस" नामक पात्रक माध्यमे लोक-व्यवहार, मित्रताक छल-छद्म, आ सामाजिक जानकारीक सूक्ष्म दुरुपयोगक व्यंग्यात्मक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०५. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: रवि भूषण पाठकक “दोस महिम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०६. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: रवि भूषण पाठकक “दोस महिम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०७. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: रवि भूषण पाठकक “दोस महिम”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५०८. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: रवि भूषण पाठकक “दोस महिम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०९. खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402मे रवि भूषण पाठकक “दोस महिम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “"दोस" नामक पात्रक माध्यमे लोक-व्यवहार, मित्रताक छल-छद्म, आ सामाजिक जानकारीक सूक्ष्म दुरुपयोगक व्यंग्यात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3712 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत

५१०. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५११. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१२. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१३. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) एक फरेबी ठग जे गीत-श्लोकक माध्यमे लोककें ठगैत छल, ओकर चरित्र चित्रण

५१४. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) एक फरेबी ठग जे गीत-श्लोकक माध्यमे लोककें ठगैत छल, ओकर चरित्र चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१५. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१६. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१७. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५१८. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१९. खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403मे रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक फरेबी ठग जे गीत-श्लोकक माध्यमे लोककें ठगैत छल, ओकर चरित्र चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3713 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: मनोज भाय क चिट्ठी

५२०. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मनोज भाय क चिट्ठी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२१. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२२. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता/पत्र
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२३. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रवासी मनोज भाय प्रति लिखल एक काव्यात्मक पत्र

५२४. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रवासी मनोज भाय प्रति लिखल एक काव्यात्मक पत्र
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२५. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता/पत्र
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२६. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२७. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविता/पत्रक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५२८. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२९. खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404मे रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी” प्रविष्टि पद्य, कविता/पत्र आ “प्रवासी मनोज भाय प्रति लिखल एक काव्यात्मक पत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3714 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बियाह आ मौछ

५३०. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: रवि भूषण पाठकक “बियाह आ मौछ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बियाह आ मौछ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३१. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: रवि भूषण पाठकक “बियाह आ मौछ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३२. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: रवि भूषण पाठकक “बियाह आ मौछ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३३. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: रवि भूषण पाठक “बियाह आ मौछ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विवाहक बहाने सामाजिक दिखावा, पारिवारिक दबाव, आ व्यक्तिगत मनोदशाक हल्का-फुल्का व्यंग्यात्मक चित्रण

५३४. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: रवि भूषण पाठक “बियाह आ मौछ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विवाहक बहाने सामाजिक दिखावा, पारिवारिक दबाव, आ व्यक्तिगत मनोदशाक हल्का-फुल्का व्यंग्यात्मक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३५. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: रवि भूषण पाठक “बियाह आ मौछ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३६. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: रवि भूषण पाठक “बियाह आ मौछ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३७. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: रवि भूषण पाठक “बियाह आ मौछ”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५३८. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: रवि भूषण पाठक “बियाह आ मौछ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३९. खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405मे रवि भूषण पाठक “बियाह आ मौछ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विवाहक बहाने सामाजिक दिखावा, पारिवारिक दबाव, आ व्यक्तिगत मनोदशाक हल्का-फुल्का व्यंग्यात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3715 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: प्लेटो आ हमर कनिया

५४०. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्लेटो आ हमर कनिया
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४१. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४२. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४३. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दार्शनिक प्लेटोक “योग्य शिष्य” आ स्त्रीक घरेलू दायित्वक बीचक साम्यक व्यंजनापूर्ण कविता

५४४. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दार्शनिक प्लेटोक “योग्य शिष्य” आ स्त्रीक घरेलू दायित्वक बीचक साम्यक व्यंजनापूर्ण कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४५. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४६. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४७. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५४८. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४९. खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406मे रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दार्शनिक प्लेटोक “योग्य शिष्य” आ स्त्रीक घरेलू दायित्वक बीचक साम्यक व्यंजनापूर्ण कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3716 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: टिप्स फ्राम खट्टरकका

५५०. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: रवि भूषण पाठकक “टिप्स फ्राम खट्टरकका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) टिप्स फ्राम खट्टरकका
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५१. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: रवि भूषण पाठकक “टिप्स फ्राम खट्टरकका”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५२. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: रवि भूषण पाठकक “टिप्स फ्राम खट्टरकका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५३. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: रवि भूषण पाठकक “टिप्स फ्राम खट्टरकका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यमे साहित्यिक चोरी (प्लेजियरिज्म) आ अनुकरणक प्रवृत्तिक व्यंग्य

५५४. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: रवि भूषण पाठकक “टिप्स फ्राम खट्टरकका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यमे साहित्यिक चोरी (प्लेजियरिज्म) आ अनुकरणक प्रवृत्तिक व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५५. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: रवि भूषण पाठकक “टिप्स फ्राम खट्टरकका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५६. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: रवि भूषण पाठक “टिप्स फ्राम खट्टरकका” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५७. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: रवि भूषण पाठक “टिप्स फ्राम खट्टरकका”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५५८. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: रवि भूषण पाठक “टिप्स फ्राम खट्टरकका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५९. खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407मे रवि भूषण पाठक “टिप्स फ्राम खट्टरकका” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्यमे साहित्यिक चोरी (प्लेजियरिज्म) आ अनुकरणक प्रवृत्तिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3717 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बर्फ पानि भाफ

५६०. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: रवि भूषण पाठक “बर्फ पानि भाफ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बर्फ पानि भाफ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६१. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: रवि भूषण पाठक “बर्फ पानि भाफ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६२. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: रवि भूषण पाठक “बर्फ पानि भाफ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६३. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) एक युवतीक देह, मोन आ सपनाक रूपकक माध्यमे मृत्यु, प्रेम आ इतिहासक चिन्तन

५६४. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) एक युवतीक देह, मोन आ सपनाक रूपकक माध्यमे मृत्यु, प्रेम आ इतिहासक चिन्तन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६५. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६६. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६७. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५६८. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६९. खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408मे रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक युवतीक देह, मोन आ सपनाक रूपकक माध्यमे मृत्यु, प्रेम आ इतिहासक चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3718 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बस तीने दिन

५७०. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बस तीने दिन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७१. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७२. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७३. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पटना-दरभंगामे आयोजित तीन दिवसीय साहित्यिक समारोहक उल्लास, भीड़, आ प्रलोभनक चित्रण

५७४. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पटना-दरभंगामे आयोजित तीन दिवसीय साहित्यिक समारोहक उल्लास, भीड़, आ प्रलोभनक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७५. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७६. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७७. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५७८. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७९. खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409मे रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पटना-दरभंगामे आयोजित तीन दिवसीय साहित्यिक समारोहक उल्लास, भीड़, आ प्रलोभनक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3719 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: उत्थर लोक

५८०. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) उत्थर लोक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८१. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८२. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८३. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उत्तर बिहारक भौगोलिक-सांस्कृतिक पहचान, ओकर निष्ठुरता, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वभावक चित्रण

५८४. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उत्तर बिहारक भौगोलिक-सांस्कृतिक पहचान, ओकर निष्ठुरता, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वभावक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८५. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८६. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८७. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५८८. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८९. खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410मे रवि भूषण पाठकक “उत्थर लोक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “उत्तर बिहारक भौगोलिक-सांस्कृतिक पहचान, ओकर निष्ठुरता, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वभावक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3720 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: चमारक ऋण

५९०. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चमारक ऋण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९१. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९२. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९३. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) चमार समाजक बौद्धिक योगदानक ऋण स्वीकार

५९४. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) चमार समाजक बौद्धिक योगदानक ऋण स्वीकार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९५. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९६. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९७. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९८. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९९. खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411मे रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चमार समाजक बौद्धिक योगदानक ऋण स्वीकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3721 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: दीवाली क पहिले

६००. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दीवाली क पहिले
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०१. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०२. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०३. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दीवाली पूर्व कुम्हारक जीवनक मार्मिक चित्रण

६०४. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दीवाली पूर्व कुम्हारक जीवनक मार्मिक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०५. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०६. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०७. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६०८. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०९. खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412मे रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दीवाली पूर्व कुम्हारक जीवनक मार्मिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3722 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: धनतेरस राति

६१०. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) धनतेरस राति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६११. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१२. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१३. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) धनतेरसक बजारमे करबाक खरीदारी, सामर्थ्यक अभाव, आ आवश्यकताक बोझक मार्मिक चित्रण

६१४. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) धनतेरसक बजारमे करबाक खरीदारी, सामर्थ्यक अभाव, आ आवश्यकताक बोझक मार्मिक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१५. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१६. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१७. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६१८. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१९. खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413मे रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “धनतेरसक बजारमे करबाक खरीदारी, सामर्थ्यक अभाव, आ आवश्यकताक बोझक मार्मिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3723 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: हम पुरहितिया

६२०. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हम पुरहितिया
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२१. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२२. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२३. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) एक पुरोहित ब्राह्मणक जीवन-यापनक चित्रण

६२४. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) एक पुरोहित ब्राह्मणक जीवन-यापनक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२५. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२६. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२७. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६२८. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२९. खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414मे रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक पुरोहित ब्राह्मणक जीवन-यापनक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3724 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: चालीसक बात

६३०. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: रवि भूषण पाठकक “चालीसक बात” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चालीसक बात
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३१. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: रवि भूषण पाठकक “चालीसक बात”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३२. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: रवि भूषण पाठकक “चालीसक बात”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३३. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: रवि भूषण पाठकक “चालीसक बात” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) चालीस वर्षक उमर पार कऽ लेलाक बाद पुरान मित्रक स्मरण, शारीरिक परिवर्तन, आ विस्थापनक पीड़ाक कविता

६३४. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: रवि भूषण पाठक “चालीसक बात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) चालीस वर्षक उमर पार कऽ लेलाक बाद पुरान मित्रक स्मरण, शारीरिक परिवर्तन, आ विस्थापनक पीड़ाक कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३५. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: रवि भूषण पाठक “चालीसक बात”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३६. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: रवि भूषण पाठक “चालीसक बात” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३७. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: रवि भूषण पाठक “चालीसक बात”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६३८. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: रवि भूषण पाठक “चालीसक बात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३९. खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415मे रवि भूषण पाठक “चालीसक बात” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चालीस वर्षक उमर पार कऽ लेलाक बाद पुरान मित्रक स्मरण, शारीरिक परिवर्तन, आ विस्थापनक पीड़ाक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3725 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: बामे गाम दहिने गाम १-६

६४०. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: रवि भूषण पाठक “बामे गाम दहिने गाम १-६” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बामे गाम दहिने गाम १-६
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४१. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: रवि भूषण पाठक “बामे गाम दहिने गाम १-६”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४२. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता (शृंखला)
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४३. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बागमती-करेहक बीच बसल "करियन" गामक बहुआयामी चित्रण

६४४. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बागमती-करेहक बीच बसल "करियन" गामक बहुआयामी चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४५. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकक की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता (शृंखला)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४६. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४७. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६”क विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविता (शृंखला)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६४८. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतक एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४९. खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416मे रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६” प्रविष्टि पद्य, कविता (शृंखला) आ “बागमती-करेहक बीच बसल “करियन” गामक बहुआयामी चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3726 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: छोडा अजगुत कम्प्यूटर छै

६५०. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: रवि भूषण पाठकक “छोडा अजगुत कम्प्यूटर छै” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) छोडा अजगुत कम्प्यूटर छै
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५१. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: रवि भूषण पाठकक “छोडा अजगुत कम्प्यूटर छै”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५२. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: रवि भूषण पाठकक “छोडा अजगुत कम्प्यूटर छै”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५३. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: रवि भूषण पाठकक “छोडा अजगुत कम्प्यूटर छै” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नव पीढ़ीक तकनीकी दक्षता आ गुरु-परम्पराक बदलैत स्वरूपक चित्रण

६५४. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: रवि भूषण पाठकक “छोडा अजगुत कम्प्यूटर छै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नव पीढ़ीक तकनीकी दक्षता आ गुरु-परम्पराक बदलैत स्वरूपक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५५. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: रवि भूषण पाठकक “छोडा अजगुत कम्प्यूटर छै”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५६. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: रवि भूषण पाठकक “छोडा अजगुत कम्प्यूटर छै” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५७. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: रवि भूषण पाठकक “छोडा अजगुत कम्प्यूटर छै”क विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६५८. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: रवि भूषण पाठकक “छोडा अजगुत कम्प्यूटर छै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५९. खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417मे रवि भूषण पाठकक “छोडा अजगुत कम्प्यूटर छै” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ीक तकनीकी दक्षता आ गुरु-परम्पराक बदलैत स्वरूपक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3727 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: महाकवि विद्यापति-१

६६०. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) महाकवि विद्यापति-१
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६१. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६२. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६३. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) युवाकवि विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा, कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक सृजन-प्रक्रिया

६६४. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) युवाकवि विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा, कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक सृजन-प्रक्रिया
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६५. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६६. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६७. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६६८. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६९. खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418मे रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “युवाकवि विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा, कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक सृजन-प्रक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3728 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: महाकवि विद्यापति-२

६७०. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) महाकवि विद्यापति-२
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७१. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७२. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७३. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विद्यापतिक ब्राह्मण-कविसँ आगू बढ़ि लोकक कवि बनबाक सामाजिक प्रक्रिया

६७४. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विद्यापतिक ब्राह्मण-कविसँ आगू बढ़ि लोकक कवि बनबाक सामाजिक प्रक्रिया
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७५. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७६. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७७. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६७८. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७९. खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419मे रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विद्यापतिक ब्राह्मण-कविसँ आगू बढ़ि लोकक कवि बनबाक सामाजिक प्रक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3729 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: हाइकू

६८०. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: रवि भूषण पाठकक “हाइकू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हाइकू
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८१. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: रवि भूषण पाठकक “हाइकू”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८२. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: रवि भूषण पाठकक “हाइकू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) हाइकू
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८३. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: रवि भूषण पाठकक “हाइकू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई खचरहबा (कचरा बीनबला) के खोजमे छै भाग फतंगा, जकाँ जीवनक नश्वरता आ अर्थहीनताक सूक्ष्म चित्रण।

६८४. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: रवि भूषण पाठकक “हाइकू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ई खचरहबा (कचरा बीनबला) के खोजमे छै भाग फतंगा, जकाँ जीवनक नश्वरता आ अर्थहीनताक सूक्ष्म चित्रण।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८५. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: रवि भूषण पाठकक “हाइकू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८६. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: रवि भूषण पाठकक “हाइकू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८७. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: रवि भूषण पाठकक “हाइकू”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६८८. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: रवि भूषण पाठकक “हाइकू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८९. खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420मे रवि भूषण पाठकक “हाइकू” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ “ई खचरहबा (कचरा बीनबला) के खोजमे छै भाग फतंगा, जकाँ जीवनक नश्वरता आ अर्थहीनताक सूक्ष्म चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3730 : विदेह-सदेह 29 — रवि भूषण पाठक: कि भेलए एकरा

६९०. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: रवि भूषण पाठकक “कि भेलए एकरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कि भेलए एकरा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९१. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: रवि भूषण पाठकक “कि भेलए एकरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९२. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: रवि भूषण पाठकक “कि भेलए एकरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९३. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: रवि भूषण पाठकक “कि भेलए एकरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) एक अनपेक्षित नेताक कार्यशैली आ स्वभाव पर आश्चर्य प्रकट करैत प्रश्नाकुल कविता

६९४. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: रवि भूषण पाठक “कि भेले एकरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) एक अनपेक्षित नेताक कार्यशैली आ स्वभाव पर आश्चर्य प्रकट करैत प्रश्नाकुल कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९५. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: रवि भूषण पाठक “कि भेले एकरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९६. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: रवि भूषण पाठक “कि भेले एकरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९७. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: रवि भूषण पाठक “कि भेले एकरा”केँ विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६९८. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: रवि भूषण पाठक “कि भेले एकरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९९. खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421मे रवि भूषण पाठक “कि भेले एकरा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक अनपेक्षित नेताक कार्यशैली आ स्वभाव पर आश्चर्य प्रकट करैत प्रश्नाकुल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3731 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: लघुकथा- पण्डिताइन

७००. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लघुकथा- पण्डिताइन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०१. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०२. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०३. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जटा आ अनुराधाक दुखान्त प्रेम आ जीवनक व्यथा

७०४. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जटा आ अनुराधाक दुखान्त प्रेम आ जीवनक व्यथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०५. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०६. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०७. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७०८. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०९. खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जटा आ अनुराधाक दुखान्त प्रेम आ जीवनक व्यथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3732 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: बुरिराज (लघुकथा)

७१०. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बुरिराज (लघुकथा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७११. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१२. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१३. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आधुनिक शिक्षा, प्रवास आ पारिवारिक विघटनक बीच झूलैत पात्रक मनोदशा

७१४. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आधुनिक शिक्षा, प्रवास आ पारिवारिक विघटनक बीच झूलैत पात्रक मनोदशा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१५. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकर्के की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१६. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१७. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)”क विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७१८. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१९. खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “आधुनिक शिक्षा, प्रवास आ पारिवारिक विघटनक बीच झूलैत पात्रक मनोदशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3733 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना

७२०. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२१. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२२. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२३. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली फकड़ा (लोकोक्ति) केर श्रेणी-विभाजन, परिभाषा आ स्त्री-मनोदशाक प्रमुख माध्यम केर रूपमे हुनकर भूमिकाक गहन मानवशास्त्रीय अध्ययन

७२४. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली फकड़ा (लोकोक्ति) केर श्रेणी-विभाजन, परिभाषा आ स्त्री-मनोदशाक प्रमुख माध्यम केर रूपमे हुनकर भूमिकाक गहन मानवशास्त्रीय अध्ययन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२५. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२६. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२७. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७२८. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२९. खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मैथिली फकड़ा (लोकोक्ति) केर श्रेणी-विभाजन, परिभाषा आ स्त्री-मनोदशाक प्रमुख माध्यम केर रूपमे हुनकर भूमिकाक गहन मानवशास्त्रीय अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3734 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)

७३०. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३१. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३२. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३३. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) असमक नॉर्थ कछार हिल्स (हाफलौंग) केर प्राकृतिक सौन्दर्य, दीमासा, जेमे नागा, कुकी जेहन जनजातीय समुदायक सांस्कृतिक विरासत आ कला-केन्द्र केर गतिविधिक सजीव यात्रा-वृत्तान्त।

७३४. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) असमक नॉर्थ कछार हिल्स (हाफलौंग) केर प्राकृतिक सौन्दर्य, दीमासा, जेमे नागा, कुकी जेहन जनजातीय समुदायक सांस्कृतिक विरासत आ कला-केन्द्र केर गतिविधिक सजीव यात्रा-वृत्तान्त।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३५. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३६. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३७. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७३८. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३९. खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “असमक नॉर्थ कछार हिल्स (हाफ्लौंग) केर प्राकृतिक सौन्दर्य, दीमासा, जेमे नागा, कुकी जेहन जनजातीय समुदायक सांस्कृतिक विरासत आ कला-केन्द्र केर गतिविधिक सजीव यात्रा-वृत्तान्त।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3735 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)

७४०. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४१. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४२. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) यात्रा-वृत्तान्त
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
७४३. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) नॉर्थ कछार हिल्सक पूर्ववत यात्रा-क्रम
७४४. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?
- (A) नॉर्थ कछार हिल्सक पूर्ववत यात्रा-क्रम
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
७४५. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
७४६. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
७४७. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
७४८. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?
- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४९. खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “नॉर्थ कछार हिल्सक पूर्ववत यात्रा-क्रम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3736 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)

७५०. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५१. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५२. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५३. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अरुणाचल प्रदेशक लोअर दिवांग घाटी (रोईंग) केर दुर्गम यात्रा

७५४. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अरुणाचल प्रदेशक लोअर दिवांग घाटी (रोईंग) केर दुर्गम यात्रा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५५. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५६. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५७. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७५८. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५९. खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “अरुणाचल प्रदेशक लोअर दिवांग घाटी (रोईंग) केर दुर्गम यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3737 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक: यायावरी: संगईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर

७६०. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) यायावरी: संगईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६१. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६२. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६३. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मणिपुरक इम्फाल नजदीक कबुई नागा (रोंगमेई) गाम संगईप्राऊ केर यात्रा

७६४. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मणिपुरक इम्फाल नजदीक कबुई नागा (रोंगमेई) गाम संगईप्राऊ केर यात्रा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६५. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६६. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६७. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७६८. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६९. खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “मणिपुरक इम्फाल नजदीक कबुई नागा (रोंगमेई) गाम संगईप्राऊ केर यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3738 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात

७७०. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७१. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७२. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७३. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उत्तराखण्डक बारह बर्षीय नन्दा राजजात यात्राक विवरण

७७४. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उत्तराखण्डक बारह बर्षीय नन्दा राजजात यात्राक विवरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७५. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७६. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७७. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७७८. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७९. खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “उत्तराखण्डक बारह बर्षीय नन्दा राजजात यात्राक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3739 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन

७८०. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८१. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८२. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८३. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बृन्दावन आ बरसानाक राधा-कृष्ण भक्तिमय यात्रा-वृत्तान्त

७८४. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वृन्दावन आ बरसानाक राधा-कृष्ण भक्तिमय यात्रा-वृत्तान्त
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८५. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८६. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८७. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७८८. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८९. खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “वृन्दावन आ बरसानाक राधा-कृष्ण भक्तिमय यात्रा-वृत्तान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3740 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन

७९०. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९१. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९२. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त/वार्तालाप
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९३. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मुक्तिजा मलिक (मलिक भाय) केर संग दिल्लीक श्रीराम सेन्टर केर केफेटेरियामे भेल बौद्धिक गोष्ठी

७९४. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मुक्तिजा मलिक (मलिक भाय) केर संग दिल्लीक श्रीराम सेन्टर केर केफेटेरियामे भेल बौद्धिक गोष्ठी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९५. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/वार्तालाप
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९६. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९७. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/वार्तालापक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७९८. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९९. खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/वार्तालाप आ “मुक्तिजा मलिक (मलिक भाय) केर संग दिल्लीक श्रीराम सेन्टर केर केफेटेरियामे भेल बौद्धिक गोष्ठी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3741 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना

८००. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०१. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०२. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा-संग्रह समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०३. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सुभाषचन्द्र यादवक कथा-संग्रहक भाषा-विन्यास आ कथा-वस्तुक दुइ दृष्टिकोण सँ समीक्षा

८०४. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सुभाषचन्द्र यादवक कथा-संग्रहक भाषा-विन्यास आ कथा-वस्तुक दुइ दृष्टिकोण सँ समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०५. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा कथा-संग्रह समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०६. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना” रचना/लेखकका कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०७. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथा-संग्रह समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८०८. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०९. खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना” प्रविष्टि गद्य, कथा-संग्रह समीक्षा आ “सुभाषचन्द्र यादवक कथा-संग्रहक भाषा-विन्यास आ कथा-वस्तुक दुई दृष्टिकोण सँ समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3742 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना

८१०. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८११. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१२. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१३. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रामलोचन ठाकूरक पोथी “मैथिली लोककथा” केर विवेचना

८१४. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रामलोचन ठाकूरक पोथी “मैथिली लोककथा” केर विवेचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१५. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१६. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१७. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८१८. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१९. खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकुरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “रामलोचन ठाकुरक पोथी “मैथिली लोककथा” केर विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3743 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता

८२०. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२१. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२२. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२३. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्नेहलता नाम सँ लिखैत मैथिल गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक योगदान, तुलना अस्समी भूपेन हजारिकासँ, आ मिथिला समाज द्वारा हुनका प्रति बरतल उदासीनताक मार्मिक आलोचना।

८२४. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्नेहलता नाम सँ लिखैत मैथिल गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक योगदान, तुलना अस्समी भूपेन हजारिकासँ, आ मिथिला समाज द्वारा हुनका प्रति बरतल उदासीनताक मार्मिक आलोचना।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२५. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२६. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२७. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८२८. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२९. खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “स्नेहलता नाम सँ लिखैत मैथिल गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक योगदान, तुलना अस्समी भूपेन हजारिकासँ, आ मिथिला समाज द्वारा हुनका प्रति बरतल उदासीनताक मार्मिक आलोचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3744 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: इंद्रधनुषी अकास

८३०. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) इंद्रधनुषी अकास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३१. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३२. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता-संग्रह समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३३. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता-संग्रह “इंद्रधनुषी अकास” केर आमुखीय समीक्षा

८३४. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता-संग्रह “इंद्रधनुषी अकास” केर आमुखीय समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३५. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा कविता-संग्रह समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३६. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३७. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविता-संग्रह समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८३८. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३९. खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास” प्रविष्टि गद्य, कविता-संग्रह समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता-संग्रह “इंद्रधनुषी अकास” केर आमुखीय समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3745 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल

८४०. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४१. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४२. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) पोथी समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४३. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जगदीश प्रसाद मण्डलक “गामक जिनगी” पोथीक १९ कथा सभक विस्तृत समीक्षा

८४४. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जगदीश प्रसाद मण्डलक “गामक जिनगी” पोथीक १९ कथा सभक विस्तृत समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४५. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा पोथी समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४६. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४७. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ पोथी समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८४८. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४९. खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल” प्रविष्टि गद्य, पोथी समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक “गामक जिनगी” पोथीक १९ कथा सभक विस्तृत समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3746 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)

८५०. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५१. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५२. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) उपन्यास समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५३. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास “जीवन संघर्ष” केर समीक्षा

८५४. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास “जीवन संघर्ष” केर समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५५. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५६. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५७. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ उपन्यास समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८५८. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५९. खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास “जीवन संघर्ष” केर समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3747 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य

८६०. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६१. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६२. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६३. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिला चित्रकला (मधुबनी पेंटिंग) केर ५००० वर्ष पुरान इतिहास, नारीक एकाधिकार, व्यवसायीकरणक प्रभाव, आ ब्राह्मण-कायस्थ-हरिजन शैलीक विभेदक विवेचना

८६४. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिला चित्रकला (मधुबनी पेंटिंग) केर ५००० वर्ष पुरान इतिहास, नारीक एकाधिकार, व्यवसायीकरणक प्रभाव, आ ब्राह्मण-कायस्थ-हरिजन शैलीक विभेदक विवेचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६५. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६६. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६७. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८६८. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६९. खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मिथिला चित्रकला (मधुबनी पेंटिंग) केर ५००० वर्ष पुरान इतिहास, नारीक एकाधिकार, व्यवसायीकरणक प्रभाव, आ ब्राह्मण-कायस्थ-हरिजन शैलीक विभेदक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3748 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय

८७०. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७१. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७२. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७३. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजस्थान आ मध्यप्रदेशमे पितृपक्षमे मनाओल जाइबला सांझी लोककला आ व्रतक मानवशास्त्रीय अध्ययन

८७४. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजस्थान आ मध्यप्रदेशमे पितृपक्षमे मनाओल जाइबला सांझी लोककला आ व्रतक मानवशास्त्रीय अध्ययन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७५. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७६. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७७. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८७८. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७९. खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “राजस्थान आ मध्यप्रदेशमे पितृपक्षमे मनाओल जाइबला सांझी लोककला आ व्रतक मानवशास्त्रीय अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3749 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: लघुकथा- चन्दा

८८०. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लघुकथा- चन्दा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८१. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८२. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८३. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) चन्दा आ राघवक निश्चल ग्राम्य प्रेमक कथा

८८४. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) चन्दा आ राघवक निश्चल ग्राम्य प्रेमक कथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८५. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८६. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८७. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८८८. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८९. खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “चन्दा आ राघवक निश्चल ग्राम्य प्रेमक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3750 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री

८९०. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९१. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९२. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९३. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) छोटानागपुरक उराँव जनजातिक बीच बिताओल बचपनक मार्मिक कथा

८९४. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) छोटानागपुरक उराँव जनजातिक बीच बिताओल बचपनक मार्मिक कथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९५. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकसँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९६. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९७. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८९८. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९९. खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “छोटानागपुरक उराँव जनजातिक बीच बिताओल बचपनक मार्मिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3751 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: लघुकथा- सखी कृन्ती

९००. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लघुकथा- सखी कृन्ती
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०१. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०२. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०३. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल-विवाहक दुष्परिणाम आ अघेड़ उमरक पतिसँ होइबला षोषणक मार्मिक कथा

१०४. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल-विवाहक दुष्परिणाम आ अघेड़ उमरक पतिसँ होइबला षोषणक मार्मिक कथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०८. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९. खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “बाल-विवाहक दुष्परिणाम आ अघेड़ उमरक पतिसँ होइबला षोषणक मार्मिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3752 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग

११०. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रो. चण्डेश्वर झा केर चारि उपलब्ध गीत-रेकर्डिंग पर आधारित आलेख

११४. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रो. चण्डेश्वर झा केर चारि उपलब्ध गीत-रेकर्डिंग पर आधारित आलेख
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११८. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९. खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “प्रो. चण्डेश्वर झा केर चारि उपलब्ध गीत-रेकर्डिंग पर आधारित आलेख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3753 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)

१२०. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) परिचर्चा/आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक स्थिति, अहिल्या, सीता, भामती सनक पौराणिक उदाहरण, मधुश्रावणीक सन्ध्या-प्रसंग, आ समकालीन मैथिल समाजमे नारी दशा पर गहन विवेचना

१२४. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक स्थिति, अहिल्या, सीता, भामती सनक पौराणिक उदाहरण, मधुश्रावणीक सन्ध्या-प्रसंग, आ समकालीन मैथिल समाजमे नारी दशा पर गहन विवेचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा परिचर्चा/आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ परिचर्चा/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२८. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९. खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)” प्रविष्टि गद्य, परिचर्चा/आलेख आ “परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक स्थिति, अहिल्या, सीता, भामती सनक पौराणिक उदाहरण, मधुश्रावणीक सन्ध्या-प्रसंग, आ समकालीन मैथिल समाजमे नारी दशा पर गहन विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3754 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?

१३०. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख/विवेचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मधुश्रावणी कथामे गौरीक तीन विवादास्पद रूप (चोरनी, डाईन, छिनार) केर मानवशास्त्रीय व्याख्या

१३४. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मधुश्रावणी कथामे गौरीक तीन विवादास्पद रूप (चोरनी, डाईन, छिनार) केर मानवशास्त्रीय व्याख्या
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/विवेचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?” केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेख/विवेचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३८. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९. खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?” प्रविष्टि गद्य, आलेख/विवेचना आ “मधुश्रावणी कथामे गौरीक तीन विवादास्पद रूप (चोरनी, डाईन, छिनार) केर मानवशास्त्रीय व्याख्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3755 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे

१४०. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पीढ़ीक जीवन

१४४. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पीढ़ीक जीवन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४८. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९. खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पीढ़ीक जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3756 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना

१५०. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रामक मर्यादा पुरुषोत्तमक आलोचना करैत मैथिलानीक पीड़ा आ उपरागक लोक-दृष्टिसँ विवेचना

१५४. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रामक मर्यादा पुरुषोत्तमक आलोचना करैत मैथिलानीक पीड़ा आ उपरागक लोक-दृष्टिसँ विवेचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५८. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९. खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “रामक मर्यादा पुरुषोत्तमक आलोचना करैत मैथिलानीक पीड़ा आ उपरागक लोक-दृष्टिसँ विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3757 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन

१६०. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मधुश्रावणी पाबनिक बहुआयामी मानवशास्त्रीय व्याख्या

१६४. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मधुश्रावणी पाबनिक बहुआयामी मानवशास्त्रीय व्याख्या
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६८. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९. खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मधुश्रावणी पाबनिक बहुआयामी मानवशास्त्रीय व्याख्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3758 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव

१७०. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली जोग गीतमे इरोटिका (कामुकता) केर मुख्यधाराक स्वीकृति, तांत्रिक परम्परा आ प्रेमक सूक्ष्म सम्बन्धक विवेचना

१७४. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली जोग गीतमे इरोटिका (कामुकता) केर मुख्यधाराक स्वीकृति, तांत्रिक परम्परा आ प्रेमक सूक्ष्म सम्बन्धक विवेचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७८. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९. खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली जोग गीतमे इरोटिका (कामुकता) केर मुख्यधाराक स्वीकृति, तांत्रिक परम्परा आ प्रेमक सूक्ष्म सम्बन्धक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3759 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति

१८०. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिल समाजमे तमाकूल लत, ओकर सांस्कृतिक स्वीकृति आ स्वास्थ्य पर भयावह प्रभावक चित्रण

१८४. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिल समाजमे तमाकूल लत, ओकर सांस्कृतिक स्वीकृति आ स्वास्थ्य पर भयावह प्रभावक चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८८. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९. खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिल समाजमे तमाकूल लत, ओकर सांस्कृतिक स्वीकृति आ स्वास्थ्य पर भयावह प्रभावक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3760 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?

१९०. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिलानी अर्थात स्त्रीक स्थिति पर विमर्श करबाक अधिकारीक प्रश्न

१९४. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिलानी अर्थात स्त्रीक स्थिति पर विमर्श करबाक अधिकारीक प्रश्न
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९८. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९. खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिलानी अर्थात स्त्रीक स्थिति पर विमर्श करबाक अधिकारीक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3761 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज

१०००. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००१. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००२. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त/इतिहास
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००३. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मणिपुरक १८^म सदीक राजा गरीब नबाज (पंहिबा) केर वीरतापूर्ण जीवन-गाथा

१००४. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मणिपुरक १८^म सदीक राजा गरीब नबाज (पंहिबा) केर वीरतापूर्ण जीवन-गाथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००५. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/इतिहास
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००६. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००७. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/इतिहासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१००८. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००९. खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/इतिहास आ “मणिपुरक १८म् सदीक राजा गरीब नबाज (पंहिबा) केर वीरतापूर्ण जीवन-गाथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3762 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका

१०१०. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०११. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१२. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) दीर्घ कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१३. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रोफेसर सुधाकरक पत्नी नविन्दता आ राघवक चारित्रिक द्वन्द्व आ अन्तरंग सम्बन्धक कथा

१०१४. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रोफेसर सुधाकरक पत्नी नविन्दता आ राघवक चारित्रिक द्वन्द्व आ अन्तरंग सम्बन्धक कथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१५. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा दीर्घ कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१६. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१७. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ दीर्घ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०१८. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१९. खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका” प्रविष्टि गद्य, दीर्घ कथा आ “प्रोफेसर सुधाकरक पत्नी नविन्दता आ राघवक चारित्रिक द्वन्द्व आ अन्तरंग सम्बन्धक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3763 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे

१०२०. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२१. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२२. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२३. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली लोकगीतमे सुग्गा केर श्रृंगार, स्नेह, ज्ञान आ प्रतीकक रूपमे प्रयोगक गहन विवेचना

१०२४. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली लोकगीतमे सुग्गा केर श्रृंगार, स्नेह, ज्ञान आ प्रतीकक रूपमे प्रयोगक गहन विवेचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२५. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२६. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२७. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०२८. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ शृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२९. खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ शृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली लोकगीतमे सुग्गा केर शृंगार, स्नेह, ज्ञान आ प्रतीकक रूपमे प्रयोगक गहन विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3764 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक

१०३०. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३१. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३२. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३३. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली लोकगीतमे काक (कौआ) केर मानवीकरण, शकुन-अपशकुन, मिथिलाक सांस्कृतिक मान्यता, आ विरह-मिलनक सन्देशवाहकक रूपमे विस्तृत विवेचना

१०३४. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली लोकगीतमे काक (कौआ) केर मानवीकरण, शकुन-अपशकुन, मिथिलाक सांस्कृतिक मान्यता, आ विरह-मिलनक सन्देशवाहकक रूपमे विस्तृत विवेचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३५. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३६. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३७. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०३८. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३९. खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली लोकगीतमे काक (कौआ) केर मानवीकरण, शकुन-अपशकुन, मिथिलाक सांस्कृतिक मान्यता, आ विरह-मिलनक सन्देशवाहकक रूपमे विस्तृत विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3765 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना

१०४०. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४१. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४२. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४३. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिलानी संस्कार आ सीता दाईक पीड़ाक सूत्र

१०४४. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिलानी संस्कार आ सीता दाईक पीड़ाक सूत्र
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४५. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४६. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४७. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०४८. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४१. खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिलानी संस्कार आ सीता दाईक पीड़ाक सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3766 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिली संस्कृति करे अवयव

१०५०. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली संस्कृति करे अवयव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५१. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५२. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५३. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) “मिथिलाम” संस्कृतिक खानपान (कदली, कबकब, मीन), वस्त्र विन्यास, गीत-संगीत, वाद्य-यन्त्र, भाषा, धार्मिक सम्प्रदाय — छह अवयवक माध्यमे मैथिली संस्कृतिक विश्लेषण

१०५४. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) “मिथिलाम” संस्कृतिक खानपान (कदली, कबकब, मीन), वस्त्र विन्यास, गीत-संगीत, वाद्य-यन्त्र, भाषा, धार्मिक सम्प्रदाय — छह अवयवक माध्यमे मैथिली संस्कृतिक विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५५. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५६. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५७. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०५८. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५९. खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ ““मिथिलाम” संस्कृतिक खानपान (कदली, कबकब, मीन), वस्त्र विन्यास, गीत-संगीत, वाद्य-यन्त्र, भाषा, धार्मिक सम्प्रदाय — छह अवयवक माध्यमे मैथिली संस्कृतिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3767 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद

१०६०. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६१. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६२. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख/लोकगाथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६३. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नाथ जोगी सम्प्रदायक गोपीचन्द-भरथरी-मैनावतीक लोकगाथाक मानवशास्त्रीय विवेचना

१०६४. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नाथ जोगी सम्प्रदायक गोपीचन्द-भरथरी-मैनावतीक लोकगाथाक मानवशास्त्रीय विवेचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६५. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/लोकगाथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६६. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६७. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेख/लोकगाथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०६८. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६९. खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद” प्रविष्टि गद्य, आलेख/लोकगाथा आ “नाथ जोगी सम्प्रदायक गोपीचन्द-भरथरी-मैनावतीक लोकगाथाक मानवशास्त्रीय विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3768 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाह: लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण

१०७०. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाह: लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाह: लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७१. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाह: लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७२. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाह: लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त/शोध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७३. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाह: लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजस्थानक मण्डोर (जोधपुर) मे रावण-मन्दोदरी विवाह-स्थलक भग्नावशेषक यात्रा-वृत्तान्त

१०७४. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाह: लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजस्थानक मण्डोर (जोधपुर) मे रावण-मन्दोदरी विवाह-स्थलक भग्नावशेषक यात्रा-वृत्तान्त
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७५. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाह: लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/शोध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७६. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाह: लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७७. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाह: लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण”कें विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०७८. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाह: लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७९. खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाह: लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/शोध आ “राजस्थानक मण्डोर (जोधपुर) मे रावण-मन्दोदरी विवाह-स्थलक भग्नावशेषक यात्रा-वृत्तान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3769 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य

१०८०. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८१. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८२. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८३. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) दुर्गापूजा आ उपनयन जेहन अवसर पर छागर बलिप्रदान प्रथाक विरोध

१०८४. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) दुर्गापूजा आ उपनयन जेहन अवसर पर छागर बलिप्रदान प्रथाक विरोध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८५. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८६. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य” रचना/लेखकका कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८७. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०८८. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८९. खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “दुर्गापूजा आ उपनयन जेहन अवसर पर छागर बलिप्रदान प्रथाक विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3770 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास

१०९०. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९१. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९२. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९३. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली लोकगीतक माध्यमे मिथिलाक खानपान संस्कृतिक विवेचना

१०९४. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली लोकगीतक माध्यमे मिथिलाक खानपान संस्कृतिक विवेचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९५. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९६. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९७. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०९८. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे कएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९९. खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली लोकगीतक माध्यमे मिथिलाक खानपान संस्कृतिक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3771 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)

११००. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०१. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०२. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०३. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिलाक सौराठ आ गुजरातक सौराष्ट्र (सोमनाथ) बीचक ऐतिहासिक समानताक खोज

११०४. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिलाक सौराठ आ गुजरातक सौराष्ट्र (सोमनाथ) बीचक ऐतिहासिक समानताक खोज
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०५. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०६. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०७. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)”केँ विदेह-सदेह 29क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११०८. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०९. खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मिथिलाक सौराठ आ गुजरातक सौराष्ट्र (सोमनाथ) बीचक ऐतिहासिक समानताक खोज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3772 : विदेह-सदेह 29 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: गामक कचोट

१११०. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गामक कचोट
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११११. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११२. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११३. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गामक प्रकृति, लोक-जीवन, खेती-किसानी, पर्व-त्योहार, नदी-पोखर आ पारम्परिक सुगन्ध सँ भरल जीवनक मार्मिक स्मरण

१११४. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गामक प्रकृति, लोक-जीवन, खेती-किसानी, पर्व-त्योहार, नदी-पोखर आ पारम्परिक सुगन्ध सँ भरल जीवनक मार्मिक स्मरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११५. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११६. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११७. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट”कें विदेह-सदेह 29क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१११८. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 29क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११११. खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गामक प्रकृति, लोक-जीवन, खेती-किसानी, पर्व-त्योहार, नदी-पोखर आ पारम्परिक सुगन्ध सँ भरल जीवनक मार्मिक स्मरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तरमाला — अध्याय २ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) १९७३ — रवि भूषण पाठकक जन्म सन् १९७३ ई.मे भेल।
२. (A) समस्तीपुरक करियन आ नानीगाम भिड़हा — रवि भूषण पाठकक गाम समस्तीपुरक करियन आ नानीगाम भिड़हा अछि।
३. (A) करियन, वैद्यनाथपुर, दरभंगा, समस्तीपुर, पटना आ दिल्ली — रवि भूषण पाठकक शिक्षा करियन आ वैद्यनाथपुर गाममे आगाँ दरभंगा, समस्तीपुर, पटना आ दिल्लीमे भेल।
४. (A) उत्तर प्रदेशक बाट-माप विभाग — रवि भूषण पाठक उत्तर प्रदेशक बाट-माप विभाग आ चक... (सम्बद्ध सरकारी सेवा) सँ जुड़ल छथि।
५. (A) जायसी (मलिक मुहम्मद जायसी) — ‘औझका डायरी’ मे जायसी (मलिक मुहम्मद जायसी) क प्रशंसा अछि, जे मुसलमान होइतो हिन्दू स्त्रीक जीवन-प्रेम-विरहकें नीक जकाँ बुझलनि।
६. (A) केवल फार्म नहि, कंटेंट सेहो बुझनिहार, समय-सजग आ रसबोध सहित — डायरीमे कहल गेल जे मैथिलीकें एहन आलोचक चाही जेकरामे बहुज्ञता, रसबोध, समय-सजगता आ फॉर्म-कंटेंट दुनूक बुझनाइ होए।
७. (A) मैथिली/मिथिलापर अतिरिक्त राष्ट्रीय-राजनीतिक बोझ नहि लादब — एहि पाँतिमे लेखकक चिन्ता अछि जे मिथिला/मैथिलीपर अतिरिक्त उपराष्ट्रीयताक ठप्पा वा अनुचित राजनीतिक अपेक्षा नहि लादल जाए, बल्कि एकरा सहज विकासक अवसर देल जाए।
८. (A) औझका डायरी — रवि भूषण पाठकक डायरी-स्तम्भक नाम ‘औझका डायरी’ थिक, जे दैनिक/तारीखवार लघु चिन्तन-प्रविष्टिक रूपमे लिखल गेल अछि।
९. (A) तारीखसहित छोट-छोट चिन्तनात्मक टिप्पणी — ‘औझका डायरी’ क हर प्रविष्टि तारीखक संग छोट-छोट चिन्तनात्मक टिप्पणीक रूपमे लिखल गेल अछि (जेना ०७-०४-२०१७, ११-०४-२०१७ आदि)।
१०. (A) मलिक मुहम्मद जायसी — ७ अप्रैल २०१७ क प्रविष्टिमे जायसी (पद्मावतक रचयिता) क प्रसंग अछि, जे एक भिन्न धर्मक होइतहु भारतीय संवेदना आ नारी-जीवनकें गहिराइसँ बुझलनि, ओहिपर चिन्तन कएल गेल अछि।
११. (A) मैथिलीकें चाही एहन आलोचकक स्वरूप — ११ अप्रैल २०१७ क प्रविष्टिमे लेखक मैथिलीकें चाही एहन आलोचकक स्वरूपपर चिन्तन करैत छथि — जेकरामे बहुज्ञता, रसबोध, समय-सजगता आ फॉर्म-कंटेंट दुनूक बुझनाइ होए।
१२. (A) मिथिलाक कला/संगीतकें अनावश्यक उपराष्ट्रीयताक ठप्पासँ बचबाक — १३ अप्रैल २०१७ प्रविष्टिमे लेखक चिन्ता व्यक्त करैत छथि जे मिथिलाक कला/गायन-परम्पराकें अनावश्यक उपराष्ट्रीयताक ठप्पा वा अत्यधिक अपेक्षासँ बचाओल जाएब चाही, ताकि ओकर स्वाभाविक विकास बाधित नहि होए।
१३. (A) उत्तर प्रदेशक बाट-माप विभाग — रवि भूषण पाठक उत्तर प्रदेशक बाट-माप विभागसँ जुड़ल सरकारी सेवामे कार्यरत छथि।
१४. (A) घर (एक, दू, तीन आदि श्रृंखला) — रवि भूषण पाठकक ‘घर (एक)’, ‘घर (दू)’, ‘घर (तीन)’ सन शीर्षकसँ एक रचना-श्रृंखला अछि, जे पारिवारिक जीवनक विभिन्न पक्षपर आधारित प्रतीत होइत अछि।
१५. (A) अलंकारवादी — आचार्य भामह अलंकारवादी काव्य-सिद्धान्त-धाराक प्रतिनिधि छथि।
१६. (A) काव्य-सौन्दर्यक मूलाधार शब्दालंकार वा अर्थालंकारमे अछि — भामह ऐ प्राचीन विवादसँ परिचित छलाह जे काव्य-सौन्दर्यक मूलाधार शब्दालंकारमे अछि वा अर्थालंकारमे।
१७. (A) शब्द आ अर्थक सहभावसँ काव्यक सृष्टि होइत अछि — ‘शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्’ क भाव अछि जे शब्द आ अर्थ दुनूक सहभाव (संयोग) सँ काव्यक सृष्टि होइत अछि — भामह दुनूक महत्त्वपर बल दैत छथि।
१८. (A) काव्यादर्श — दण्डी ‘काव्यादर्श’ ग्रन्थक रचनाकार छथि।

१९. (A) कविता वांछित सरसता-युक्त, अलंकृत, रस-भाव-निरन्तर पदसमूह थिक — दण्डीक स्पष्ट विचार अछि जे कविता ओहि पदसमूहक नाम थिक जे वांछित सरसतासँ युक्त, अलंकृत आ रस-भाव-निरन्तर होइत अछि।
२०. (A) शब्दार्थ शरीर, अलंकार आत्मा — दण्डी अनुसार शब्दार्थ काव्यक शरीर थिक, आ अलंकार ओकर आत्मा — हुनकर विचारमे अलंकारविहीन पदावली साहित्य नहि भऽ सकैत अछि।
२१. (A) दुनूक लेल शब्दालंकार आ अर्थालंकार दुनू इष्ट छल — स्रोत अनुसार भामहक लेल शब्दालंकार आ अर्थालंकार दुनू इष्ट छल, आ दण्डीक चिंतनक संदर्भ सेहो भामहकालीन काव्यचिंतनसँ जुड़ल मानल जाइत अछि।
२२. (A) डॉ. कैलाश कुमार मिश्र — ‘मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक’ शीर्षक आलेखक लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र छथि, जे एथनोग्राफर छथि।
२३. (A) You start dying slowly — आलेखमे पाब्लो नेरुदाक कविता ‘You start dying slowly’ क मैथिली अनुवाद डॉ. कैलाश कुमार मिश्र द्वारा देल गेल अछि।
२४. (A) स्पेनक कवि, साहित्यमे नोबेल पुरस्कार प्राप्त — आलेख अनुसार पाब्लो नेरुदा स्पेनक कवि छथि, जिनका साहित्यमे योगदान हेतु नोबेल पुरस्कार भेटल छनि।
२५. (A) पक्षीराज गरुड़ — आलेख अनुसार काक भुशुंडी कौआ छला जे पक्षीराज गरुड़केँ रामकथा पहिने सुना देने छलथिन, जकर वर्णन बाल्मीकि रामायण आ तुलसीदासक रामचरितमानसमे भेटैत अछि।
२६. (A) मेघवर्ण — पंचतन्त्रक कथा अनुसार कागराज मेघवर्ण कौआ सभक राजा छल।
२७. (A) अरिमर्दन — पंचतन्त्रक कथा अनुसार उल्लूक राजाक नाम अरिमर्दन छल, जे कौआकेँ अपन सबसँ पैघ दुश्मन बूझैत छल।
२८. (A) स्थिरजीवी — पंचतन्त्रक कथामे स्थिरजीवी सबसँ चतुर आ बुद्धिमान कौआ छल, जे छलनीतिक सहारा लऽ उल्लूक गुफा जरा कऽ ओकरा नष्ट करौलक।
२९. (A) राजा मेघवर्णसँ अपनाकेँ अपमानित आ निष्कासित करबा लेलक — स्थिरजीवी छलनीतिक तहत राजा मेघवर्णसँ अपनाकेँ ऊँच-नीच कहा आ अपमानित-निष्कासित करा लेलक, जाहिसँ उल्लूक राजाक विश्वास जीति ओ ओकर गुफामे प्रवेश पाओल।
३०. (A) विष्णु शर्मा — आलेख अनुसार चिरै-चुनमुन आ कौआक मनुखक जीवनमे महत्त्वक सबसँ उत्तम उदाहरण विष्णु शर्मा द्वारा रचित कालजयी रचना पंचतन्त्र अछि।
३१. (A) काली कान्त झा “बूच” — आलेख अनुसार ‘दीनक नेना’ शीर्षक गीतमय कविता काली कान्त झा “बूच” द्वारा रचित अछि, जाहिमे एक गरीब माय कौआक सहारा लऽ अपन कनैत बच्चाकेँ बाँसबाक प्रयत्न करैत अछि।
३२. (A) कृष्णमोहन झा — आलेखमे ‘फूलडालीक कनेर’ शीर्षक छोट कविता कवि कृष्णमोहन झा द्वारा रचित अछि, जाहिमे कवि सुग्गाक माध्यमसँ नायिकाक स्मृतिमे बेर-बेर आएब वर्णित करैत छथि।
३३. (A) सौराष्ट्र — लोक मान्यता अनुसार सौराठक मूल नाम ‘सौराष्ट्र’ छल, जे बादमे अपभ्रंशित भऽ ‘सौराठ’ भेल।
३४. (A) १०० राष्ट्र — लोक मान्यता अनुसार सौराष्ट्रक अर्थ भेल १०० राष्ट्र, जे सीताक स्वयंवरमे भाग लेनिहार १०० राष्ट्रक राजकुमारसँ सम्बद्ध अछि।
३५. (A) सौराठ — लोक कथाक मान्यता अनुसार सीताक स्वयंवर सौराठमे भेल छल, जतय १०० राष्ट्रक राजकुमार भाग लेने छला।
३६. (A) सात लाख — लोक मान्यता अनुसार सीता-स्वयंवर आ बिआहमे सात लाख लोक आएल छला, जकर रहबाक लेल एक पैघ स्थानक निर्माण कएल गेल।
३७. (A) सतलखा — लोक मान्यता अनुसार सात लाख लोकक रहबाक हेतु बनाओल गेल स्थान आब ‘सतलखा’ नामक गामसँ विख्यात अछि, जे सौराठसँ मात्र तीन किलोमीटरक दूरीपर अछि।
३८. (A) धनुखी गाम — लोक मान्यता अनुसार भगवान शिवक धनुष जतय राखल गेल छल, ओ स्थान आब ‘धनुखी’ नामक गामसँ जानल जाइत अछि।
३९. (A) कनैल गाम — लोक मान्यता अनुसार राजा जनकक छोट भाए कनक ऋषिक आश्रमवला स्थानपर आब ‘कनैल गाम’ बसल अछि।
४०. (A) मंगरौनी — लोक मान्यता अनुसार सीता प्रतिदिन भोरे जतय फूल लोढ़ै छलीह, ओ ‘मंगलबनी’ नामक फुलबाड़ी अपभ्रंशित भऽ ‘मंगरौनी’ बनि चुकल अछि, जे मधुबनीक बगलमे अछि।
४१. (A) केतेको सालसँ चलैत सभा (सभा-गाछी) — आलेख अनुसार सौराठ मिथिलाक धरोहर-गाम अछि, जे केतेको सालसँ चलैत सभा हेतु अपन सभा-गाछीक कारणे विख्यात अछि।
४२. (A) शोधकार्यक अवधिमे मिथिलाक गाम सभसँ संकलित लोकगीत — आलेख अनुसार लेखक अपन शोधकार्यक अवधिमे मिथिलाक गाम सभसँ गीतक संकलन करैत एहि भोजन-विन्यास सम्बन्धी गीत भेटलनि।

४३. (A) दही — आलेखमे उद्धृत गीत अनुसार 'शुक्र कहे मोहे दही सुहाई' — शुक्रवार के दिन दही सुहाइत अछि।
४४. (A) अदरख — आलेखमे उद्धृत गीत अनुसार 'शनिबार जे अदरख खाई/ कालौ काल कटति घर जाई' — शनिवार के दिन अदरख खएबासँ काल सेहो टरि जाइत अछि एहन भाव अछि।
४५. (A) साग — आलेखमे उद्धृत बारहमासा गीत अनुसार 'सावनक साग ने भादबक दही' — सावन मासमे साग खएबासँ बचबाक चाही।
४६. (A) चलब (चना/चरब) — आलेखमे उद्धृत गीत अनुसार 'जेठक चलब ने अषाढ़क बेल' — जेठ मासमे चलब आ अषाढ़मे बेल खएबासँ बचबाक चाही।
४७. (A) धनवन्तरि — आलेखमे उद्धृत गीतक अंतमे कहल गेल अछि 'कहे धनवनतरि अहि स बचे/ वैद्यराज काहे पुरिया रचे' — एहि नियमक पालन कएला उत्तर वैद्यराजकेँ दबाइक पुरिया रचबाक आवश्यकता नहि रहत।
४८. (A) फतुरी लाल — अकालकवित्तक रचनाकार मधुबनी जिलाक शाहपुर गामक जनमान्ध लोक कवि फतुरी लाल छथि, जे मिथिलाक भयानक अकालक विवरण अपन कवित्तमे केने छथि।
४९. (A) अब्राहम ग्रिएर्सन, १८८७ ईस्वीमे — अब्राहम ग्रिएर्सन सन् १८८७ ईस्वीमे फतुरी लालक अकालकवित्त हुनके मुहसँ सुनिकऽ लिखलनि।
५०. (A) घर १-३ — सूचकांक पंक्ति 2357मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “घर १-३” रूपमे देल अछि।
५१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५२. (C) लघु कथा/रेखाचित्र — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु कथा/रेखाचित्र” अछि।
५३. (D) “‘डेली शुरू होय ‘हमर बाबू एहन’...’ सँ आरम्भ घरेलू जीवनक व्यंग्यात्मक आ मार्मिक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “‘डेली शुरू होय ‘हमर बाबू एहन’...’ सँ आरम्भ घरेलू जीवनक व्यंग्यात्मक आ मार्मिक चित्रण” अछि।
५४. (A) “‘डेली शुरू होय ‘हमर बाबू एहन’...’ सँ आरम्भ घरेलू जीवनक व्यंग्यात्मक आ मार्मिक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘डेली शुरू होय ‘हमर बाबू एहन’...’ सँ आरम्भ घरेलू जीवनक व्यंग्यात्मक आ मार्मिक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
५५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा/रेखाचित्र — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५७. (D) ई पाठ लघु कथा/रेखाचित्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५९. (B) खण्ड 3666, सूचकांक पंक्ति 2357मे रवि भूषण पाठकक “घर १-३” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा/रेखाचित्र आ “‘डेली शुरू होय ‘हमर बाबू एहन’...’ सँ आरम्भ घरेलू जीवनक व्यंग्यात्मक आ मार्मिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६०. (A) औझका डायरी — सूचकांक पंक्ति 2358मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “औझका डायरी” रूपमे देल अछि।
६१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६२. (C) डायरी/आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “डायरी/आलेख” अछि।
६३. (D) साहित्य, आलोचना, भाषा आ समाजक समसामयिक प्रश्न पर विचार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य, आलोचना, भाषा आ समाजक समसामयिक प्रश्न पर विचार” अछि।
६४. (A) साहित्य, आलोचना, भाषा आ समाजक समसामयिक प्रश्न पर विचार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य, आलोचना, भाषा आ समाजक समसामयिक प्रश्न पर विचार” रूपमे देखाइत अछि।
६५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा डायरी/आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६७. (D) ई पाठ डायरी/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६९. (B) खण्ड 3667, सूचकांक पंक्ति 2358मे रवि भूषण पाठकक “औझका डायरी” प्रविष्टि गद्य, डायरी/आलेख आ “साहित्य, आलोचना, भाषा आ समाजक समसामयिक प्रश्न पर विचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-

प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७०. (A) विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ — सूचकांक पंक्ति 2359मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ” रूपमे देल अछि।

७१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७२. (C) आलोचना/निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना/निबन्ध” अछि।

७३. (D) विभा रानीक नाटक “भाग रौ” कें सामाजिक-राजनैतिक अर्थगर्भिता सँ जोड़ि क देखल गेल अछि — टिप्पणीक पहिल संकेत “विभा रानीक नाटक “भाग रौ” कें सामाजिक-राजनैतिक अर्थगर्भिता सँ जोड़ि क देखल गेल अछि” अछि।

७४. (A) विभा रानीक नाटक “भाग रौ” कें सामाजिक-राजनैतिक अर्थगर्भिता सँ जोड़ि क देखल गेल अछि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विभा रानीक नाटक “भाग रौ” कें सामाजिक-राजनैतिक अर्थगर्भिता सँ जोड़ि क देखल गेल अछि” रूपमे देखाइत अछि।

७५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७७. (D) ई पाठ आलोचना/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७९. (B) खण्ड 3668, सूचकांक पंक्ति 2359मे रवि भूषण पाठकक “विद्यापति, भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/निबन्ध आ “विभा रानीक नाटक “भाग रौ” कें सामाजिक-राजनैतिक अर्थगर्भिता सँ जोड़ि क देखल गेल अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८०. (A) झमेलिया बिआह — सूचकांक पंक्ति 2360मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “झमेलिया बिआह” रूपमे देल अछि।

८१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८२. (C) नाटक-आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक-आलोचना” अछि।

८३. (D) जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक रचना-शिल्प, पात्र-विधान आ सामाजिक परिवेशक समालोचनात्मक अध्ययन — टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक रचना-शिल्प, पात्र-विधान आ सामाजिक परिवेशक समालोचनात्मक अध्ययन” अछि।

८४. (A) जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक रचना-शिल्प, पात्र-विधान आ सामाजिक परिवेशक समालोचनात्मक अध्ययन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक रचना-शिल्प, पात्र-विधान आ सामाजिक परिवेशक समालोचनात्मक अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।

८५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा नाटक-आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८७. (D) ई पाठ नाटक-आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८९. (B) खण्ड 3669, सूचकांक पंक्ति 2360मे रवि भूषण पाठकक “झमेलिया बिआह” प्रविष्टि गद्य, नाटक-आलोचना आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक रचना-शिल्प, पात्र-विधान आ सामाजिक परिवेशक समालोचनात्मक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९०. (A) आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन — सूचकांक पंक्ति 2361मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन” रूपमे देल अछि।

९१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९२. (C) उपन्यास-आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास-आलोचना” अछि।

९३. (D) जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास “उत्थान-पतन” केर समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास “उत्थान-पतन” केर समीक्षा” अछि।

१४. (A) जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "उत्थान-पतन" केर समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "उत्थान-पतन" केर समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
१५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास-आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७. (D) ई पाठ उपन्यास-आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९. (B) खण्ड 3670, सूचकांक पंक्ति 2361मे रवि भूषण पाठकक “आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास-आलोचना आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "उत्थान-पतन" केर समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१००. (A) एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू — सूचकांक पंक्ति 2362मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू” रूपमे देल अछि।
१०१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०२. (C) आलेख/समालोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/समालोचना” अछि।
१०३. (D) उपेक्षित कवि बूच बाबू (शिव कुमार झा) केर व्यक्तित्व आ कृतित्वक मार्मिक मूल्यांकन — टिप्पणीक पहिल संकेत “उपेक्षित कवि बूच बाबू (शिव कुमार झा) केर व्यक्तित्व आ कृतित्वक मार्मिक मूल्यांकन” अछि।
१०४. (A) उपेक्षित कवि बूच बाबू (शिव कुमार झा) केर व्यक्तित्व आ कृतित्वक मार्मिक मूल्यांकन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपेक्षित कवि बूच बाबू (शिव कुमार झा) केर व्यक्तित्व आ कृतित्वक मार्मिक मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।
१०५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/समालोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०७. (D) ई पाठ आलेख/समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०९. (B) खण्ड 3671, सूचकांक पंक्ति 2362मे रवि भूषण पाठकक “एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू” प्रविष्टि गद्य, आलेख/समालोचना आ “उपेक्षित कवि बूच बाबू (शिव कुमार झा) केर व्यक्तित्व आ कृतित्वक मार्मिक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११०. (A) गामक जिनगीक समीक्षा — सूचकांक पंक्ति 2363मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “गामक जिनगीक समीक्षा” रूपमे देल अछि।
१११. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११२. (C) कथा-संग्रह समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा-संग्रह समीक्षा” अछि।
११३. (D) जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" केँ कथाकारक सजग सामाजिक प्रतिबद्धता आ प्रगतिशील यथार्थवादक दृष्टिसँ विवेचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" केँ कथाकारक सजग सामाजिक प्रतिबद्धता आ प्रगतिशील यथार्थवादक दृष्टिसँ विवेचना” अछि।
११४. (A) जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" केँ कथाकारक सजग सामाजिक प्रतिबद्धता आ प्रगतिशील यथार्थवादक दृष्टिसँ विवेचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह "गामक जिनगी" केँ कथाकारक सजग सामाजिक प्रतिबद्धता आ प्रगतिशील यथार्थवादक दृष्टिसँ विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।
११५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा कथा-संग्रह समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११७. (D) ई पाठ कथा-संग्रह समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११९. (B) खण्ड 3672, सूचकांक पंक्ति 2363मे रवि भूषण पाठकक “गामक जिनगीक समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, कथा-संग्रह समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह “गामक जिनगी” केँ कथाकारक सजग सामाजिक प्रतिबद्धता आ प्रगतिशील यथार्थवादक दृष्टिसँ विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२०. (A) निराला:देह विदेह (१-४) — सूचकांक पंक्ति 2364मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “निराला:देह विदेह (१-४)” रूपमे देल अछि।
१२१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२२. (C) अनुवाद — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद” अछि।
१२३. (D) हिन्दी कवि निरालाक चारिटा प्रतिनिधि कविता (“जूठि बान्ह नाव”, “स्नेह निर्झर...”, “रंगि गेल धरा...”, “छाड़ल कारी कारी बादर...”) केर मैथिली काव्यानुवाद — टिप्पणीक पहिल संकेत “हिन्दी कवि निरालाक चारिटा प्रतिनिधि कविता (“जूठि बान्ह नाव”, “स्नेह निर्झर...”, “रंगि गेल धरा...”, “छाड़ल कारी कारी बादर...”) केर मैथिली काव्यानुवाद” अछि।
१२४. (A) हिन्दी कवि निरालाक चारिटा प्रतिनिधि कविता (“जूठि बान्ह नाव”, “स्नेह निर्झर...”, “रंगि गेल धरा...”, “छाड़ल कारी कारी बादर...”) केर मैथिली काव्यानुवाद — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हिन्दी कवि निरालाक चारिटा प्रतिनिधि कविता (“जूठि बान्ह नाव”, “स्नेह निर्झर...”, “रंगि गेल धरा...”, “छाड़ल कारी कारी बादर...”) केर मैथिली काव्यानुवाद” रूपमे देखाइत अछि।
१२५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा अनुवाद — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२७. (D) ई पाठ अनुवादक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२९. (B) खण्ड 3673, सूचकांक पंक्ति 2364मे रवि भूषण पाठकक “निराला:देह विदेह (१-४)” प्रविष्टि पद्य, अनुवाद आ “हिन्दी कवि निरालाक चारिटा प्रतिनिधि कविता (“जूठि बान्ह नाव”, “स्नेह निर्झर...”, “रंगि गेल धरा...”, “छाड़ल कारी कारी बादर...”) केर मैथिली काव्यानुवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३०. (A) आचार्य भामहक चिंतन — सूचकांक पंक्ति 2365मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “आचार्य भामहक चिंतन” रूपमे देल अछि।
१३१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३२. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।
१३३. (D) संस्कृत काव्यशास्त्री भामहक “शब्दार्थ सहितौ काव्यम्” सिद्धान्तक व्याख्या — टिप्पणीक पहिल संकेत “संस्कृत काव्यशास्त्री भामहक “शब्दार्थ सहितौ काव्यम्” सिद्धान्तक व्याख्या” अछि।
१३४. (A) संस्कृत काव्यशास्त्री भामहक “शब्दार्थ सहितौ काव्यम्” सिद्धान्तक व्याख्या — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “संस्कृत काव्यशास्त्री भामहक “शब्दार्थ सहितौ काव्यम्” सिद्धान्तक व्याख्या” रूपमे देखाइत अछि।
१३५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३७. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३९. (B) खण्ड 3674, सूचकांक पंक्ति 2365मे रवि भूषण पाठकक “आचार्य भामहक चिंतन” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “संस्कृत काव्यशास्त्री भामहक “शब्दार्थ सहितौ काव्यम्” सिद्धान्तक व्याख्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४०. (A) दण्डी आ काव्यलक्षण — सूचकांक पंक्ति 2366मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “दण्डी आ काव्यलक्षण” रूपमे देल अछि।
१४१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४२. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

१४३. (D) आचार्य दण्डीक काव्यादर्श अनुसार "इष्टार्थयुक्त पदावली" काव्यत्वक लक्षणक विवेचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “आचार्य दण्डीक काव्यादर्श अनुसार "इष्टार्थयुक्त पदावली" काव्यत्वक लक्षणक विवेचना” अछि।
१४४. (A) आचार्य दण्डीक काव्यादर्श अनुसार "इष्टार्थयुक्त पदावली" काव्यत्वक लक्षणक विवेचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आचार्य दण्डीक काव्यादर्श अनुसार "इष्टार्थयुक्त पदावली" काव्यत्वक लक्षणक विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।
१४५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४७. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४९. (B) खण्ड 3675, सूचकांक पंक्ति 2366मे रवि भूषण पाठकक “दण्डी आ काव्यलक्षण” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “आचार्य दण्डीक काव्यादर्श अनुसार "इष्टार्थयुक्त पदावली" काव्यत्वक लक्षणक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५०. (A) लघुकथा- बोधिसत्व — सूचकांक पंक्ति 2367मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “लघुकथा- बोधिसत्व” रूपमे देल अछि।
१५१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५२. (C) लघु/दीर्घ कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु/दीर्घ कथा” अछि।
१५३. (D) एक युवक "भुद्ध झा" केर यात्रा-वृत्तान्तक माध्यमे मिथिलाक सामाजिक, जातीय आ मानसिक जटिलताक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “एक युवक "भुद्ध झा" केर यात्रा-वृत्तान्तक माध्यमे मिथिलाक सामाजिक, जातीय आ मानसिक जटिलताक चित्रण” अछि।
१५४. (A) एक युवक "भुद्ध झा" केर यात्रा-वृत्तान्तक माध्यमे मिथिलाक सामाजिक, जातीय आ मानसिक जटिलताक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक युवक "भुद्ध झा" केर यात्रा-वृत्तान्तक माध्यमे मिथिलाक सामाजिक, जातीय आ मानसिक जटिलताक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
१५५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु/दीर्घ कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५७. (D) ई पाठ लघु/दीर्घ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५९. (B) खण्ड 3676, सूचकांक पंक्ति 2367मे रवि भूषण पाठकक “लघुकथा- बोधिसत्व” प्रविष्टि गद्य, लघु/दीर्घ कथा आ “एक युवक "भुद्ध झा" केर यात्रा-वृत्तान्तक माध्यमे मिथिलाक सामाजिक, जातीय आ मानसिक जटिलताक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६०. (A) तीनटा बीहनि कथा — सूचकांक पंक्ति 2368मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “तीनटा बीहनि कथा” रूपमे देल अछि।
१६१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६२. (C) लघु कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु कथा” अछि।
१६३. (D) तीन टा लघु कथाक संग्रह जाहिमे जीवनक विडम्बना, अभाव आ पारिवारिक अन्तर्विरोधक मार्मिक चित्रण अछि। — टिप्पणीक पहिल संकेत “तीन टा लघु कथाक संग्रह जाहिमे जीवनक विडम्बना, अभाव आ पारिवारिक अन्तर्विरोधक मार्मिक चित्रण अछि।” अछि।
१६४. (A) तीन टा लघु कथाक संग्रह जाहिमे जीवनक विडम्बना, अभाव आ पारिवारिक अन्तर्विरोधक मार्मिक चित्रण अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तीन टा लघु कथाक संग्रह जाहिमे जीवनक विडम्बना, अभाव आ पारिवारिक अन्तर्विरोधक मार्मिक चित्रण अछि।” रूपमे देखाइत अछि।
१६५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६७. (D) ई पाठ लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६९. (B) खण्ड 3677, सूचकांक पंक्ति 2368मे रवि भूषण पाठकक “तीनटा बीहनि कथा” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा आ “तीन टा लघु कथाक संग्रह जाहिमे जीवनक विडम्बना, अभाव आ पारिवारिक अन्तर्विरोधक मार्मिक चित्रण अछि।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७०. (A) ओकर तोहर हमर सपना (दीर्घकथा) — सूचकांक पंक्ति 2369मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “ओकर तोहर हमर सपना (दीर्घकथा)” रूपमे देल अछि।
१७१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७२. (C) दीर्घ कथा/उपन्यासिका — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दीर्घ कथा/उपन्यासिका” अछि।
१७३. (D) “सूर्यकांत” पात्रक डायरीक माध्यमे मिथिलाक समाजिक-आर्थिक परिवर्तन, ब्राह्मण जजमानी प्रथा, बाल-विवाह, गामक अन्तर्कथा आ दम्पति जीवनक विस्तृत चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत ““सूर्यकांत” पात्रक डायरीक माध्यमे मिथिलाक समाजिक-आर्थिक परिवर्तन, ब्राह्मण जजमानी प्रथा, बाल-विवाह, गामक अन्तर्कथा आ दम्पति जीवनक विस्तृत चित्रण” अछि।
१७४. (A) “सूर्यकांत” पात्रक डायरीक माध्यमे मिथिलाक समाजिक-आर्थिक परिवर्तन, ब्राह्मण जजमानी प्रथा, बाल-विवाह, गामक अन्तर्कथा आ दम्पति जीवनक विस्तृत चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा ““सूर्यकांत” पात्रक डायरीक माध्यमे मिथिलाक समाजिक-आर्थिक परिवर्तन, ब्राह्मण जजमानी प्रथा, बाल-विवाह, गामक अन्तर्कथा आ दम्पति जीवनक विस्तृत चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
१७५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा दीर्घ कथा/उपन्यासिका — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७७. (D) ई पाठ दीर्घ कथा/उपन्यासिकाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७९. (B) खण्ड 3678, सूचकांक पंक्ति 2369मे रवि भूषण पाठकक “ओकर तोहर हमर सपना (दीर्घकथा)” प्रविष्टि गद्य, दीर्घ कथा/उपन्यासिका आ ““सूर्यकांत” पात्रक डायरीक माध्यमे मिथिलाक समाजिक-आर्थिक परिवर्तन, ब्राह्मण जजमानी प्रथा, बाल-विवाह, गामक अन्तर्कथा आ दम्पति जीवनक विस्तृत चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८०. (A) ओइ साल — सूचकांक पंक्ति 2370मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “ओइ साल” रूपमे देल अछि।
१८१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८२. (C) संस्मरण/लघु कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण/लघु कथा” अछि।
१८३. (D) एक विशेष वर्षक घटनाक्रमक स्मरण जाहिमे आलूक अधिकता, अकाल, बाढ़ि आ सामाजिक घटनाक रोचक चित्रण अछि — टिप्पणीक पहिल संकेत “एक विशेष वर्षक घटनाक्रमक स्मरण जाहिमे आलूक अधिकता, अकाल, बाढ़ि आ सामाजिक घटनाक रोचक चित्रण अछि” अछि।
१८४. (A) एक विशेष वर्षक घटनाक्रमक स्मरण जाहिमे आलूक अधिकता, अकाल, बाढ़ि आ सामाजिक घटनाक रोचक चित्रण अछि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक विशेष वर्षक घटनाक्रमक स्मरण जाहिमे आलूक अधिकता, अकाल, बाढ़ि आ सामाजिक घटनाक रोचक चित्रण अछि” रूपमे देखाइत अछि।
१८५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण/लघु कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८७. (D) ई पाठ संस्मरण/लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८९. (B) खण्ड 3679, सूचकांक पंक्ति 2370मे रवि भूषण पाठकक “ओइ साल” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण/लघु कथा आ “एक विशेष वर्षक घटनाक्रमक स्मरण जाहिमे आलूक अधिकता, अकाल, बाढ़ि आ सामाजिक घटनाक रोचक चित्रण अछि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१९०. (A) घर — सूचकांक पंक्ति 2371मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “घर” रूपमे देल अछि।

१९१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१९२. (C) रेखाचित्र — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रेखाचित्र” अछि।

१९३. (D) एक सामान्य मध्यवित्तीय घरक पारिवारिक अराजकता, सामूहिक प्रसन्नता, लड़ाई-झगड़ा, टी.वी. रिमोट लेल झगड़ा आ खर्चक प्राथमिकताक व्यंग्यात्मक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “एक सामान्य मध्यवित्तीय घरक पारिवारिक अराजकता, सामूहिक प्रसन्नता, लड़ाई-झगड़ा, टी.वी. रिमोट लेल झगड़ा आ खर्चक प्राथमिकताक व्यंग्यात्मक चित्रण” अछि।

१९४. (A) एक सामान्य मध्यवित्तीय घरक पारिवारिक अराजकता, सामूहिक प्रसन्नता, लड़ाई-झगड़ा, टी.वी. रिमोट लेल झगड़ा आ खर्चक प्राथमिकताक व्यंग्यात्मक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक सामान्य मध्यवित्तीय घरक पारिवारिक अराजकता, सामूहिक प्रसन्नता, लड़ाई-झगड़ा, टी.वी. रिमोट लेल झगड़ा आ खर्चक प्राथमिकताक व्यंग्यात्मक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

१९५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा रेखाचित्र — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१९७. (D) ई पाठ रेखाचित्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१९९. (B) खण्ड 3680, सूचकांक पंक्ति 2371मे रवि भूषण पाठकक “घर” प्रविष्टि गद्य, रेखाचित्र आ “एक सामान्य मध्यवित्तीय घरक पारिवारिक अराजकता, सामूहिक प्रसन्नता, लड़ाई-झगड़ा, टी.वी. रिमोट लेल झगड़ा आ खर्चक प्राथमिकताक व्यंग्यात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२००. (A) बाबूक चट्टी — सूचकांक पंक्ति 2372मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बाबूक चट्टी” रूपमे देल अछि।

२०१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२०२. (C) संस्मरणात्मक कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरणात्मक कथा” अछि।

२०३. (D) पिताक पुरान चप्पलक प्रतीकक माध्यमे पैतृक स्नेह, स्मृति आ पीढ़ीगत परिवर्तनक मार्मिक कथा — टिप्पणीक पहिल संकेत “पिताक पुरान चप्पलक प्रतीकक माध्यमे पैतृक स्नेह, स्मृति आ पीढ़ीगत परिवर्तनक मार्मिक कथा” अछि।

२०४. (A) पिताक पुरान चप्पलक प्रतीकक माध्यमे पैतृक स्नेह, स्मृति आ पीढ़ीगत परिवर्तनक मार्मिक कथा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पिताक पुरान चप्पलक प्रतीकक माध्यमे पैतृक स्नेह, स्मृति आ पीढ़ीगत परिवर्तनक मार्मिक कथा” रूपमे देखाइत अछि।

२०५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरणात्मक कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२०७. (D) ई पाठ संस्मरणात्मक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२०९. (B) खण्ड 3681, सूचकांक पंक्ति 2372मे रवि भूषण पाठकक “बाबूक चट्टी” प्रविष्टि गद्य, संस्मरणात्मक कथा आ “पिताक पुरान चप्पलक प्रतीकक माध्यमे पैतृक स्नेह, स्मृति आ पीढ़ीगत परिवर्तनक मार्मिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२१०. (A) दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय — सूचकांक पंक्ति 2373मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय” रूपमे देल अछि।

२११. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२१२. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

२१३. (D) कार्यालयीन राजनीति, अफसरशाही, सिंह-झामिश्र-नेबोलाल जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार, जातीय समीकरण आ “कालजयी” होइबाक लालसाक तीखा व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “कार्यालयीन राजनीति, अफसरशाही, सिंह-झामिश्र-नेबोलाल जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार, जातीय समीकरण आ “कालजयी” होइबाक लालसाक तीखा व्यंग्य।” अछि।

२१४. (A) कार्यालयीन राजनीति, अफसरशाही, सिंह-झा-मिश्र-नेबोलाल जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार, जातीय समीकरण आ "कालजयी" होइबाक लालसाक तीखा व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कार्यालयीन राजनीति, अफसरशाही, सिंह-झा-मिश्र-नेबोलाल जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार, जातीय समीकरण आ "कालजयी" होइबाक लालसाक तीखा व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।
२१५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१७. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१९. (B) खण्ड 3682, सूचकांक पंक्ति 2373मे रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “कार्यालयीन राजनीति, अफसरशाही, सिंह-झा-मिश्र-नेबोलाल जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार, जातीय समीकरण आ "कालजयी" होइबाक लालसाक तीखा व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२०. (A) लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस — सूचकांक पंक्ति 2374मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस” रूपमे देल अछि।
२२१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२२. (C) व्यंग्य/लघु कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/लघु कथा” अछि।
२२३. (D) “रंजन जी” पात्रक माध्यमे कार्यालयीन चापलूसी, घूसक तकनीक, जातीय समीकरण आ समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचारक तीखा व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत ““रंजन जी” पात्रक माध्यमे कार्यालयीन चापलूसी, घूसक तकनीक, जातीय समीकरण आ समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचारक तीखा व्यंग्य” अछि।
२२४. (A) “रंजन जी” पात्रक माध्यमे कार्यालयीन चापलूसी, घूसक तकनीक, जातीय समीकरण आ समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचारक तीखा व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा ““रंजन जी” पात्रक माध्यमे कार्यालयीन चापलूसी, घूसक तकनीक, जातीय समीकरण आ समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचारक तीखा व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
२२५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य/लघु कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२७. (D) ई पाठ व्यंग्य/लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२९. (B) खण्ड 3683, सूचकांक पंक्ति 2374मे रवि भूषण पाठकक “लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य/लघु कथा आ ““रंजन जी” पात्रक माध्यमे कार्यालयीन चापलूसी, घूसक तकनीक, जातीय समीकरण आ समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचारक तीखा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३०. (A) फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य) — सूचकांक पंक्ति 2375मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।
२३१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३२. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।
२३३. (D) राजनीतिक आ सामाजिक क्षेत्रमे व्यक्तिक प्रबन्धन आ षड्यन्त्रक कला पर केन्द्रित व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक आ सामाजिक क्षेत्रमे व्यक्तिक प्रबन्धन आ षड्यन्त्रक कला पर केन्द्रित व्यंग्य” अछि।
२३४. (A) राजनीतिक आ सामाजिक क्षेत्रमे व्यक्तिक प्रबन्धन आ षड्यन्त्रक कला पर केन्द्रित व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक आ सामाजिक क्षेत्रमे व्यक्तिक प्रबन्धन आ षड्यन्त्रक कला पर केन्द्रित व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
२३५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३७. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

२३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३९. (B) खण्ड 3684, सूचकांक पंक्ति 2375मे रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चिलनमा.. ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “राजनीतिक आ सामाजिक क्षेत्रमे व्यक्तिक प्रबन्धन आ षड्यन्त्रक कला पर केन्द्रित व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४०. (A) फसाद आ आनंद (लघु कथा) — सूचकांक पंक्ति 2376मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “फसाद आ आनंद (लघु कथा)” रूपमे देल अछि।
२४१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४२. (C) लघु कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु कथा” अछि।
२४३. (D) ग्रामीण जीवनमे होइबला मारपीट आ विवादक कथात्मक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवनमे होइबला मारपीट आ विवादक कथात्मक चित्रण” अछि।
२४४. (A) ग्रामीण जीवनमे होइबला मारपीट आ विवादक कथात्मक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवनमे होइबला मारपीट आ विवादक कथात्मक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
२४५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४७. (D) ई पाठ लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४९. (B) खण्ड 3685, सूचकांक पंक्ति 2376मे रवि भूषण पाठकक “फसाद आ आनंद (लघु कथा)” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा आ “ग्रामीण जीवनमे होइबला मारपीट आ विवादक कथात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२५०. (A) दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य) — सूचकांक पंक्ति 2377मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।
२५१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२५२. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।
२५३. (D) मधुबनी जिलाक कार्यालयीन राजनीति, गुटबाजी, सिंह-झा-मिश्र जेहन अधिकारीक कार्यशैली, आपसी दोस्ती-दुश्मनी, आ 'नेबोलाल' जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार आ नैतिक गिरावटक व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “मधुबनी जिलाक कार्यालयीन राजनीति, गुटबाजी, सिंह-झा-मिश्र जेहन अधिकारीक कार्यशैली, आपसी दोस्ती-दुश्मनी, आ 'नेबोलाल' जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार आ नैतिक गिरावटक व्यंग्य।” अछि।
२५४. (A) मधुबनी जिलाक कार्यालयीन राजनीति, गुटबाजी, सिंह-झा-मिश्र जेहन अधिकारीक कार्यशैली, आपसी दोस्ती-दुश्मनी, आ 'नेबोलाल' जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार आ नैतिक गिरावटक व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मधुबनी जिलाक कार्यालयीन राजनीति, गुटबाजी, सिंह-झा-मिश्र जेहन अधिकारीक कार्यशैली, आपसी दोस्ती-दुश्मनी, आ 'नेबोलाल' जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार आ नैतिक गिरावटक व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।
२५५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२५७. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२५९. (B) खण्ड 3686, सूचकांक पंक्ति 2377मे रवि भूषण पाठकक “दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “मधुबनी जिलाक कार्यालयीन राजनीति, गुटबाजी, सिंह-झा-मिश्र जेहन अधिकारीक कार्यशैली, आपसी दोस्ती-दुश्मनी, आ 'नेबोलाल' जेहन चरित्रक माध्यमे भ्रष्टाचार आ नैतिक गिरावटक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२६०. (A) नाटक ‘रिहर्सल’ — सूचकांक पंक्ति 2378मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “नाटक ‘रिहर्सल’” रूपमे देल अछि।

२६१. (B) गद्य/पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२६२. (C) नाटक — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक” अछि।

२६३. (D) मिथिलाक सांस्कृतिक संकट, जातीय समीकरण आ साहित्यिक राजनीतिकेँ ल' कऽ लिखल बहुअंकीय नाटक — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक सांस्कृतिक संकट, जातीय समीकरण आ साहित्यिक राजनीतिकेँ ल' कऽ लिखल बहुअंकीय नाटक” अछि।

२६४. (A) मिथिलाक सांस्कृतिक संकट, जातीय समीकरण आ साहित्यिक राजनीतिकेँ ल' कऽ लिखल बहुअंकीय नाटक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक सांस्कृतिक संकट, जातीय समीकरण आ साहित्यिक राजनीतिकेँ ल' कऽ लिखल बहुअंकीय नाटक” रूपमे देखाइत अछि।

२६५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य/पद्य, उप-विधा नाटक — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२६७. (D) ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य/पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२६९. (B) खण्ड 3687, सूचकांक पंक्ति 2378मे रवि भूषण पाठकक “नाटक ‘रिहर्सल’” प्रविष्टि गद्य/पद्य, नाटक आ “मिथिलाक सांस्कृतिक संकट, जातीय समीकरण आ साहित्यिक राजनीतिकेँ ल' कऽ लिखल बहुअंकीय नाटक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२७०. (A) टिल्लू जी (शिव कुमार झा) — सूचकांक पंक्ति 2379मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)” रूपमे देल अछि।

२७१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२७२. (C) पत्र/प्रशस्ति — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पत्र/प्रशस्ति” अछि।

२७३. (D) शिव कुमार झा (बूच भैया सुपुत्र) केर जन्मदिन पर मंगलकामनात्मक पत्र — टिप्पणीक पहिल संकेत “शिव कुमार झा (बूच भैया सुपुत्र) केर जन्मदिन पर मंगलकामनात्मक पत्र” अछि।

२७४. (A) शिव कुमार झा (बूच भैया सुपुत्र) केर जन्मदिन पर मंगलकामनात्मक पत्र — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शिव कुमार झा (बूच भैया सुपुत्र) केर जन्मदिन पर मंगलकामनात्मक पत्र” रूपमे देखाइत अछि।

२७५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा पत्र/प्रशस्ति — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२७७. (D) ई पाठ पत्र/प्रशस्तिक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२७९. (B) खण्ड 3688, सूचकांक पंक्ति 2379मे रवि भूषण पाठकक “टिल्लू जी (शिव कुमार झा)” प्रविष्टि गद्य, पत्र/प्रशस्ति आ “शिव कुमार झा (बूच भैया सुपुत्र) केर जन्मदिन पर मंगलकामनात्मक पत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२८०. (A) बाल कविता- 'क' — सूचकांक पंक्ति 2380मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बाल कविता- 'क'” रूपमे देल अछि।

२८१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२८२. (C) बाल कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

२८३. (D) वर्णमाला 'क' सँ आरम्भ भऽ 'ड' तकक अक्षरक माध्यमे सहज बाल-मनोरंजन — टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्णमाला 'क' सँ आरम्भ भऽ 'ड' तकक अक्षरक माध्यमे सहज बाल-मनोरंजन” अछि।

२८४. (A) वर्णमाला 'क' सँ आरम्भ भऽ 'ड' तकक अक्षरक माध्यमे सहज बाल-मनोरंजन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्णमाला 'क' सँ आरम्भ भऽ 'ड' तकक अक्षरक माध्यमे सहज बाल-मनोरंजन” रूपमे देखाइत अछि।

२८५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२८७. (D) ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२८९. (B) खण्ड 3689, सूचकांक पंक्ति 2380मे रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- 'क'” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “वर्णमाला 'क' सँ आरम्भ भऽ 'ड' तकक अक्षरक माध्यमे सहज बाल-मनोरंजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२९०. (A) बाल कविता- मानसून — सूचकांक पंक्ति 2381मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बाल कविता- मानसून” रूपमे देल अछि।
२९१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२९२. (C) बाल कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।
२९३. (D) मानसूनक पवन, हिमालय, अण्डमान, एलनीनो जेहन जटिल भूगोलीय अवधारणाक बाल-सुलभ भाषामे अभिव्यक्ति — टिप्पणीक पहिल संकेत “मानसूनक पवन, हिमालय, अण्डमान, एलनीनो जेहन जटिल भूगोलीय अवधारणाक बाल-सुलभ भाषामे अभिव्यक्ति” अछि।
२९४. (A) मानसूनक पवन, हिमालय, अण्डमान, एलनीनो जेहन जटिल भूगोलीय अवधारणाक बाल-सुलभ भाषामे अभिव्यक्ति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानसूनक पवन, हिमालय, अण्डमान, एलनीनो जेहन जटिल भूगोलीय अवधारणाक बाल-सुलभ भाषामे अभिव्यक्ति” रूपमे देखाइत अछि।
२९५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२९७. (D) ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२९९. (B) खण्ड 3690, सूचकांक पंक्ति 2381मे रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- मानसून” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “मानसूनक पवन, हिमालय, अण्डमान, एलनीनो जेहन जटिल भूगोलीय अवधारणाक बाल-सुलभ भाषामे अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३००. (A) बाल कविता- सुन वौआ सुन — सूचकांक पंक्ति 2382मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बाल कविता- सुन वौआ सुन” रूपमे देल अछि।
३०१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३०२. (C) बाल कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।
३०३. (D) “ऊ एगुन” के सङ्केतात्मक ध्वनिक माध्यमे बस यात्रा, खेल आ पाठक संग संवाद शैलीक बाल-गीत। — टिप्पणीक पहिल संकेत ““ऊ एगुन” के सङ्केतात्मक ध्वनिक माध्यमे बस यात्रा, खेल आ पाठक संग संवाद शैलीक बाल-गीत।” अछि।
३०४. (A) “ऊ एगुन” के सङ्केतात्मक ध्वनिक माध्यमे बस यात्रा, खेल आ पाठक संग संवाद शैलीक बाल-गीत। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा ““ऊ एगुन” के सङ्केतात्मक ध्वनिक माध्यमे बस यात्रा, खेल आ पाठक संग संवाद शैलीक बाल-गीत।” रूपमे देखाइत अछि।
३०५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३०७. (D) ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३०९. (B) खण्ड 3691, सूचकांक पंक्ति 2382मे रवि भूषण पाठकक “बाल कविता- सुन वौआ सुन” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ ““ऊ एगुन” के सङ्केतात्मक ध्वनिक माध्यमे बस यात्रा, खेल आ पाठक संग संवाद शैलीक बाल-गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३१०. (A) बाल कविता- ब्लेक होल — सूचकांक पंक्ति 2383मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बाल कविता- ब्लेक होल” रूपमे देल अछि।
३११. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३१२. (C) बाल कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

३१३. (D) खगोलीय वस्तु "ब्लेक होल" के केन्द्रमे राखि लिखल ज्ञानवर्धक बाल कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत "खगोलीय वस्तु "ब्लेक होल" के केन्द्रमे राखि लिखल ज्ञानवर्धक बाल कविता" अछि।
३१४. (A) खगोलीय वस्तु "ब्लेक होल" के केन्द्रमे राखि लिखल ज्ञानवर्धक बाल कविता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "खगोलीय वस्तु "ब्लेक होल" के केन्द्रमे राखि लिखल ज्ञानवर्धक बाल कविता" रूपमे देखाइत अछि।
३१५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३१७. (D) ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३१९. (B) खण्ड 3692, सूचकांक पंक्ति 2383मे रवि भूषण पाठकक "बाल कविता- ब्लेक होल" प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ "खगोलीय वस्तु "ब्लेक होल" के केन्द्रमे राखि लिखल ज्ञानवर्धक बाल कविता" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३२०. (A) श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे — सूचकांक पंक्ति 2384मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि "श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे" रूपमे देल अछि।
३२१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३२२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।
३२३. (D) एक साहित्यिक व्यक्तित्वक सम्मानमे लिखल कविता जे हुनकर दमदार व्यक्तित्व आ संघर्षक गाथा गबैत अछि। — टिप्पणीक पहिल संकेत "एक साहित्यिक व्यक्तित्वक सम्मानमे लिखल कविता जे हुनकर दमदार व्यक्तित्व आ संघर्षक गाथा गबैत अछि।" अछि।
३२४. (A) एक साहित्यिक व्यक्तित्वक सम्मानमे लिखल कविता जे हुनकर दमदार व्यक्तित्व आ संघर्षक गाथा गबैत अछि। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "एक साहित्यिक व्यक्तित्वक सम्मानमे लिखल कविता जे हुनकर दमदार व्यक्तित्व आ संघर्षक गाथा गबैत अछि।" रूपमे देखाइत अछि।
३२५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३२७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३२९. (B) खण्ड 3693, सूचकांक पंक्ति 2384मे रवि भूषण पाठकक "श्री लक्ष्मी चौधरी, करियनक सम्मान मे" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "एक साहित्यिक व्यक्तित्वक सम्मानमे लिखल कविता जे हुनकर दमदार व्यक्तित्व आ संघर्षक गाथा गबैत अछि।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३३०. (A) हजार-लाख मे — सूचकांक पंक्ति 2385मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि "हजार-लाख मे" रूपमे देल अछि।
३३१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३३२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।
३३३. (D) समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक कोटेदारी, अन्नक कालाबाजारी आ गरीबक विस्थापनक यथार्थ पर तीखा कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत "समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक कोटेदारी, अन्नक कालाबाजारी आ गरीबक विस्थापनक यथार्थ पर तीखा कविता" अछि।
३३४. (A) समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक कोटेदारी, अन्नक कालाबाजारी आ गरीबक विस्थापनक यथार्थ पर तीखा कविता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक कोटेदारी, अन्नक कालाबाजारी आ गरीबक विस्थापनक यथार्थ पर तीखा कविता" रूपमे देखाइत अछि।
३३५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३३७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३३९. (B) खण्ड 3694, सूचकांक पंक्ति 2385मे रवि भूषण पाठकक “हजार-लाख मे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक कोटेदारी, अन्नक कालाबाजारी आ गरीबक विस्थापनक यथार्थ पर तीखा कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३४०. (A) डहकन — सूचकांक पंक्ति 2386मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “डहकन” रूपमे देल अछि।
३४१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३४२. (C) डहकन (लोकगीति शैली) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “डहकन (लोकगीति शैली)” अछि।
३४३. (D) पारम्परिक डहकन शैलीमे तीखा व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “पारम्परिक डहकन शैलीमे तीखा व्यंग्य” अछि।
३४४. (A) पारम्परिक डहकन शैलीमे तीखा व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारम्परिक डहकन शैलीमे तीखा व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
३४५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा डहकन (लोकगीति शैली) — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३४७. (D) ई पाठ डहकन (लोकगीति शैली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३४९. (B) खण्ड 3695, सूचकांक पंक्ति 2386मे रवि भूषण पाठकक “डहकन” प्रविष्टि पद्य, डहकन (लोकगीति शैली) आ “पारम्परिक डहकन शैलीमे तीखा व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३५०. (A) खट्टा चूक्क — सूचकांक पंक्ति 2387मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “खट्टा चूक्क” रूपमे देल अछि।
३५१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३५२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
३५३. (D) ईर्ष्या आ द्वेषक मनोवृत्तिक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “ईर्ष्या आ द्वेषक मनोवृत्तिक चित्रण” अछि।
३५४. (A) ईर्ष्या आ द्वेषक मनोवृत्तिक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ईर्ष्या आ द्वेषक मनोवृत्तिक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
३५५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३५७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३५९. (B) खण्ड 3696, सूचकांक पंक्ति 2387मे रवि भूषण पाठकक “खट्टा चूक्क” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ईर्ष्या आ द्वेषक मनोवृत्तिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३६०. (A) हरियर — सूचकांक पंक्ति 2388मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “हरियर” रूपमे देल अछि।
३६१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३६२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
३६३. (D) रंगसभक राजनीति आ सामाजिक अर्थक विवेचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगसभक राजनीति आ सामाजिक अर्थक विवेचना” अछि।
३६४. (A) रंगसभक राजनीति आ सामाजिक अर्थक विवेचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगसभक राजनीति आ सामाजिक अर्थक विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

३६५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३६७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३६९. (B) खण्ड 3697, सूचकांक पंक्ति 2388मे रवि भूषण पाठकक “हरियर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रंगसभक राजनीति आ सामाजिक अर्थक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३७०. (A) बहुत किछु विदा भ' गेल रहै — सूचकांक पंक्ति 2389मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै” रूपमे देल अछि।
३७१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३७२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
३७३. (D) आधुनिकता आ विस्थापनक दंश झेलैत मैथिली अस्मिता, लोकाचार आ पारम्परिक जीवनक विलोपक मार्मिक कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिकता आ विस्थापनक दंश झेलैत मैथिली अस्मिता, लोकाचार आ पारम्परिक जीवनक विलोपक मार्मिक कविता” अछि।
३७४. (A) आधुनिकता आ विस्थापनक दंश झेलैत मैथिली अस्मिता, लोकाचार आ पारम्परिक जीवनक विलोपक मार्मिक कविता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिकता आ विस्थापनक दंश झेलैत मैथिली अस्मिता, लोकाचार आ पारम्परिक जीवनक विलोपक मार्मिक कविता” रूपमे देखाइत अछि।
३७५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३७७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३७९. (B) खण्ड 3698, सूचकांक पंक्ति 2389मे रवि भूषण पाठकक “बहुत किछु विदा भ' गेल रहै” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आधुनिकता आ विस्थापनक दंश झेलैत मैथिली अस्मिता, लोकाचार आ पारम्परिक जीवनक विलोपक मार्मिक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३८०. (A) व्यर्थ प्रलापी — सूचकांक पंक्ति 2390मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “व्यर्थ प्रलापी” रूपमे देल अछि।
३८१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३८२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
३८३. (D) साहित्य जगतक षड्यन्त्रकारी प्रवृत्तिक चित्रित करैत कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य जगतक षड्यन्त्रकारी प्रवृत्तिक चित्रित करैत कविता” अछि।
३८४. (A) साहित्य जगतक षड्यन्त्रकारी प्रवृत्तिक चित्रित करैत कविता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य जगतक षड्यन्त्रकारी प्रवृत्तिक चित्रित करैत कविता” रूपमे देखाइत अछि।
३८५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३८७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३८९. (B) खण्ड 3699, सूचकांक पंक्ति 2390मे रवि भूषण पाठकक “व्यर्थ प्रलापी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य जगतक षड्यन्त्रकारी प्रवृत्तिक चित्रित करैत कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३९०. (A) झाबाद — सूचकांक पंक्ति 2391मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “झाबाद” रूपमे देल अछि।
३९१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३९२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
३९३. (D) विभिन्न समाजवादी राजनैतिक चेहराक जय-जयकारक बीच मिथिलाक अस्मिताक उद्घोष — टिप्पणीक पहिल संकेत “विभिन्न समाजवादी राजनैतिक चेहराक जय-जयकारक बीच मिथिलाक अस्मिताक उद्घोष” अछि।
३९४. (A) विभिन्न समाजवादी राजनैतिक चेहराक जय-जयकारक बीच मिथिलाक अस्मिताक उद्घोष — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विभिन्न समाजवादी राजनैतिक चेहराक जय-जयकारक बीच मिथिलाक अस्मिताक उद्घोष” रूपमे देखाइत अछि।
३९५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३९७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३९९. (B) खण्ड 3700, सूचकांक पंक्ति 2391मे रवि भूषण पाठकक “झाबाद” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विभिन्न समाजवादी राजनैतिक चेहराक जय-जयकारक बीच मिथिलाक अस्मिताक उद्घोष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४००. (A) तीनटा कविता — सूचकांक पंक्ति 2392मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “तीनटा कविता” रूपमे देल अछि।
४०१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४०२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
४०३. (D) “समै भाग रहलै सत्य” आ “बूरहाक कान” जेहन विषय पर लिखल तीनटा कविताक संग्रह — टिप्पणीक पहिल संकेत ““समै भाग रहलै सत्य” आ “बूरहाक कान” जेहन विषय पर लिखल तीनटा कविताक संग्रह” अछि।
४०४. (A) “समै भाग रहलै सत्य” आ “बूरहाक कान” जेहन विषय पर लिखल तीनटा कविताक संग्रह — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा ““समै भाग रहलै सत्य” आ “बूरहाक कान” जेहन विषय पर लिखल तीनटा कविताक संग्रह” रूपमे देखाइत अछि।
४०५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४०७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४०९. (B) खण्ड 3701, सूचकांक पंक्ति 2392मे रवि भूषण पाठकक “तीनटा कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ ““समै भाग रहलै सत्य” आ “बूरहाक कान” जेहन विषय पर लिखल तीनटा कविताक संग्रह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४१०. (A) फसली पद्य १-७ — सूचकांक पंक्ति 2393मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “फसली पद्य १-७” रूपमे देल अछि।
४११. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४१२. (C) कविता (शृंखला) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता (शृंखला)” अछि।
४१३. (D) “मकइ जिन्दाबाद”, “खेसारी नवहतन”, “भगिान मरूआ आ मिथिला”, “अरूआ कऽ सप्पत”, “महिक्का धान”, “कविता आ धान”, “कनियाँ आ कविता” — मिथिलाक खेती, अनाज आ ओकर सामाजिक-आर्थिक पक्ष पर लिखल सात कविताक शृंखला। — टिप्पणीक पहिल संकेत ““मकइ जिन्दाबाद”, “खेसारी नवहतन”, “भगिान मरूआ आ मिथिला”, “अरूआ कऽ सप्पत”, “महिक्का धान”, “कविता आ धान”, “कनियाँ आ कविता” — मिथिलाक खेती, अनाज आ ओकर सामाजिक-आर्थिक पक्ष पर लिखल सात कविताक शृंखला।” अछि।
४१४. (A) “मकइ जिन्दाबाद”, “खेसारी नवहतन”, “भगिान मरूआ आ मिथिला”, “अरूआ कऽ सप्पत”, “महिक्का धान”, “कविता आ धान”, “कनियाँ आ कविता” — मिथिलाक खेती, अनाज आ ओकर सामाजिक-आर्थिक पक्ष पर लिखल सात कविताक शृंखला। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे

प्रमुख अर्थ-दिशा “‘मकड़ जिन्दाबाद”, “खेसारी नवहतन”, “भगिान मरुआ आ मिथिला”, “अरुआ कऽ सप्पत”, “महिक्का धान”, “कविता आ धान”, “कनियाँ आ कविता” — मिथिलाक खेती, अनाज आ ओकर सामाजिक-आर्थिक पक्ष पर लिखल सात कविताक शृंखला।” रूपमे देखाइत अछि।

४१५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता (शृंखला) — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४१७. (D) ई पाठ कविता (शृंखला)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४१९. (B) खण्ड 3702, सूचकांक पंक्ति 2393मे रवि भूषण पाठकक “फसली पद्य १-७” प्रविष्टि पद्य, कविता (शृंखला) आ “‘मकड़ जिन्दाबाद”, “खेसारी नवहतन”, “भगिान मरुआ आ मिथिला”, “अरुआ कऽ सप्पत”, “महिक्का धान”, “कविता आ धान”, “कनियाँ आ कविता” — मिथिलाक खेती, अनाज आ ओकर सामाजिक-आर्थिक पक्ष पर लिखल सात कविताक शृंखला।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४२०. (A) एहि बेर छठि मे — सूचकांक पंक्ति 2394मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “एहि बेर छठि मे” रूपमे देल अछि।

४२१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४२२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

४२३. (D) छठ पर्वक बदलैत स्वरूप आ सामाजिक विडम्बनाक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “छठ पर्वक बदलैत स्वरूप आ सामाजिक विडम्बनाक चित्रण” अछि।

४२४. (A) छठ पर्वक बदलैत स्वरूप आ सामाजिक विडम्बनाक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “छठ पर्वक बदलैत स्वरूप आ सामाजिक विडम्बनाक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

४२५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४२७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४२९. (B) खण्ड 3703, सूचकांक पंक्ति 2394मे रवि भूषण पाठकक “एहि बेर छठि मे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “छठ पर्वक बदलैत स्वरूप आ सामाजिक विडम्बनाक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४३०. (A) हमर मैथिली — सूचकांक पंक्ति 2395मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “हमर मैथिली” रूपमे देल अछि।

४३१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४३२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

४३३. (D) मैथिली भाषा आ संस्कृतिक पहचानक गौरवगाथा — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली भाषा आ संस्कृतिक पहचानक गौरवगाथा” अछि।

४३४. (A) मैथिली भाषा आ संस्कृतिक पहचानक गौरवगाथा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली भाषा आ संस्कृतिक पहचानक गौरवगाथा” रूपमे देखाइत अछि।

४३५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४३७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४३९. (B) खण्ड 3704, सूचकांक पंक्ति 2395मे रवि भूषण पाठकक “हमर मैथिली” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मैथिली भाषा आ संस्कृतिक पहचानक गौरवगाथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

अछि।

४४०. (A) होली — सूचकांक पंक्ति 2396मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “होली” रूपमे देल अछि।

४४१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४४२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

४४३. (D) उमर-क्रम आ साहित्यिक पुरस्कारक उपलब्धिक द्वन्द्व पर आधारित व्यंग्यात्मक कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत “उमर-क्रम आ साहित्यिक पुरस्कारक उपलब्धिक द्वन्द्व पर आधारित व्यंग्यात्मक कविता” अछि।

४४४. (A) उमर-क्रम आ साहित्यिक पुरस्कारक उपलब्धिक द्वन्द्व पर आधारित व्यंग्यात्मक कविता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उमर-क्रम आ साहित्यिक पुरस्कारक उपलब्धिक द्वन्द्व पर आधारित व्यंग्यात्मक कविता” रूपमे देखाइत अछि।

४४५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४४७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४४९. (B) खण्ड 3705, सूचकांक पंक्ति 2396मे रवि भूषण पाठकक “होली” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “उमर-क्रम आ साहित्यिक पुरस्कारक उपलब्धिक द्वन्द्व पर आधारित व्यंग्यात्मक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४५०. (A) ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा) — सूचकांक पंक्ति 2397मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)” रूपमे देल अछि।

४५१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४५२. (C) कविता (व्यंग्य) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता (व्यंग्य)” अछि।

४५३. (D) हिन्दीक तथाकथित नामी आलोचक सभक गपौड़ी, उधरण-प्रदर्शन, आ मूल लेखनसँ दूरीक व्यंग्यात्मक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “हिन्दीक तथाकथित नामी आलोचक सभक गपौड़ी, उधरण-प्रदर्शन, आ मूल लेखनसँ दूरीक व्यंग्यात्मक चित्रण” अछि।

४५४. (A) हिन्दीक तथाकथित नामी आलोचक सभक गपौड़ी, उधरण-प्रदर्शन, आ मूल लेखनसँ दूरीक व्यंग्यात्मक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “हिन्दीक तथाकथित नामी आलोचक सभक गपौड़ी, उधरण-प्रदर्शन, आ मूल लेखनसँ दूरीक व्यंग्यात्मक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

४५५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता (व्यंग्य) — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४५७. (D) ई पाठ कविता (व्यंग्य)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४५९. (B) खण्ड 3706, सूचकांक पंक्ति 2397मे रवि भूषण पाठकक “ई नामवरबा (हिन्दी आलोचकक व्यथा)” प्रविष्टि पद्य, कविता (व्यंग्य) आ “हिन्दीक तथाकथित नामी आलोचक सभक गपौड़ी, उधरण-प्रदर्शन, आ मूल लेखनसँ दूरीक व्यंग्यात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४६०. (A) मरणोपरांत-१-४ — सूचकांक पंक्ति 2398मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “मरणोपरांत-१-४” रूपमे देल अछि।

४६१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४६२. (C) कविता (शृंखला) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता (शृंखला)” अछि।

४६३. (D) मृत्यु आ ओकर बादक संस्कार, सामाजिक मूल्यांकन, विसंगति आ पारिवारिक राजनीतिकेँ केन्द्रमे राखि लिखल चारि कविताक शृंखला — टिप्पणीक पहिल संकेत “मृत्यु आ ओकर बादक संस्कार, सामाजिक मूल्यांकन, विसंगति आ पारिवारिक राजनीतिकेँ केन्द्रमे राखि लिखल चारि कविताक शृंखला” अछि।

४६४. (A) मृत्यु आ ओकर बादक संस्कार, सामाजिक मूल्यांकन, विसंगति आ पारिवारिक राजनीतिकें केन्द्रमे राखि लिखल चारि कविताक शृंखला — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मृत्यु आ ओकर बादक संस्कार, सामाजिक मूल्यांकन, विसंगति आ पारिवारिक राजनीतिकें केन्द्रमे राखि लिखल चारि कविताक शृंखला” रूपमे देखाइत अछि।
४६५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता (शृंखला) — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४६७. (D) ई पाठ कविता (शृंखला)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४६९. (B) खण्ड 3707, सूचकांक पंक्ति 2398मे रवि भूषण पाठकक “मरणोपरांत-१-४” प्रविष्टि पद्य, कविता (शृंखला) आ “मृत्यु आ ओकर बादक संस्कार, सामाजिक मूल्यांकन, विसंगति आ पारिवारिक राजनीतिकें केन्द्रमे राखि लिखल चारि कविताक शृंखला” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४७०. (A) बर्फ भोर — सूचकांक पंक्ति 2399मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बर्फ भोर” रूपमे देल अछि।
४७१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४७२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
४७३. (D) अत्यधिक जाड़क भोरक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “अत्यधिक जाड़क भोरक चित्रण” अछि।
४७४. (A) अत्यधिक जाड़क भोरक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अत्यधिक जाड़क भोरक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
४७५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४७७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४७९. (B) खण्ड 3708, सूचकांक पंक्ति 2399मे रवि भूषण पाठकक “बर्फ भोर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अत्यधिक जाड़क भोरक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४८०. (A) देश आ गेयर — सूचकांक पंक्ति 2400मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “देश आ गेयर” रूपमे देल अछि।
४८१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४८२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
४८३. (D) बदलैत सामाजिक गतिकी, स्वार्थकेन्द्रित राजनीति आ देशक गेयर बदलबाक आवश्यकताक काव्यात्मक अभिव्यक्ति — टिप्पणीक पहिल संकेत “बदलैत सामाजिक गतिकी, स्वार्थकेन्द्रित राजनीति आ देशक गेयर बदलबाक आवश्यकताक काव्यात्मक अभिव्यक्ति” अछि।
४८४. (A) बदलैत सामाजिक गतिकी, स्वार्थकेन्द्रित राजनीति आ देशक गेयर बदलबाक आवश्यकताक काव्यात्मक अभिव्यक्ति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बदलैत सामाजिक गतिकी, स्वार्थकेन्द्रित राजनीति आ देशक गेयर बदलबाक आवश्यकताक काव्यात्मक अभिव्यक्ति” रूपमे देखाइत अछि।
४८५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४८७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४८९. (B) खण्ड 3709, सूचकांक पंक्ति 2400मे रवि भूषण पाठकक “देश आ गेयर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बदलैत सामाजिक गतिकी, स्वार्थकेन्द्रित राजनीति आ देशक गेयर बदलबाक आवश्यकताक काव्यात्मक अभिव्यक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४९०. (A) पाँच केबी — सूचकांक पंक्ति 2401मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “पाँच केबी” रूपमे देल अछि।
४९१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४९२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
४९३. (D) इन्टरनेटक मन्द गतिमे फोटो खुजलाक दृश्यात्मक अनुभव — टिप्पणीक पहिल संकेत “इन्टरनेटक मन्द गतिमे फोटो खुजलाक दृश्यात्मक अनुभव” अछि।
४९४. (A) इन्टरनेटक मन्द गतिमे फोटो खुजलाक दृश्यात्मक अनुभव — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “इन्टरनेटक मन्द गतिमे फोटो खुजलाक दृश्यात्मक अनुभव” रूपमे देखाइत अछि।
४९५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४९७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४९९. (B) खण्ड 3710, सूचकांक पंक्ति 2401मे रवि भूषण पाठकक “पाँच केबी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “इन्टरनेटक मन्द गतिमे फोटो खुजलाक दृश्यात्मक अनुभव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५००. (A) दोस महिम — सूचकांक पंक्ति 2402मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “दोस महिम” रूपमे देल अछि।
५०१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५०२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५०३. (D) “दोस” नामक पात्रक माध्यमे लोक-व्यवहार, मित्रताक छल-छद्म, आ सामाजिक जानकारीक सूक्ष्म दुरुपयोगक व्यंग्यात्मक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत ““दोस” नामक पात्रक माध्यमे लोक-व्यवहार, मित्रताक छल-छद्म, आ सामाजिक जानकारीक सूक्ष्म दुरुपयोगक व्यंग्यात्मक चित्रण” अछि।
५०४. (A) “दोस” नामक पात्रक माध्यमे लोक-व्यवहार, मित्रताक छल-छद्म, आ सामाजिक जानकारीक सूक्ष्म दुरुपयोगक व्यंग्यात्मक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा ““दोस” नामक पात्रक माध्यमे लोक-व्यवहार, मित्रताक छल-छद्म, आ सामाजिक जानकारीक सूक्ष्म दुरुपयोगक व्यंग्यात्मक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
५०५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५०७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५०९. (B) खण्ड 3711, सूचकांक पंक्ति 2402मे रवि भूषण पाठकक “दोस महिम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ ““दोस” नामक पात्रक माध्यमे लोक-व्यवहार, मित्रताक छल-छद्म, आ सामाजिक जानकारीक सूक्ष्म दुरुपयोगक व्यंग्यात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५१०. (A) गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत — सूचकांक पंक्ति 2403मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत” रूपमे देल अछि।
५११. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५१२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५१३. (D) एक फरेबी ठग जे गीत-श्लोकक माध्यमे लोककेँ ठगैत छल, ओकर चरित्र चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “एक फरेबी ठग जे गीत-श्लोकक माध्यमे लोककेँ ठगैत छल, ओकर चरित्र चित्रण” अछि।
५१४. (A) एक फरेबी ठग जे गीत-श्लोकक माध्यमे लोककेँ ठगैत छल, ओकर चरित्र चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक फरेबी ठग जे गीत-श्लोकक माध्यमे लोककेँ ठगैत छल, ओकर चरित्र चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।

५१५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५१७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५१९. (B) खण्ड 3712, सूचकांक पंक्ति 2403मे रवि भूषण पाठकक “गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक फरेबी ठग जे गीत-श्लोकक माध्यमे लोककेँ ठगैत छल, ओकर चरित्र चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५२०. (A) मनोज भाय क चिट्ठी — सूचकांक पंक्ति 2404मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “मनोज भाय क चिट्ठी” रूपमे देल अछि।
५२१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५२२. (C) कविता/पत्र — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता/पत्र” अछि।
५२३. (D) प्रवासी मनोज भाय प्रति लिखल एक काव्यात्मक पत्र — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी मनोज भाय प्रति लिखल एक काव्यात्मक पत्र” अछि।
५२४. (A) प्रवासी मनोज भाय प्रति लिखल एक काव्यात्मक पत्र — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी मनोज भाय प्रति लिखल एक काव्यात्मक पत्र” रूपमे देखाइत अछि।
५२५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता/पत्र — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५२७. (D) ई पाठ कविता/पत्रक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५२९. (B) खण्ड 3713, सूचकांक पंक्ति 2404मे रवि भूषण पाठकक “मनोज भाय क चिट्ठी” प्रविष्टि पद्य, कविता/पत्र आ “प्रवासी मनोज भाय प्रति लिखल एक काव्यात्मक पत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५३०. (A) बियाह आ मौछ — सूचकांक पंक्ति 2405मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बियाह आ मौछ” रूपमे देल अछि।
५३१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५३२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५३३. (D) विवाहक बहाने सामाजिक दिखावा, पारिवारिक दबाव, आ व्यक्तिगत मनोदशाक हल्का-फुल्का व्यंग्यात्मक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “विवाहक बहाने सामाजिक दिखावा, पारिवारिक दबाव, आ व्यक्तिगत मनोदशाक हल्का-फुल्का व्यंग्यात्मक चित्रण” अछि।
५३४. (A) विवाहक बहाने सामाजिक दिखावा, पारिवारिक दबाव, आ व्यक्तिगत मनोदशाक हल्का-फुल्का व्यंग्यात्मक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विवाहक बहाने सामाजिक दिखावा, पारिवारिक दबाव, आ व्यक्तिगत मनोदशाक हल्का-फुल्का व्यंग्यात्मक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
५३५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५३७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५३९. (B) खण्ड 3714, सूचकांक पंक्ति 2405मे रवि भूषण पाठकक “बियाह आ मौछ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विवाहक बहाने सामाजिक दिखावा, पारिवारिक दबाव, आ व्यक्तिगत मनोदशाक हल्का-फुल्का व्यंग्यात्मक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५४०. (A) प्लेटो आ हमर कनिया — सूचकांक पंक्ति 2406मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “प्लेटो आ हमर कनिया” रूपमे देल अछि।

५४१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५४२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

५४३. (D) दार्शनिक प्लेटोक “योग्य शिष्य” आ स्त्रीक घरेलू दायित्वक बीचक साम्यक व्यंजनापूर्ण कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत “दार्शनिक प्लेटोक “योग्य शिष्य” आ स्त्रीक घरेलू दायित्वक बीचक साम्यक व्यंजनापूर्ण कविता” अछि।

५४४. (A) दार्शनिक प्लेटोक “योग्य शिष्य” आ स्त्रीक घरेलू दायित्वक बीचक साम्यक व्यंजनापूर्ण कविता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दार्शनिक प्लेटोक “योग्य शिष्य” आ स्त्रीक घरेलू दायित्वक बीचक साम्यक व्यंजनापूर्ण कविता” रूपमे देखाइत अछि।

५४५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५४७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५४९. (B) खण्ड 3715, सूचकांक पंक्ति 2406मे रवि भूषण पाठकक “प्लेटो आ हमर कनिया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दार्शनिक प्लेटोक “योग्य शिष्य” आ स्त्रीक घरेलू दायित्वक बीचक साम्यक व्यंजनापूर्ण कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५५०. (A) टिप्स फ्राम खट्टरकका — सूचकांक पंक्ति 2407मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “टिप्स फ्राम खट्टरकका” रूपमे देल अछि।

५५१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५५२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

५५३. (D) साहित्यमे साहित्यिक चोरी (प्लेजियरिज्म) आ अनुकरणक प्रवृत्तिक व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यमे साहित्यिक चोरी (प्लेजियरिज्म) आ अनुकरणक प्रवृत्तिक व्यंग्य” अछि।

५५४. (A) साहित्यमे साहित्यिक चोरी (प्लेजियरिज्म) आ अनुकरणक प्रवृत्तिक व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यमे साहित्यिक चोरी (प्लेजियरिज्म) आ अनुकरणक प्रवृत्तिक व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

५५५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५५७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५५९. (B) खण्ड 3716, सूचकांक पंक्ति 2407मे रवि भूषण पाठकक “टिप्स फ्राम खट्टरकका” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्यमे साहित्यिक चोरी (प्लेजियरिज्म) आ अनुकरणक प्रवृत्तिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५६०. (A) बर्फ पानि भाफ — सूचकांक पंक्ति 2408मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बर्फ पानि भाफ” रूपमे देल अछि।

५६१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५६२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

५६३. (D) एक युवतीक देह, मोन आ सपनाक रूपकक माध्यमे मृत्यु, प्रेम आ इतिहासक चिन्तन — टिप्पणीक पहिल संकेत “एक युवतीक देह, मोन आ सपनाक रूपकक माध्यमे मृत्यु, प्रेम आ इतिहासक चिन्तन” अछि।

५६४. (A) एक युवतीक देह, मोन आ सपनाक रूपकक माध्यमे मृत्यु, प्रेम आ इतिहासक चिन्तन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक युवतीक देह, मोन आ सपनाक रूपकक माध्यमे मृत्यु, प्रेम आ इतिहासक चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

५६५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५६७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५६९. (B) खण्ड 3717, सूचकांक पंक्ति 2408मे रवि भूषण पाठकक “बर्फ पानि भाफ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक युवतीक देह, मोन आ सपनाक रूपकक माध्यमे मृत्यु, प्रेम आ इतिहासक चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५७०. (A) बस तीने दिन — सूचकांक पंक्ति 2409मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बस तीने दिन” रूपमे देल अछि।
५७१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५७२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५७३. (D) पटना-दरभंगामे आयोजित तीन दिवसीय साहित्यिक समारोहक उल्लास, भीड़, आ प्रलोभनक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “पटना-दरभंगामे आयोजित तीन दिवसीय साहित्यिक समारोहक उल्लास, भीड़, आ प्रलोभनक चित्रण” अछि।
५७४. (A) पटना-दरभंगामे आयोजित तीन दिवसीय साहित्यिक समारोहक उल्लास, भीड़, आ प्रलोभनक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पटना-दरभंगामे आयोजित तीन दिवसीय साहित्यिक समारोहक उल्लास, भीड़, आ प्रलोभनक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
५७५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५७७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५७९. (B) खण्ड 3718, सूचकांक पंक्ति 2409मे रवि भूषण पाठकक “बस तीने दिन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पटना-दरभंगामे आयोजित तीन दिवसीय साहित्यिक समारोहक उल्लास, भीड़, आ प्रलोभनक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५८०. (A) उत्तर लोक — सूचकांक पंक्ति 2410मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “उत्तर लोक” रूपमे देल अछि।
५८१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५८२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५८३. (D) उत्तर बिहारक भौगोलिक-सांस्कृतिक पहचान, ओकर निष्ठुरता, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वभावक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “उत्तर बिहारक भौगोलिक-सांस्कृतिक पहचान, ओकर निष्ठुरता, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वभावक चित्रण” अछि।
५८४. (A) उत्तर बिहारक भौगोलिक-सांस्कृतिक पहचान, ओकर निष्ठुरता, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वभावक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उत्तर बिहारक भौगोलिक-सांस्कृतिक पहचान, ओकर निष्ठुरता, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वभावक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
५८५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५८७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५८९. (B) खण्ड 3719, सूचकांक पंक्ति 2410मे रवि भूषण पाठकक “उत्तर लोक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “उत्तर बिहारक भौगोलिक-सांस्कृतिक पहचान, ओकर निष्ठुरता, स्वाभिमान आ सामाजिक स्वभावक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५९०. (A) चमारक ऋण — सूचकांक पंक्ति 2411मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “चमारक ऋण” रूपमे देल अछि।
५९१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५९२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५९३. (D) चमार समाजक बौद्धिक योगदानक ऋण स्वीकार — टिप्पणीक पहिल संकेत “चमार समाजक बौद्धिक योगदानक ऋण स्वीकार” अछि।

५९४. (A) चमार समाजक बौद्धिक योगदानक ऋण स्वीकार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चमार समाजक बौद्धिक योगदानक ऋण स्वीकार” रूपमे देखाइत अछि।
५९५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५९७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५९९. (B) खण्ड 3720, सूचकांक पंक्ति 2411मे रवि भूषण पाठकक “चमारक ऋण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चमार समाजक बौद्धिक योगदानक ऋण स्वीकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६००. (A) दीवाली क पहिले — सूचकांक पंक्ति 2412मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “दीवाली क पहिले” रूपमे देल अछि।
६०१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६०२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
६०३. (D) दीवाली पूर्व कुम्हारक जीवनक मार्मिक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “दीवाली पूर्व कुम्हारक जीवनक मार्मिक चित्रण” अछि।
६०४. (A) दीवाली पूर्व कुम्हारक जीवनक मार्मिक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दीवाली पूर्व कुम्हारक जीवनक मार्मिक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
६०५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६०७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६०९. (B) खण्ड 3721, सूचकांक पंक्ति 2412मे रवि भूषण पाठकक “दीवाली क पहिले” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दीवाली पूर्व कुम्हारक जीवनक मार्मिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६१०. (A) धनतेरस राति — सूचकांक पंक्ति 2413मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “धनतेरस राति” रूपमे देल अछि।
६११. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६१२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
६१३. (D) धनतेरसक बजारमे करबाक खरीदारी, सामर्थ्यक अभाव, आ आवश्यकताक बोझक मार्मिक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “धनतेरसक बजारमे करबाक खरीदारी, सामर्थ्यक अभाव, आ आवश्यकताक बोझक मार्मिक चित्रण” अछि।
६१४. (A) धनतेरसक बजारमे करबाक खरीदारी, सामर्थ्यक अभाव, आ आवश्यकताक बोझक मार्मिक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “धनतेरसक बजारमे करबाक खरीदारी, सामर्थ्यक अभाव, आ आवश्यकताक बोझक मार्मिक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
६१५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६१७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६१९. (B) खण्ड 3722, सूचकांक पंक्ति 2413मे रवि भूषण पाठकक “धनतेरस राति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “धनतेरसक बजारमे करबाक खरीदारी, सामर्थ्यक अभाव, आ आवश्यकताक बोझक मार्मिक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६२०. (A) हम पुरहितिया — सूचकांक पंक्ति 2414मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “हम पुरहितिया” रूपमे देल अछि।
६२१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६२२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
६२३. (D) एक पुरोहित ब्राह्मणक जीवन-यापनक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “एक पुरोहित ब्राह्मणक जीवन-यापनक चित्रण” अछि।
६२४. (A) एक पुरोहित ब्राह्मणक जीवन-यापनक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक पुरोहित ब्राह्मणक जीवन-यापनक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
६२५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६२७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६२९. (B) खण्ड 3723, सूचकांक पंक्ति 2414मे रवि भूषण पाठकक “हम पुरहितिया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक पुरोहित ब्राह्मणक जीवन-यापनक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६३०. (A) चालीसक बात — सूचकांक पंक्ति 2415मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “चालीसक बात” रूपमे देल अछि।
६३१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६३२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
६३३. (D) चालीस वर्षक उमर पार कऽ लेलाक बाद पुरान मित्रक स्मरण, शारीरिक परिवर्तन, आ विस्थापनक पीड़ाक कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत “चालीस वर्षक उमर पार कऽ लेलाक बाद पुरान मित्रक स्मरण, शारीरिक परिवर्तन, आ विस्थापनक पीड़ाक कविता” अछि।
६३४. (A) चालीस वर्षक उमर पार कऽ लेलाक बाद पुरान मित्रक स्मरण, शारीरिक परिवर्तन, आ विस्थापनक पीड़ाक कविता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चालीस वर्षक उमर पार कऽ लेलाक बाद पुरान मित्रक स्मरण, शारीरिक परिवर्तन, आ विस्थापनक पीड़ाक कविता” रूपमे देखाइत अछि।
६३५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६३७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६३९. (B) खण्ड 3724, सूचकांक पंक्ति 2415मे रवि भूषण पाठकक “चालीसक बात” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चालीस वर्षक उमर पार कऽ लेलाक बाद पुरान मित्रक स्मरण, शारीरिक परिवर्तन, आ विस्थापनक पीड़ाक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६४०. (A) बामे गाम दहिने गाम १-६ — सूचकांक पंक्ति 2416मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “बामे गाम दहिने गाम १-६” रूपमे देल अछि।
६४१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६४२. (C) कविता (शृंखला) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता (शृंखला)” अछि।
६४३. (D) बागमती-करेहक बीच बसल "करियन" गामक बहुआयामी चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “बागमती-करेहक बीच बसल "करियन" गामक बहुआयामी चित्रण” अछि।
६४४. (A) बागमती-करेहक बीच बसल "करियन" गामक बहुआयामी चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बागमती-करेहक बीच बसल "करियन" गामक बहुआयामी चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
६४५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता (शृंखला) — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६४७. (D) ई पाठ कविता (शृंगला)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६४९. (B) खण्ड 3725, सूचकांक पंक्ति 2416मे रवि भूषण पाठकक “बामे गाम दहिने गाम १-६” प्रविष्टि पद्य, कविता (शृंगला) आ “बागमती-करेहक बीच बसल “करियन” गामक बहुआयामी चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६५०. (A) छौडा अजगुत कम्प्यूटर छै — सूचकांक पंक्ति 2417मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “छौडा अजगुत कम्प्यूटर छै” रूपमे देल अछि।
६५१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६५२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
६५३. (D) नव पीढ़ीक तकनीकी दक्षता आ गुरु-परम्पराक बदलैत स्वरूपक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “नव पीढ़ीक तकनीकी दक्षता आ गुरु-परम्पराक बदलैत स्वरूपक चित्रण” अछि।
६५४. (A) नव पीढ़ीक तकनीकी दक्षता आ गुरु-परम्पराक बदलैत स्वरूपक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव पीढ़ीक तकनीकी दक्षता आ गुरु-परम्पराक बदलैत स्वरूपक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
६५५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६५७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६५९. (B) खण्ड 3726, सूचकांक पंक्ति 2417मे रवि भूषण पाठकक “छौडा अजगुत कम्प्यूटर छै” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नव पीढ़ीक तकनीकी दक्षता आ गुरु-परम्पराक बदलैत स्वरूपक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६६०. (A) महाकवि विद्यापति-१ — सूचकांक पंक्ति 2418मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “महाकवि विद्यापति-१” रूपमे देल अछि।
६६१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६६२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
६६३. (D) युवाकवि विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा, कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक सृजन-प्रक्रिया — टिप्पणीक पहिल संकेत “युवाकवि विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा, कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक सृजन-प्रक्रिया” अछि।
६६४. (A) युवाकवि विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा, कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक सृजन-प्रक्रिया — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “युवाकवि विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा, कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक सृजन-प्रक्रिया” रूपमे देखाइत अछि।
६६५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६६७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६६९. (B) खण्ड 3727, सूचकांक पंक्ति 2418मे रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-१” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “युवाकवि विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा, कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक सृजन-प्रक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६७०. (A) महाकवि विद्यापति-२ — सूचकांक पंक्ति 2419मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “महाकवि विद्यापति-२” रूपमे देल अछि।
६७१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६७२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

६७३. (D) विद्यापतिक ब्राह्मण-कविसँ आगू बढ़ि लोकक कवि बनबाक सामाजिक प्रक्रिया — टिप्पणीक पहिल संकेत “विद्यापतिक ब्राह्मण-कविसँ आगू बढ़ि लोकक कवि बनबाक सामाजिक प्रक्रिया” अछि।
६७४. (A) विद्यापतिक ब्राह्मण-कविसँ आगू बढ़ि लोकक कवि बनबाक सामाजिक प्रक्रिया — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विद्यापतिक ब्राह्मण-कविसँ आगू बढ़ि लोकक कवि बनबाक सामाजिक प्रक्रिया” रूपमे देखाइत अछि।
६७५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६७७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६७९. (B) खण्ड 3728, सूचकांक पंक्ति 2419मे रवि भूषण पाठकक “महाकवि विद्यापति-२” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विद्यापतिक ब्राह्मण-कविसँ आगू बढ़ि लोकक कवि बनबाक सामाजिक प्रक्रिया” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६८०. (A) हाइकू — सूचकांक पंक्ति 2420मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “हाइकू” रूपमे देल अछि।
६८१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६८२. (C) हाइकू — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू” अछि।
६८३. (D) ई खचरहबा (कचरा बीनबला) के खोजमे छै भाग फतंगा, जकाँ जीवनक नश्वरता आ अर्थहीनताक सूक्ष्म चित्रण। — टिप्पणीक पहिल संकेत “ई खचरहबा (कचरा बीनबला) के खोजमे छै भाग फतंगा, जकाँ जीवनक नश्वरता आ अर्थहीनताक सूक्ष्म चित्रण।” अछि।
६८४. (A) ई खचरहबा (कचरा बीनबला) के खोजमे छै भाग फतंगा, जकाँ जीवनक नश्वरता आ अर्थहीनताक सूक्ष्म चित्रण। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ई खचरहबा (कचरा बीनबला) के खोजमे छै भाग फतंगा, जकाँ जीवनक नश्वरता आ अर्थहीनताक सूक्ष्म चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।
६८५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६८७. (D) ई पाठ हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६८९. (B) खण्ड 3729, सूचकांक पंक्ति 2420मे रवि भूषण पाठकक “हाइकू” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ “ई खचरहबा (कचरा बीनबला) के खोजमे छै भाग फतंगा, जकाँ जीवनक नश्वरता आ अर्थहीनताक सूक्ष्म चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६९०. (A) कि भेलए एकरा — सूचकांक पंक्ति 2421मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “कि भेलए एकरा” रूपमे देल अछि।
६९१. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६९२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
६९३. (D) एक अनपेक्षित नेताक कार्यशैली आ स्वभाव पर आश्चर्य प्रकट करैत प्रश्नाकुल कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत “एक अनपेक्षित नेताक कार्यशैली आ स्वभाव पर आश्चर्य प्रकट करैत प्रश्नाकुल कविता” अछि।
६९४. (A) एक अनपेक्षित नेताक कार्यशैली आ स्वभाव पर आश्चर्य प्रकट करैत प्रश्नाकुल कविता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एक अनपेक्षित नेताक कार्यशैली आ स्वभाव पर आश्चर्य प्रकट करैत प्रश्नाकुल कविता” रूपमे देखाइत अछि।
६९५. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६९७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६९९. (B) खण्ड 3730, सूचकांक पंक्ति 2421मे रवि भूषण पाठकक “कि भेलए एकरा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “एक अनपेक्षित नेताक कार्यशैली आ स्वभाव पर आश्चर्य प्रकट करैत प्रश्नाकुल कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७००. (A) लघुकथा- पण्डिताइन — सूचकांक पंक्ति 2422मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “लघुकथा- पण्डिताइन” रूपमे देल अछि।

७०१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७०२. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

७०३. (D) जटा आ अनुराधाक दुखान्त प्रेम आ जीवनक व्यथा — टिप्पणीक पहिल संकेत “जटा आ अनुराधाक दुखान्त प्रेम आ जीवनक व्यथा” अछि।

७०४. (A) जटा आ अनुराधाक दुखान्त प्रेम आ जीवनक व्यथा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जटा आ अनुराधाक दुखान्त प्रेम आ जीवनक व्यथा” रूपमे देखाइत अछि।

७०५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७०७. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७०९. (B) खण्ड 3731, सूचकांक पंक्ति 2422मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पण्डिताइन” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जटा आ अनुराधाक दुखान्त प्रेम आ जीवनक व्यथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७१०. (A) बुरिराज (लघुकथा) — सूचकांक पंक्ति 2423मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “बुरिराज (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

७११. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७१२. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

७१३. (D) आधुनिक शिक्षा, प्रवास आ पारिवारिक विघटनक बीच झूलैत पात्रक मनोदशा — टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिक शिक्षा, प्रवास आ पारिवारिक विघटनक बीच झूलैत पात्रक मनोदशा” अछि।

७१४. (A) आधुनिक शिक्षा, प्रवास आ पारिवारिक विघटनक बीच झूलैत पात्रक मनोदशा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिक शिक्षा, प्रवास आ पारिवारिक विघटनक बीच झूलैत पात्रक मनोदशा” रूपमे देखाइत अछि।

७१५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७१७. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७१९. (B) खण्ड 3732, सूचकांक पंक्ति 2423मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “बुरिराज (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “आधुनिक शिक्षा, प्रवास आ पारिवारिक विघटनक बीच झूलैत पात्रक मनोदशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७२०. (A) फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना — सूचकांक पंक्ति 2424मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना” रूपमे देल अछि।

७२१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७२२. (C) शोध-आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।

७२३. (D) मैथिली फकड़ा (लोकोक्ति) केर श्रेणी-विभाजन, परिभाषा आ स्त्री-मनोदशाक प्रमुख माध्यम केर रूपमे हुनकर भूमिकाक गहन मानवशास्त्रीय अध्ययन — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली फकड़ा (लोकोक्ति) केर श्रेणी-विभाजन, परिभाषा आ स्त्री-मनोदशाक प्रमुख माध्यम केर रूपमे हुनकर भूमिकाक गहन मानवशास्त्रीय अध्ययन” अछि।

७२४. (A) मैथिली फकड़ा (लोकोक्ति) केर श्रेणी-विभाजन, परिभाषा आ स्त्री-मनोदशाक प्रमुख माध्यम केर रूपमे हुनकर भूमिकाक गहन मानवशास्त्रीय अध्ययन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली फकड़ा (लोकोक्ति) केर श्रेणी-विभाजन, परिभाषा आ स्त्री-मनोदशाक प्रमुख माध्यम केर रूपमे हुनकर भूमिकाक गहन मानवशास्त्रीय अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।
७२५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७२७. (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७२९. (B) खण्ड 3733, सूचकांक पंक्ति 2424मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मैथिली फकड़ा (लोकोक्ति) केर श्रेणी-विभाजन, परिभाषा आ स्त्री-मनोदशाक प्रमुख माध्यम केर रूपमे हुनकर भूमिकाक गहन मानवशास्त्रीय अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७३०. (A) नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१) — सूचकांक पंक्ति 2425मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)” रूपमे देल अछि।
७३१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७३२. (C) यात्रा-वृत्तान्त — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।
७३३. (D) असमक नॉर्थ कछार हिल्स (हाफलौंग) केर प्राकृतिक सौन्दर्य, दीमासा, जेमे नागा, कुकी जेहन जनजातीय समुदायक सांस्कृतिक विरासत आ कला-केन्द्र केर गतिविधिक सजीव यात्रा-वृत्तान्त। — टिप्पणीक पहिल संकेत “असमक नॉर्थ कछार हिल्स (हाफलौंग) केर प्राकृतिक सौन्दर्य, दीमासा, जेमे नागा, कुकी जेहन जनजातीय समुदायक सांस्कृतिक विरासत आ कला-केन्द्र केर गतिविधिक सजीव यात्रा-वृत्तान्त।” अछि।
७३४. (A) असमक नॉर्थ कछार हिल्स (हाफलौंग) केर प्राकृतिक सौन्दर्य, दीमासा, जेमे नागा, कुकी जेहन जनजातीय समुदायक सांस्कृतिक विरासत आ कला-केन्द्र केर गतिविधिक सजीव यात्रा-वृत्तान्त। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “असमक नॉर्थ कछार हिल्स (हाफलौंग) केर प्राकृतिक सौन्दर्य, दीमासा, जेमे नागा, कुकी जेहन जनजातीय समुदायक सांस्कृतिक विरासत आ कला-केन्द्र केर गतिविधिक सजीव यात्रा-वृत्तान्त।” रूपमे देखाइत अछि।
७३५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७३७. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७३९. (B) खण्ड 3734, सूचकांक पंक्ति 2425मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “असमक नॉर्थ कछार हिल्स (हाफलौंग) केर प्राकृतिक सौन्दर्य, दीमासा, जेमे नागा, कुकी जेहन जनजातीय समुदायक सांस्कृतिक विरासत आ कला-केन्द्र केर गतिविधिक सजीव यात्रा-वृत्तान्त।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७४०. (A) नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२) — सूचकांक पंक्ति 2426मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)” रूपमे देल अछि।
७४१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७४२. (C) यात्रा-वृत्तान्त — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।
७४३. (D) नॉर्थ कछार हिल्सक पूर्ववत यात्रा-क्रम — टिप्पणीक पहिल संकेत “नॉर्थ कछार हिल्सक पूर्ववत यात्रा-क्रम” अछि।
७४४. (A) नॉर्थ कछार हिल्सक पूर्ववत यात्रा-क्रम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नॉर्थ कछार हिल्सक पूर्ववत यात्रा-क्रम” रूपमे देखाइत अछि।
७४५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७४७. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७४९. (B) खण्ड 3735, सूचकांक पंक्ति 2426मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “नॉर्थ कछार हिल्सक पूर्ववत यात्रा-क्रम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७५०. (A) लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३) — सूचकांक पंक्ति 2427मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)” रूपमे देल अछि।

७५१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७५२. (C) यात्रा-वृत्तान्त — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

७५३. (D) अरुणाचल प्रदेशक लोअर दिवांग घाटी (रोईंग) केर दुर्गम यात्रा — टिप्पणीक पहिल संकेत “अरुणाचल प्रदेशक लोअर दिवांग घाटी (रोईंग) केर दुर्गम यात्रा” अछि।

७५४. (A) अरुणाचल प्रदेशक लोअर दिवांग घाटी (रोईंग) केर दुर्गम यात्रा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरुणाचल प्रदेशक लोअर दिवांग घाटी (रोईंग) केर दुर्गम यात्रा” रूपमे देखाइत अछि।

७५५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७५७. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७५९. (B) खण्ड 3736, सूचकांक पंक्ति 2427मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “अरुणाचल प्रदेशक लोअर दिवांग घाटी (रोईंग) केर दुर्गम यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७६०. (A) यायावरी: संगईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर — सूचकांक पंक्ति 2428मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “यायावरी: संगईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर” रूपमे देल अछि।

७६१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७६२. (C) यात्रा-वृत्तान्त — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

७६३. (D) मणिपुरक इम्फाल नजदीक कबुई नागा (रोंगमेई) गाम संगईप्राऊ केर यात्रा — टिप्पणीक पहिल संकेत “मणिपुरक इम्फाल नजदीक कबुई नागा (रोंगमेई) गाम संगईप्राऊ केर यात्रा” अछि।

७६४. (A) मणिपुरक इम्फाल नजदीक कबुई नागा (रोंगमेई) गाम संगईप्राऊ केर यात्रा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मणिपुरक इम्फाल नजदीक कबुई नागा (रोंगमेई) गाम संगईप्राऊ केर यात्रा” रूपमे देखाइत अछि।

७६५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७६७. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७६९. (B) खण्ड 3737, सूचकांक पंक्ति 2428मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी: संगईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “मणिपुरक इम्फाल नजदीक कबुई नागा (रोंगमेई) गाम संगईप्राऊ केर यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७७०. (A) यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात — सूचकांक पंक्ति 2429मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात” रूपमे देल अछि।

७७१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७७२. (C) यात्रा-वृत्तान्त — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

७७३. (D) उत्तराखण्डक बारह बर्षीय नन्दा राजजात यात्राक विवरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “उत्तराखण्डक बारह बर्षीय नन्दा राजजात यात्राक विवरण” अछि।

७७४. (A) उत्तराखण्डक बारह बर्षीय नन्दा राजजात यात्राक विवरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उत्तराखण्डक बारह बर्षीय नन्दा राजजात यात्राक विवरण” रूपमे देखाइत अछि।

७७५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७७७. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७७९. (B) खण्ड 3738, सूचकांक पंक्ति 2429मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी-उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “उत्तराखण्डक बारह बर्षीय नन्दा राजजात यात्राक विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७८०. (A) यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय वृन्दावन — सूचकांक पंक्ति 2430मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय वृन्दावन” रूपमे देल अछि।

७८१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७८२. (C) यात्रा-वृत्तान्त — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

७८३. (D) वृन्दावन आ बरसानाक राधा-कृष्ण भक्तिमय यात्रा-वृत्तान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “वृन्दावन आ बरसानाक राधा-कृष्ण भक्तिमय यात्रा-वृत्तान्त” अछि।

७८४. (A) वृन्दावन आ बरसानाक राधा-कृष्ण भक्तिमय यात्रा-वृत्तान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वृन्दावन आ बरसानाक राधा-कृष्ण भक्तिमय यात्रा-वृत्तान्त” रूपमे देखाइत अछि।

७८५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७८७. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७८९. (B) खण्ड 3739, सूचकांक पंक्ति 2430मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय वृन्दावन” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “वृन्दावन आ बरसानाक राधा-कृष्ण भक्तिमय यात्रा-वृत्तान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७९०. (A) यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन — सूचकांक पंक्ति 2431मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन” रूपमे देल अछि।

७९१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७९२. (C) यात्रा-वृत्तान्त/वार्तालाप — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त/वार्तालाप” अछि।

७९३. (D) मुक्तिजा मलिक (मलिक भाय) केर संग दिल्लीक श्रीराम सेन्टर केर केफेटेरियामे भेल बौद्धिक गोष्ठी — टिप्पणीक पहिल संकेत “मुक्तिजा मलिक (मलिक भाय) केर संग दिल्लीक श्रीराम सेन्टर केर केफेटेरियामे भेल बौद्धिक गोष्ठी” अछि।

७९४. (A) मुक्तिजा मलिक (मलिक भाय) केर संग दिल्लीक श्रीराम सेन्टर केर केफेटेरियामे भेल बौद्धिक गोष्ठी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मुक्तिजा मलिक (मलिक भाय) केर संग दिल्लीक श्रीराम सेन्टर केर केफेटेरियामे भेल बौद्धिक गोष्ठी” रूपमे देखाइत अछि।

७९५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/वार्तालाप — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७९७. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/वार्तालापक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७९९. (B) खण्ड 3740, सूचकांक पंक्ति 2431मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “यायावरी- मलिक भाय करे फूटपाथी चिंतन” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/वार्तालाप आ “मुक्तिजा मलिक (मलिक भाय) केर संग दिल्लीक श्रीराम सेन्टर केर केफेटेरियामे भेल बौद्धिक गोष्ठी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८००. (A) सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना — सूचकांक पंक्ति 2432मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना” रूपमे देल अछि।
८०१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८०२. (C) कथा-संग्रह समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा-संग्रह समीक्षा” अछि।
८०३. (D) सुभाषचन्द्र यादवक कथा-संग्रहक भाषा-विन्यास आ कथा-वस्तुक दुइ दृष्टिकोण सँ समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “सुभाषचन्द्र यादवक कथा-संग्रहक भाषा-विन्यास आ कथा-वस्तुक दुइ दृष्टिकोण सँ समीक्षा” अछि।
८०४. (A) सुभाषचन्द्र यादवक कथा-संग्रहक भाषा-विन्यास आ कथा-वस्तुक दुइ दृष्टिकोण सँ समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सुभाषचन्द्र यादवक कथा-संग्रहक भाषा-विन्यास आ कथा-वस्तुक दुइ दृष्टिकोण सँ समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
८०५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा कथा-संग्रह समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८०७. (D) ई पाठ कथा-संग्रह समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८०९. (B) खण्ड 3741, सूचकांक पंक्ति 2432मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत- बिगडैत- विवेचना” प्रविष्टि गद्य, कथा-संग्रह समीक्षा आ “सुभाषचन्द्र यादवक कथा-संग्रहक भाषा-विन्यास आ कथा-वस्तुक दुइ दृष्टिकोण सँ समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८१०. (A) रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना — सूचकांक पंक्ति 2433मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “रामलोचन ठाकूरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना” रूपमे देल अछि।
८११. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८१२. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
८१३. (D) रामलोचन ठाकूरक पोथी “मैथिली लोककथा” केर विवेचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “रामलोचन ठाकूरक पोथी “मैथिली लोककथा” केर विवेचना” अछि।
८१४. (A) रामलोचन ठाकूरक पोथी “मैथिली लोककथा” केर विवेचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रामलोचन ठाकूरक पोथी “मैथिली लोककथा” केर विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।
८१५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८१७. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८१९. (B) खण्ड 3742, सूचकांक पंक्ति 2433मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रामलोचन ठाकुरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “रामलोचन ठाकुरक पोथी “मैथिली लोककथा” केर विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८२०. (A) रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता — सूचकांक पंक्ति 2434मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता” रूपमे देल अछि।
८२१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८२२. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
८२३. (D) स्नेहलता नाम सँ लिखैत मैथिल गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक योगदान, तुलना अस्समी भूपेन हजारिकासँ, आ मिथिला समाज द्वारा हुनका प्रति बरतल उदासीनताक मार्मिक आलोचना। — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्नेहलता नाम सँ लिखैत मैथिल गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक योगदान, तुलना अस्समी भूपेन हजारिकासँ, आ मिथिला समाज द्वारा हुनका प्रति बरतल उदासीनताक मार्मिक आलोचना।” अछि।
८२४. (A) स्नेहलता नाम सँ लिखैत मैथिल गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक योगदान, तुलना अस्समी भूपेन हजारिकासँ, आ मिथिला समाज द्वारा हुनका प्रति बरतल उदासीनताक मार्मिक आलोचना। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्नेहलता नाम सँ लिखैत मैथिल गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक योगदान, तुलना अस्समी भूपेन हजारिकासँ, आ मिथिला समाज द्वारा हुनका प्रति बरतल उदासीनताक मार्मिक आलोचना।” रूपमे देखाइत अछि।
८२५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८२७. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८२९. (B) खण्ड 3743, सूचकांक पंक्ति 2434मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस करे उदासीनता” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “स्नेहलता नाम सँ लिखैत मैथिल गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरक योगदान, तुलना अस्समी भूपेन हजारिकासँ, आ मिथिला समाज द्वारा हुनका प्रति बरतल उदासीनताक मार्मिक आलोचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८३०. (A) इंद्रधनुषी अकास — सूचकांक पंक्ति 2435मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “इंद्रधनुषी अकास” रूपमे देल अछि।
८३१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८३२. (C) कविता-संग्रह समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता-संग्रह समीक्षा” अछि।
८३३. (D) जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता-संग्रह “इंद्रधनुषी अकास” केर आमुखीय समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता-संग्रह “इंद्रधनुषी अकास” केर आमुखीय समीक्षा” अछि।
८३४. (A) जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता-संग्रह “इंद्रधनुषी अकास” केर आमुखीय समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता-संग्रह “इंद्रधनुषी अकास” केर आमुखीय समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
८३५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा कविता-संग्रह समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८३७. (D) ई पाठ कविता-संग्रह समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८३९. (B) खण्ड 3744, सूचकांक पंक्ति 2435मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “इंद्रधनुषी अकास” प्रविष्टि गद्य, कविता-संग्रह समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता-संग्रह “इंद्रधनुषी अकास” केर आमुखीय समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८४०. (A) पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल — सूचकांक पंक्ति 2436मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल” रूपमे देल अछि।

८४१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८४२. (C) पोथी समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पोथी समीक्षा” अछि।

८४३. (D) जगदीश प्रसाद मण्डलक “गामक जिनगी” पोथीक १९ कथा सभक विस्तृत समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक “गामक जिनगी” पोथीक १९ कथा सभक विस्तृत समीक्षा” अछि।

८४४. (A) जगदीश प्रसाद मण्डलक “गामक जिनगी” पोथीक १९ कथा सभक विस्तृत समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डलक “गामक जिनगी” पोथीक १९ कथा सभक विस्तृत समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

८४५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा पोथी समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८४७. (D) ई पाठ पोथी समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८४९. (B) खण्ड 3745, सूचकांक पंक्ति 2436मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल” प्रविष्टि गद्य, पोथी समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक “गामक जिनगी” पोथीक १९ कथा सभक विस्तृत समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८५०. (A) जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा) — सूचकांक पंक्ति 2437मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

८५१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८५२. (C) उपन्यास समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “उपन्यास समीक्षा” अछि।

८५३. (D) जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास “जीवन संघर्ष” केर समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास “जीवन संघर्ष” केर समीक्षा” अछि।

८५४. (A) जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास “जीवन संघर्ष” केर समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास “जीवन संघर्ष” केर समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

८५५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८५७. (D) ई पाठ उपन्यास समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८५९. (B) खण्ड 3746, सूचकांक पंक्ति 2437मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास “जीवन संघर्ष” केर समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८६०. (A) मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य — सूचकांक पंक्ति 2438मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य” रूपमे देल अछि।

८६१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८६२. (C) शोध-आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।

८६३. (D) मिथिला चित्रकला (मधुबनी पेंटिंग) केर ५००० वर्ष पुरान इतिहास, नारीक एकाधिकार, व्यवसायीकरणक प्रभाव, आ ब्राह्मण-कायस्थ-हरिजन शैलीक विभेदक विवेचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला चित्रकला (मधुबनी पेंटिंग) केर ५००० वर्ष पुरान इतिहास, नारीक एकाधिकार, व्यवसायीकरणक प्रभाव, आ ब्राह्मण-कायस्थ-हरिजन शैलीक विभेदक विवेचना” अछि।

८६४. (A) मिथिला चित्रकला (मधुबनी पेंटिंग) केर ५००० वर्ष पुरान इतिहास, नारीक एकाधिकार, व्यवसायीकरणक प्रभाव, आ ब्राह्मण-कायस्थ-हरिजन शैलीक विभेदक विवेचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला चित्रकला (मधुबनी पेंटिंग) केर ५००० वर्ष पुरान इतिहास, नारीक एकाधिकार, व्यवसायीकरणक प्रभाव, आ ब्राह्मण-कायस्थ-हरिजन शैलीक विभेदक विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

८६५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८६७. (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८६९. (B) खण्ड 3747, सूचकांक पंक्ति 2438मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मिथिला चित्रकला (मधुबनी पेंटिंग) केर ५००० वर्ष पुरान इतिहास, नारीक एकाधिकार, व्यवसायीकरणक प्रभाव, आ ब्राह्मण-कायस्थ-हरिजन शैलीक विभेदक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८७०. (A) मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय — सूचकांक पंक्ति 2439मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” रूपमे देल अछि।
८७१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८७२. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
८७३. (D) राजस्थान आ मध्यप्रदेशमे पितृपक्षमे मनाओल जाइबला सांझी लोककला आ व्रतक मानवशास्त्रीय अध्ययन — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजस्थान आ मध्यप्रदेशमे पितृपक्षमे मनाओल जाइबला सांझी लोककला आ व्रतक मानवशास्त्रीय अध्ययन” अछि।
८७४. (A) राजस्थान आ मध्यप्रदेशमे पितृपक्षमे मनाओल जाइबला सांझी लोककला आ व्रतक मानवशास्त्रीय अध्ययन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजस्थान आ मध्यप्रदेशमे पितृपक्षमे मनाओल जाइबला सांझी लोककला आ व्रतक मानवशास्त्रीय अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।
८७५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८७७. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८७९. (B) खण्ड 3748, सूचकांक पंक्ति 2439मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “राजस्थान आ मध्यप्रदेशमे पितृपक्षमे मनाओल जाइबला सांझी लोककला आ व्रतक मानवशास्त्रीय अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८८०. (A) लघुकथा- चन्दा — सूचकांक पंक्ति 2440मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “लघुकथा- चन्दा” रूपमे देल अछि।
८८१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८८२. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
८८३. (D) चन्दा आ राघवक निश्छल ग्राम्य प्रेमक कथा — टिप्पणीक पहिल संकेत “चन्दा आ राघवक निश्छल ग्राम्य प्रेमक कथा” अछि।
८८४. (A) चन्दा आ राघवक निश्छल ग्राम्य प्रेमक कथा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चन्दा आ राघवक निश्छल ग्राम्य प्रेमक कथा” रूपमे देखाइत अछि।
८८५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८८७. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८८९. (B) खण्ड 3749, सूचकांक पंक्ति 2440मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- चन्दा” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “चन्दा आ राघवक निश्छल ग्राम्य प्रेमक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८९०. (A) लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री — सूचकांक पंक्ति 2441मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री” रूपमे देल अछि।
८९१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८९२. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
८९३. (D) छोटानागपुरक उराँव जनजातिक बीच बिताओल बचपनक मार्मिक कथा — टिप्पणीक पहिल संकेत “छोटानागपुरक उराँव जनजातिक बीच बिताओल बचपनक मार्मिक कथा” अछि।
८९४. (A) छोटानागपुरक उराँव जनजातिक बीच बिताओल बचपनक मार्मिक कथा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “छोटानागपुरक उराँव जनजातिक बीच बिताओल बचपनक मार्मिक कथा” रूपमे देखाइत अछि।
८९५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८९७. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८९९. (B) खण्ड 3750, सूचकांक पंक्ति 2441मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “छोटानागपुरक उराँव जनजातिक बीच बिताओल बचपनक मार्मिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
९००. (A) लघुकथा- सखी कृन्ती — सूचकांक पंक्ति 2442मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “लघुकथा- सखी कृन्ती” रूपमे देल अछि।
९०१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९०२. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
९०३. (D) बाल-विवाहक दुष्परिणाम आ अघेड़ उमरक पतिसँ होइबला षोषणक मार्मिक कथा — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-विवाहक दुष्परिणाम आ अघेड़ उमरक पतिसँ होइबला षोषणक मार्मिक कथा” अछि।
९०४. (A) बाल-विवाहक दुष्परिणाम आ अघेड़ उमरक पतिसँ होइबला षोषणक मार्मिक कथा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-विवाहक दुष्परिणाम आ अघेड़ उमरक पतिसँ होइबला षोषणक मार्मिक कथा” रूपमे देखाइत अछि।
९०५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
९०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
९०७. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
९०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९०९. (B) खण्ड 3751, सूचकांक पंक्ति 2442मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- सखी कृन्ती” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “बाल-विवाहक दुष्परिणाम आ अघेड़ उमरक पतिसँ होइबला षोषणक मार्मिक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
९१०. (A) मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग — सूचकांक पंक्ति 2443मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग” रूपमे देल अछि।
९११. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९१२. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
९१३. (D) प्रो. चण्डेश्वर झा केर चारि उपलब्ध गीत-रेकर्डिंग पर आधारित आलेख — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रो. चण्डेश्वर झा केर चारि उपलब्ध गीत-रेकर्डिंग पर आधारित आलेख” अछि।
९१४. (A) प्रो. चण्डेश्वर झा केर चारि उपलब्ध गीत-रेकर्डिंग पर आधारित आलेख — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रो. चण्डेश्वर झा केर चारि उपलब्ध गीत-रेकर्डिंग पर आधारित आलेख” रूपमे देखाइत अछि।

११५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११७. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११९. (B) खण्ड 3752, सूचकांक पंक्ति 2443मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा करे सी. डी./डी. वी. करे प्रयोग” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “प्रो. चण्डेश्वर झा केर चारि उपलब्ध गीत-रेकर्डिंग पर आधारित आलेख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२०. (A) परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा) — सूचकांक पंक्ति 2444मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)” रूपमे देल अछि।
१२१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२२. (C) परिचर्चा/आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “परिचर्चा/आलेख” अछि।
१२३. (D) परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक स्थिति, अहिल्या, सीता, भामती सनक पौराणिक उदाहरण, मधुश्रावणीक सन्ध्या-प्रसंग, आ समकालीन मैथिल समाजमे नारी दशा पर गहन विवेचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक स्थिति, अहिल्या, सीता, भामती सनक पौराणिक उदाहरण, मधुश्रावणीक सन्ध्या-प्रसंग, आ समकालीन मैथिल समाजमे नारी दशा पर गहन विवेचना” अछि।
१२४. (A) परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक स्थिति, अहिल्या, सीता, भामती सनक पौराणिक उदाहरण, मधुश्रावणीक सन्ध्या-प्रसंग, आ समकालीन मैथिल समाजमे नारी दशा पर गहन विवेचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक स्थिति, अहिल्या, सीता, भामती सनक पौराणिक उदाहरण, मधुश्रावणीक सन्ध्या-प्रसंग, आ समकालीन मैथिल समाजमे नारी दशा पर गहन विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।
१२५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा परिचर्चा/आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२७. (D) ई पाठ परिचर्चा/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२९. (B) खण्ड 3753, सूचकांक पंक्ति 2444मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)” प्रविष्टि गद्य, परिचर्चा/आलेख आ “परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक स्थिति, अहिल्या, सीता, भामती सनक पौराणिक उदाहरण, मधुश्रावणीक सन्ध्या-प्रसंग, आ समकालीन मैथिल समाजमे नारी दशा पर गहन विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३०. (A) गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व? — सूचकांक पंक्ति 2445मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?” रूपमे देल अछि।
१३१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३२. (C) आलेख/विवेचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/विवेचना” अछि।
१३३. (D) मधुश्रावणी कथामे गौरीक तीन विवादास्पद रूप (चोरनी, डाईन, छिनार) केर मानवशास्त्रीय व्याख्या — टिप्पणीक पहिल संकेत “मधुश्रावणी कथामे गौरीक तीन विवादास्पद रूप (चोरनी, डाईन, छिनार) केर मानवशास्त्रीय व्याख्या” अछि।
१३४. (A) मधुश्रावणी कथामे गौरीक तीन विवादास्पद रूप (चोरनी, डाईन, छिनार) केर मानवशास्त्रीय व्याख्या — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मधुश्रावणी कथामे गौरीक तीन विवादास्पद रूप (चोरनी, डाईन, छिनार) केर मानवशास्त्रीय व्याख्या” रूपमे देखाइत अछि।
१३५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/विवेचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३७. (D) ई पाठ आलेख/विवेचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३९. (B) खण्ड 3754, सूचकांक पंक्ति 2445में डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा करे द्वंद्व?” प्रविष्टि गद्य, आलेख/विवेचना आ “मधुश्रावणी कथामे गौरीक तीन विवादास्पद रूप (चोरनी, डाईन, छिनार) केर मानवशास्त्रीय व्याख्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४०. (A) लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे — सूचकांक पंक्ति 2446में डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे” रूपमे देल अछि।
१४१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४२. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
१४३. (D) आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पीढ़ीक जीवन — टिप्पणीक पहिल संकेत “आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पीढ़ीक जीवन” अछि।
१४४. (A) आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पीढ़ीक जीवन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पीढ़ीक जीवन” रूपमे देखाइत अछि।
१४५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४७. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४९. (B) खण्ड 3755, सूचकांक पंक्ति 2446में डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लघुकथा- पुरुषक नहि विधासे” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पीढ़ीक जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५०. (A) मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना — सूचकांक पंक्ति 2447में डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना” रूपमे देल अछि।
१५१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५२. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
१५३. (D) रामक मर्यादा पुरुषोत्तमक आलोचना करैत मैथिलानीक पीड़ा आ उपरागक लोक-दृष्टिसँ विवेचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “रामक मर्यादा पुरुषोत्तमक आलोचना करैत मैथिलानीक पीड़ा आ उपरागक लोक-दृष्टिसँ विवेचना” अछि।
१५४. (A) रामक मर्यादा पुरुषोत्तमक आलोचना करैत मैथिलानीक पीड़ा आ उपरागक लोक-दृष्टिसँ विवेचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रामक मर्यादा पुरुषोत्तमक आलोचना करैत मैथिलानीक पीड़ा आ उपरागक लोक-दृष्टिसँ विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।
१५५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५७. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५९. (B) खण्ड 3756, सूचकांक पंक्ति 2447में डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी करे उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “रामक मर्यादा पुरुषोत्तमक आलोचना करैत मैथिलानीक पीड़ा आ उपरागक लोक-दृष्टिसँ विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६०. (A) लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन — सूचकांक पंक्ति 2448में डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” रूपमे देल अछि।
१६१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६२. (C) शोध-आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।
१६३. (D) मधुश्रावणी पाबनिक बहुआयामी मानवशास्त्रीय व्याख्या — टिप्पणीक पहिल संकेत “मधुश्रावणी पाबनिक बहुआयामी मानवशास्त्रीय व्याख्या” अछि।

१६४. (A) मधुश्रावणी पाबनिक बहुआयामी मानवशास्त्रीय व्याख्या — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मधुश्रावणी पाबनिक बहुआयामी मानवशास्त्रीय व्याख्या” रूपमे देखाइत अछि।
१६५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६७. (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६९. (B) खण्ड 3757, सूचकांक पंक्ति 2448मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी मानवशास्त्रीय विवेचन” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मधुश्रावणी पाबनिक बहुआयामी मानवशास्त्रीय व्याख्या” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७०. (A) मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव — सूचकांक पंक्ति 2449मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव” रूपमे देल अछि।
१७१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७२. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
१७३. (D) मैथिली जोग गीतमे इरोटिका (कामुकता) केर मुख्यधाराक स्वीकृति, तांत्रिक परम्परा आ प्रेमक सूक्ष्म सम्बन्धक विवेचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली जोग गीतमे इरोटिका (कामुकता) केर मुख्यधाराक स्वीकृति, तांत्रिक परम्परा आ प्रेमक सूक्ष्म सम्बन्धक विवेचना” अछि।
१७४. (A) मैथिली जोग गीतमे इरोटिका (कामुकता) केर मुख्यधाराक स्वीकृति, तांत्रिक परम्परा आ प्रेमक सूक्ष्म सम्बन्धक विवेचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली जोग गीतमे इरोटिका (कामुकता) केर मुख्यधाराक स्वीकृति, तांत्रिक परम्परा आ प्रेमक सूक्ष्म सम्बन्धक विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।
१७५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७७. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७९. (B) खण्ड 3758, सूचकांक पंक्ति 2449मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र करे प्रभाव” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली जोग गीतमे इरोटिका (कामुकता) केर मुख्यधाराक स्वीकृति, तांत्रिक परम्परा आ प्रेमक सूक्ष्म सम्बन्धक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८०. (A) तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति — सूचकांक पंक्ति 2450मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” रूपमे देल अछि।
१८१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८२. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
१८३. (D) मैथिल समाजमे तमाकूक लत, ओकर सांस्कृतिक स्वीकृति आ स्वास्थ्य पर भयावह प्रभावक चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिल समाजमे तमाकूक लत, ओकर सांस्कृतिक स्वीकृति आ स्वास्थ्य पर भयावह प्रभावक चित्रण” अछि।
१८४. (A) मैथिल समाजमे तमाकूक लत, ओकर सांस्कृतिक स्वीकृति आ स्वास्थ्य पर भयावह प्रभावक चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिल समाजमे तमाकूक लत, ओकर सांस्कृतिक स्वीकृति आ स्वास्थ्य पर भयावह प्रभावक चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
१८५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८७. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८९. (B) खण्ड 3759, सूचकांक पंक्ति 2450मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिल समाजमे तमाकूक लत, ओकर सांस्कृतिक स्वीकृति आ स्वास्थ्य पर भयावह प्रभावक चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९०. (A) मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के? — सूचकांक पंक्ति 2451मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?” रूपमे देल अछि।
१९१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९२. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
१९३. (D) मैथिलानी अर्थात स्त्रीक स्थिति पर विमर्श करबाक अधिकारीक प्रश्न — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिलानी अर्थात स्त्रीक स्थिति पर विमर्श करबाक अधिकारीक प्रश्न” अछि।
१९४. (A) मैथिलानी अर्थात स्त्रीक स्थिति पर विमर्श करबाक अधिकारीक प्रश्न — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिलानी अर्थात स्त्रीक स्थिति पर विमर्श करबाक अधिकारीक प्रश्न” रूपमे देखाइत अछि।
१९५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९७. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९९. (B) खण्ड 3760, सूचकांक पंक्ति 2451मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिलानी अर्थात स्त्रीक स्थिति पर विमर्श करबाक अधिकारीक प्रश्न” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०००. (A) महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज — सूचकांक पंक्ति 2452मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज” रूपमे देल अछि।
१००१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१००२. (C) यात्रा-वृत्तान्त/इतिहास — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त/इतिहास” अछि।
१००३. (D) मणिपुरक १८म् सदीक राजा गरीब नवाज़ (पंहिबा) केर वीरतापूर्ण जीवन-गाथा — टिप्पणीक पहिल संकेत “मणिपुरक १८म् सदीक राजा गरीब नवाज़ (पंहिबा) केर वीरतापूर्ण जीवन-गाथा” अछि।
१००४. (A) मणिपुरक १८म् सदीक राजा गरीब नवाज़ (पंहिबा) केर वीरतापूर्ण जीवन-गाथा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मणिपुरक १८म् सदीक राजा गरीब नवाज़ (पंहिबा) केर वीरतापूर्ण जीवन-गाथा” रूपमे देखाइत अछि।
१००५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/इतिहास — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१००६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१००७. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/इतिहासक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१००८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१००९. (B) खण्ड 3761, सूचकांक पंक्ति 2452मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “महाराजा पंहिबा: मणिपुर करे गरीब नबाज” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/इतिहास आ “मणिपुरक १८म् सदीक राजा गरीब नवाज़ (पंहिबा) केर वीरतापूर्ण जीवन-गाथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०१०. (A) दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका — सूचकांक पंक्ति 2453मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका” रूपमे देल अछि।
१०११. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०१२. (C) दीर्घ कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दीर्घ कथा” अछि।

१०१३. (D) प्रोफेसर सुधाकरक पत्नी नविन्दता आ राघवक चारित्रिक द्वन्द्व आ अन्तरंग सम्बन्धक कथा — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रोफेसर सुधाकरक पत्नी नविन्दता आ राघवक चारित्रिक द्वन्द्व आ अन्तरंग सम्बन्धक कथा” अछि।

१०१४. (A) प्रोफेसर सुधाकरक पत्नी नविन्दता आ राघवक चारित्रिक द्वन्द्व आ अन्तरंग सम्बन्धक कथा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रोफेसर सुधाकरक पत्नी नविन्दता आ राघवक चारित्रिक द्वन्द्व आ अन्तरंग सम्बन्धक कथा” रूपमे देखाइत अछि।

१०१५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा दीर्घ कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१०१६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०१७. (D) ई पाठ दीर्घ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१०१८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०१९. (B) खण्ड 3762, सूचकांक पंक्ति 2453मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका” प्रविष्टि गद्य, दीर्घ कथा आ “प्रोफेसर सुधाकरक पत्नी नविन्दता आ राघवक चारित्रिक द्वन्द्व आ अन्तरंग सम्बन्धक कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०२०. (A) सुग्गा आ शृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे — सूचकांक पंक्ति 2454मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “सुग्गा आ शृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे” रूपमे देल अछि।

१०२१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०२२. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

१०२३. (D) मैथिली लोकगीतमे सुग्गा केर शृंगार, स्नेह, ज्ञान आ प्रतीकक रूपमे प्रयोगक गहन विवेचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली लोकगीतमे सुग्गा केर शृंगार, स्नेह, ज्ञान आ प्रतीकक रूपमे प्रयोगक गहन विवेचना” अछि।

१०२४. (A) मैथिली लोकगीतमे सुग्गा केर शृंगार, स्नेह, ज्ञान आ प्रतीकक रूपमे प्रयोगक गहन विवेचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली लोकगीतमे सुग्गा केर शृंगार, स्नेह, ज्ञान आ प्रतीकक रूपमे प्रयोगक गहन विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

१०२५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१०२६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०२७. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१०२८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०२९. (B) खण्ड 3763, सूचकांक पंक्ति 2454मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सुग्गा आ शृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली लोकगीतमे सुग्गा केर शृंगार, स्नेह, ज्ञान आ प्रतीकक रूपमे प्रयोगक गहन विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०३०. (A) मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक — सूचकांक पंक्ति 2455मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक” रूपमे देल अछि।

१०३१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०३२. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

१०३३. (D) मैथिली लोकगीतमे काक (कौआ) केर मानवीकरण, शकुन-अपशकुन, मिथिलाक सांस्कृतिक मान्यता, आ विरह-मिलनक सन्देशवाहकक रूपमे विस्तृत विवेचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली लोकगीतमे काक (कौआ) केर मानवीकरण, शकुन-अपशकुन, मिथिलाक सांस्कृतिक मान्यता, आ विरह-मिलनक सन्देशवाहकक रूपमे विस्तृत विवेचना” अछि।

१०३४. (A) मैथिली लोकगीतमे काक (कौआ) केर मानवीकरण, शकुन-अपशकुन, मिथिलाक सांस्कृतिक मान्यता, आ विरह-मिलनक सन्देशवाहकक रूपमे विस्तृत विवेचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली लोकगीतमे काक (कौआ) केर मानवीकरण, शकुन-अपशकुन, मिथिलाक सांस्कृतिक मान्यता, आ विरह-मिलनक सन्देशवाहकक रूपमे विस्तृत विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।

१०३५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१०३६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०३७. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१०३८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०३९. (B) खण्ड 3764, सूचकांक पंक्ति 2455मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली लोकगीतमे काक (कौआ) केर मानवीकरण, शकुन-अपशकुन, मिथिलाक सांस्कृतिक मान्यता, आ विरह-मिलनक सन्देशवाहकक रूपमे विस्तृत विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०४०. (A) फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना — सूचकांक पंक्ति 2456मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना” रूपमे देल अछि।
१०४१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०४२. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
१०४३. (D) मैथिलानी संस्कार आ सीता दाईक पीड़ाक सूत्र — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिलानी संस्कार आ सीता दाईक पीड़ाक सूत्र” अछि।
१०४४. (A) मैथिलानी संस्कार आ सीता दाईक पीड़ाक सूत्र — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिलानी संस्कार आ सीता दाईक पीड़ाक सूत्र” रूपमे देखाइत अछि।
१०४५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१०४६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०४७. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१०४८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०४९. (B) खण्ड 3765, सूचकांक पंक्ति 2456मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “फाटू हे धरती: सीता दाई करे वेदना” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिलानी संस्कार आ सीता दाईक पीड़ाक सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०५०. (A) मैथिली संस्कृति करे अवयव — सूचकांक पंक्ति 2457मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिली संस्कृति करे अवयव” रूपमे देल अछि।
१०५१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०५२. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
१०५३. (D) “मिथिलाम” संस्कृतिक खानपान (कदली, कबकब, मीन), वस्त्र विन्यास, गीत-संगीत, वाद्य-यन्त्र, भाषा, धार्मिक सम्प्रदाय — छह अवयवक माध्यमे मैथिली संस्कृतिक विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत ““मिथिलाम” संस्कृतिक खानपान (कदली, कबकब, मीन), वस्त्र विन्यास, गीत-संगीत, वाद्य-यन्त्र, भाषा, धार्मिक सम्प्रदाय — छह अवयवक माध्यमे मैथिली संस्कृतिक विश्लेषण” अछि।
१०५४. (A) “मिथिलाम” संस्कृतिक खानपान (कदली, कबकब, मीन), वस्त्र विन्यास, गीत-संगीत, वाद्य-यन्त्र, भाषा, धार्मिक सम्प्रदाय — छह अवयवक माध्यमे मैथिली संस्कृतिक विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा ““मिथिलाम” संस्कृतिक खानपान (कदली, कबकब, मीन), वस्त्र विन्यास, गीत-संगीत, वाद्य-यन्त्र, भाषा, धार्मिक सम्प्रदाय — छह अवयवक माध्यमे मैथिली संस्कृतिक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।
१०५५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१०५६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०५७. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१०५८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०५९. (B) खण्ड 3766, सूचकांक पंक्ति 2457मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली संस्कृति करे अवयव” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ ““मिथिलाम” संस्कृतिक खानपान (कदली, कबकब, मीन), वस्त्र विन्यास, गीत-संगीत, वाद्य-यन्त्र, भाषा, धार्मिक सम्प्रदाय — छह अवयवक माध्यमे मैथिली संस्कृतिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

- १०६०. (A) मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद** — सूचकांक पंक्ति 2458मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद” रूपमे देल अछि।
- १०६१. (B) गद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
- १०६२. (C) आलेख/लोकगाथा** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/लोकगाथा” अछि।
- १०६३. (D) नाथ जोगी सम्प्रदायक गोपीचन्द-भरथरी-मैनावतीक लोकगाथाक मानवशास्त्रीय विवेचना** — टिप्पणीक पहिल संकेत “नाथ जोगी सम्प्रदायक गोपीचन्द-भरथरी-मैनावतीक लोकगाथाक मानवशास्त्रीय विवेचना” अछि।
- १०६४. (A) नाथ जोगी सम्प्रदायक गोपीचन्द-भरथरी-मैनावतीक लोकगाथाक मानवशास्त्रीय विवेचना** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाथ जोगी सम्प्रदायक गोपीचन्द-भरथरी-मैनावतीक लोकगाथाक मानवशास्त्रीय विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।
- १०६५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/लोकगाथा** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
- १०६६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
- १०६७. (D) ई पाठ आलेख/लोकगाथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
- १०६८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
- १०६९. (B) खण्ड 3767, सूचकांक पंक्ति 2458मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद” प्रविष्टि गद्य, आलेख/लोकगाथा आ “नाथ जोगी सम्प्रदायक गोपीचन्द-भरथरी-मैनावतीक लोकगाथाक मानवशास्त्रीय विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
- १०७०. (A) राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाह: लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण** — सूचकांक पंक्ति 2459मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाह: लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण” रूपमे देल अछि।
- १०७१. (B) गद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
- १०७२. (C) यात्रा-वृत्तान्त/शोध** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त/शोध” अछि।
- १०७३. (D) राजस्थानक मण्डोर (जोधपुर) मे रावण-मन्दोदरी विवाह-स्थलक भग्नावशेषक यात्रा-वृत्तान्त** — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजस्थानक मण्डोर (जोधपुर) मे रावण-मन्दोदरी विवाह-स्थलक भग्नावशेषक यात्रा-वृत्तान्त” अछि।
- १०७४. (A) राजस्थानक मण्डोर (जोधपुर) मे रावण-मन्दोदरी विवाह-स्थलक भग्नावशेषक यात्रा-वृत्तान्त** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजस्थानक मण्डोर (जोधपुर) मे रावण-मन्दोदरी विवाह-स्थलक भग्नावशेषक यात्रा-वृत्तान्त” रूपमे देखाइत अछि।
- १०७५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/शोध** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
- १०७६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
- १०७७. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/शोधक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
- १०७८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
- १०७९. (B) खण्ड 3768, सूचकांक पंक्ति 2459मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “राजस्थान करे मण्डोवरमे रावण आ मन्दोदरीक विवाह: लोक इतिहास करे मूर्त आ अमूर्त प्रमाण” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/शोध आ “राजस्थानक मण्डोर (जोधपुर) मे रावण-मन्दोदरी विवाह-स्थलक भग्नावशेषक यात्रा-वृत्तान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
- १०८०. (A) छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य** — सूचकांक पंक्ति 2460मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य” रूपमे देल अछि।
- १०८१. (B) गद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
- १०८२. (C) आलेख** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
- १०८३. (D) दुर्गापूजा आ उपनयन जेहन अवसर पर छागर बलिप्रदान प्रथाक विरोध** — टिप्पणीक पहिल संकेत “दुर्गापूजा आ उपनयन जेहन अवसर पर छागर बलिप्रदान प्रथाक विरोध” अछि।

१०८४. (A) दुर्गापूजा आ उपनयन जेहन अवसर पर छागर बलिप्रदान प्रथाक विरोध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दुर्गापूजा आ उपनयन जेहन अवसर पर छागर बलिप्रदान प्रथाक विरोध” रूपमे देखाइत अछि।
१०८५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१०८६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०८७. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१०८८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०८९. (B) खण्ड 3769, सूचकांक पंक्ति 2460मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “दुर्गापूजा आ उपनयन जेहन अवसर पर छागर बलिप्रदान प्रथाक विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०९०. (A) मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास — सूचकांक पंक्ति 2461मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास” रूपमे देल अछि।
१०९१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०९२. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
१०९३. (D) मैथिली लोकगीतक माध्यमे मिथिलाक खानपान संस्कृतिक विवेचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली लोकगीतक माध्यमे मिथिलाक खानपान संस्कृतिक विवेचना” अछि।
१०९४. (A) मैथिली लोकगीतक माध्यमे मिथिलाक खानपान संस्कृतिक विवेचना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली लोकगीतक माध्यमे मिथिलाक खानपान संस्कृतिक विवेचना” रूपमे देखाइत अछि।
१०९५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१०९६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०९७. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१०९८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०९९. (B) खण्ड 3770, सूचकांक पंक्ति 2461मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मैथिली लोकगीतक माध्यमे मिथिलाक खानपान संस्कृतिक विवेचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११००. (A) सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे) — सूचकांक पंक्ति 2462मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)” रूपमे देल अछि।
११०१. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११०२. (C) शोध-आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।
११०३. (D) मिथिलाक सौराठ आ गुजरातक सौराष्ट्र (सोमनाथ) बीचक ऐतिहासिक समानताक खोज — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक सौराठ आ गुजरातक सौराष्ट्र (सोमनाथ) बीचक ऐतिहासिक समानताक खोज” अछि।
११०४. (A) मिथिलाक सौराठ आ गुजरातक सौराष्ट्र (सोमनाथ) बीचक ऐतिहासिक समानताक खोज — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक सौराठ आ गुजरातक सौराष्ट्र (सोमनाथ) बीचक ऐतिहासिक समानताक खोज” रूपमे देखाइत अछि।
११०५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
११०६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११०७. (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
११०८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११०९. (B) खण्ड 3771, सूचकांक पंक्ति 2462मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मिथिलाक सौराठ आ गुजरातक सौराष्ट्र (सोमनाथ) बीचक ऐतिहासिक समानताक खोज” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१११०. (A) गामक कचोट — सूचकांक पंक्ति 2463मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक प्रविष्टि “गामक कचोट” रूपमे देल अछि।

११११. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१११२. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१११३. (D) गामक प्रकृति, लोक-जीवन, खेती-किसानी, पर्व-त्योहार, नदी-पोखर आ पारम्परिक सुगन्ध सँ भरल जीवनक मार्मिक स्मरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “गामक प्रकृति, लोक-जीवन, खेती-किसानी, पर्व-त्योहार, नदी-पोखर आ पारम्परिक सुगन्ध सँ भरल जीवनक मार्मिक स्मरण” अछि।

१११४. (A) गामक प्रकृति, लोक-जीवन, खेती-किसानी, पर्व-त्योहार, नदी-पोखर आ पारम्परिक सुगन्ध सँ भरल जीवनक मार्मिक स्मरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गामक प्रकृति, लोक-जीवन, खेती-किसानी, पर्व-त्योहार, नदी-पोखर आ पारम्परिक सुगन्ध सँ भरल जीवनक मार्मिक स्मरण” रूपमे देखाइत अछि।

१११५. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१११६. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१११७. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१११८. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१११९. (B) खण्ड 3772, सूचकांक पंक्ति 2463मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “गामक कचोट” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “गामक प्रकृति, लोक-जीवन, खेती-किसानी, पर्व-त्योहार, नदी-पोखर आ पारम्परिक सुगन्ध सँ भरल जीवनक मार्मिक स्मरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 29क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

अध्याय ३ : विदेह-सदेह ३० — विस्तृत अध्ययन

खण्ड २५ : विदेह-सदेह ३० — नेपाली मैथिली उच्चारण-लेखन मानक

१. विदेह-सदेह ३० मे कोन देशक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक मानक उच्चारण-लेखन शैलीक उल्लेख अछि?

- (A) नेपाल
- (B) भारत
- (C) बंगलादेश
- (D) कोनो नहि

२. पञ्चमाक्षरमे कोन-कोन अक्षर अबैत अछि?

- (A) ड, ज, ण, न, म
- (B) क, ख, ग, घ, ङ
- (C) केवल अनुस्वार
- (D) कोनो नहि

३. 'अङ्क' शब्दमे अन्तमे 'ङ्' किएक आएल अछि?

- (A) क वर्गक रहबाक कारणे
- (B) ट वर्गक रहबाक कारणे
- (C) प वर्गक रहबाक कारणे
- (D) कोनो नहि

४. 'खण्ड' शब्दमे अन्तमे 'ण्' किएक आएल अछि?

- (A) ट वर्गक रहबाक कारणे
- (B) क वर्गक रहबाक कारणे
- (C) त वर्गक रहबाक कारणे
- (D) कोनो नहि

५. नवीन पद्धतिमे पञ्चमाक्षरक बदला कोन चिह्नक प्रयोग बेसी होइत अछि?

- (A) अनुस्वार
- (B) विसर्ग
- (C) विराम
- (D) कोनो नहि

६. अनुस्वार-प्रयोगक एक हानि की कहल गेल?

- (A) हस्तलेखन/मुद्रणमे बिन्दु स्पष्ट नहि भेने अर्थक अनर्थ
- (B) कोनो हानि नहि
- (C) केवल लाभ
- (D) कोनो नहि

७. 'ढ' क उच्चारण केहन होइत अछि?

- (A) 'र्' ह' जकाँ
- (B) 'ढ' जकाँ बिल्कुल समान
- (C) 'द' जकाँ
- (D) कोनो नहि

८. 'पढ़ाइ' शब्दमे कोन ढ प्रयुक्त अछि?

- (A) ढ (नुक्तासहित)
- (B) ढ (नुक्ता रहित)
- (C) दुनू
- (D) कोनो नहि

९. 'ढाकी' शब्दमे कोन ढ प्रयुक्त अछि?

- (A) ढ (नुक्ता रहित)
- (B) ढ (नुक्तासहित)
- (C) दुनू
- (D) कोनो नहि

१०. विदेह-सदेह ३० क आरम्भिक उद्धरण कीर्तिलताक कोन भागसँ लेल गेल अछि?

- (A) प्रथमः पल्लवः क पहिल दोहा
- (B) अन्तिम पल्लव
- (C) द्वितीय पल्लव
- (D) कोनो नहि

११. विदेह-सदेह ३० क समग्र विषय की?

- (A) मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन मानक
- (B) केवल कथा
- (C) केवल पद्य
- (D) कोनो नहि

खण्ड ६३ : विदेह-सदेह ३० — मैथिली उच्चारण-लेखन नियम (विस्तार)

१२. मैथिलीमे 'ब' क उच्चारण कोना होइत अछि, नियम अनुसार?

- (A) ब जकाँ
- (B) व जकाँ ही
- (C) केवल लिखितमे भिन्न
- (D) कोनो नहि

१३. मैथिलीमे 'य' क उच्चारण कतहु-कतहु कोन ध्वनि जकाँ होइत अछि, मुदा लिखब नहि चाही?

- (A) ज जकाँ
- (B) ब जकाँ
- (C) ख जकाँ
- (D) कोनो नहि

१४. मैथिलीमे 'ष' क उच्चारण अधिकांशतः कोन ध्वनि जकाँ होइत अछि?

- (A) ख
- (B) स
- (C) श
- (D) कोनो नहि

१५. प्राचीन मैथिली लेखन-परम्परामे शब्दक पाछाँ कोन-कोन प्रत्यय बलक लेल जोड़ल जाइत छल?

- (A) हि, हु
- (B) ता, ती
- (C) ओ, एँ
- (D) कोनो नहि

१६. 'ढ' आ 'ढ़' क प्रयोगक सामान्य नियम की?

- (A) शब्दक शुरूमे ढ, मध्य-अन्तमे ढ
- (B) सर्वत्र ढ मात्र
- (C) सर्वत्र ढ मात्र
- (D) कोनो नहि

१७. नवीन वर्तनीमे प्राचीन 'कएल, जाए, माए' क बदला की लिखल जाइत अछि?

- (A) कयल, जाय, माय
- (B) केयल, जायि, मायि
- (C) कोनो परिवर्तन नहि
- (D) कोनो नहि

१८. एहि पोथीमे 'ए' आ 'य' क प्रयोगमे कोन पद्धतिक अनुसरण कएल गेल अछि, आ किएक?

- (A) प्राचीन पद्धति, किएक तँ दुनूमे कोनो विशेष सहजता-दुरुहताक भेद नहि
- (B) नवीन पद्धति
- (C) दुनू मिश्रित
- (D) कोनो नहि

खण्ड ७१ : विदेह-सदेह ३० — मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव

१९. एफ्रा बेनक उपन्यास 'ओरूनोको' क नायक कोन विशेषताक छथि?

- (A) कारी रंगक दास
- (B) राजकुमार
- (C) विदेशी सैनिक
- (D) कोनो नहि

२०. हैनरी फिल्डिंगक 'टॉम जोन्स' मे कोन सामाजिक प्रवृत्तिक आलोचना भेल अछि?

- (A) सामंतवादक आलोचना
- (B) साम्राज्यवादक आलोचना
- (C) धर्मक आलोचना
- (D) कोनो नहि

२१. रुडयार्ड किपलिंगक उपन्यास 'किम' क मूल वृत्ति की कहल गेल?

- (A) यूरोपी साम्राज्यवादक बहन्ना (justification) तकब
- (B) साम्राज्यवादक आलोचना
- (C) समाजवादक प्रचार
- (D) कोनो नहि

२२. हरिमोहन झाक उपन्यास 'कन्यादान आ द्विरागमन' मे की चित्रण भेल अछि?

- (A) मिथिलाक सामाजिक व्यवस्था, महिला-शिक्षा आ अंध-पाश्चात्यकरणक हास्य-व्यंग्य
- (B) केवल प्रेम-कथा
- (C) ऐतिहासिक युद्ध
- (D) कोनो नहि

२३. यात्रीक 'बलचनमा' कोन जातिक आत्मकथ्यक रूपमे रचल गेल?

- (A) यादव जाति
- (B) ब्राह्मण जाति
- (C) कायस्थ जाति
- (D) कोनो नहि

२४. 'बलचनमा' उपन्यासमे मुख्यपात्र की संघर्ष करैत छथि?

- (A) टहलुआसँ किसानक हक प्राप्त करबाक संघर्ष
- (B) विदेश-यात्रा
- (C) धन-सम्पत्ति
- (D) कोनो नहि

२५. रमानन्द रेणुक उपन्यास 'दूध-फूल' केकरापर केन्द्रित अछि?

- (A) समाजक उपेक्षित वर्ग
- (B) राजवंश
- (C) विदेशी पात्र
- (D) कोनो नहि

२६. ललितक उपन्यास 'पृथ्वीपुत्र' कोन विषयपर केन्द्रित अछि?

- (A) कृषक जीवनक आर्थिक समस्या
- (B) विदेश-यात्रा
- (C) नगरीय जीवन
- (D) कोनो नहि

२७. लिली रेक उपन्यास 'पटाक्षेप' क मूल विषय की?

- (A) वामपंथक वर्ग-संघर्षक उत्थान-पतन
- (B) धार्मिक यात्रा
- (C) राजपरिवार
- (D) कोनो नहि

२८. 'धूमकेतुक मोड़ पर' उपन्यासक कथा-कथन-शैली की?

- (A) बैकफ्लैश (फ्लैशबैक) शैली
- (B) सीधा कालक्रमिक
- (C) पत्र-शैली
- (D) कोनो नहि

खण्ड ८२ : विदेह-सदेह ३० — संस्कृतसँ मैथिली धरिक ऐतिहासिक भाषिक यात्रा (अवहट्ट)

२९. भारतीय आर्यभाषा समूहमे अवहट्टक कालखण्ड की मानल जाइत अछि, आलेख अनुसार?

- (A) ९०० ई. सँ ११०० ई. धरि
- (B) ५०० ई.पू. सँ १०० ई.पू. धरि
- (C) १०० ई.पू. सँ ५०० ई. धरि
- (D) कोनो नहि

३०. ज्योतिरीश्वर अनुसार भाट कतेक भाषाक तत्वज्ञ होइत छथि, आलेख अनुसार?

- (A) छह भाषा (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, पैशाची, सौरसेनी, मागधी)
- (B) तीन भाषा
- (C) दस भाषा
- (D) कोनो नहि

३१. अवहट्टकें ऐतिहासिक आधारपर भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणमे की कहल जाइत अछि?

- (A) मैथिल अपभ्रंश
- (B) पुरान मैथिली
- (C) मागधी प्राकृत
- (D) कोनो नहि

३२. विद्यापतिक कोन रचना अवहट्टमे रचल गेल अछि, आलेख अनुसार?

- (A) कीर्तिलता
- (B) चर्या गीत
- (C) वर्ण रत्नाकर
- (D) कोनो नहि

३३. 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' ग्रन्थक रचनाकार के छथि, आलेख अनुसार?

- (A) दामोदर पंडित
- (B) ज्योतिरीश्वर
- (C) विद्यापति
- (D) कोनो नहि

३४. जोराष्ट्रियन धर्मक 'अवेस्ता' ग्रन्थ कोन भाषा-समूहक ग्रन्थ अछि, आलेख अनुसार?

- (A) ईरानी भाषा समूह
- (B) भारतीय आर्यभाषा समूह
- (C) द्रविड़ भाषा समूह
- (D) कोनो नहि

३५. इन्डो आर्यन भाषा समूहमे सभसँ प्राचीन ग्रन्थ कोन मानल गेल अछि, आलेख अनुसार?

- (A) ऋग्वेद
- (B) अवेस्ता
- (C) वर्णरत्नाकर
- (D) कोनो नहि

३६. ऋग्वेदमे गाथा-गायकक लेल कोन-कोन शब्दक प्रयोग भेल अछि, आलेख अनुसार?

- (A) गाथिन, गातुविद्, गाथपति
- (B) केवल गायक
- (C) केवल ऋषि
- (D) कोनो नहि

खण्ड ८३ : विदेह-सदेह ३० — मिथिलांचलक पालकालीन शिव-गणेश मूर्तिकला

३७. शिवक पुरातात्विक सर्वप्राचीन अवशेष कोन रूपमे मानल जाइत अछि, आलेख अनुसार?

- (A) मोहनजोदड़ोक पशुपति शिव
- (B) चिदम्बरमक नटराज
- (C) तारालाहीक नटराज
- (D) कोनो नहि

३८. नटराज शिवक विलक्षण पालकालीन प्रस्तर मूर्ति कतय पूजित अछि, आलेख अनुसार?

- (A) तारालाही (दरभंगा)
- (B) करियन (समस्तीपुर)
- (C) भोजपुरौल (मधुबनी)
- (D) कोनो नहि

३९. मिथिलांचलमे गणेशक स्वतंत्र मूर्तिक सबसँ लोकप्रिय कतेक रूप अछि, आलेख अनुसार?

- (A) दू रूप (पद्मासीन गणेश आ नृत्य गणेश)
- (B) एक रूप
- (C) चारि रूप
- (D) कोनो नहि

४०. कोर्थक (दरभंगा)क नृत्यगणेश मूर्ति कतेक भुजाक अछि, आलेख अनुसार?

- (A) अष्टभुजी
- (B) चतुर्भुजी
- (C) द्विभुजी
- (D) कोनो नहि

४१. गणेशक वाहन की मानल गेल अछि, आलेख अनुसार?

- (A) मूषक (मुस)
- (B) गज
- (C) वृषभ
- (D) कोनो नहि

४२. करियन (रोसड़ा, समस्तीपुर) के वैदिक धर्मक कोन न्यायविद्क जन्मभूमि मानल जाइत अछि, आलेख अनुसार?

- (A) आचार्य उदयन
- (B) गंगेश उपाध्याय
- (C) वाचस्पति मिश्र
- (D) कोनो नहि

४३. शिवक पशुपति-नाम केर सार्थकता कोना देल गेल अछि, आलेख अनुसार?

- (A) वेद-उपनिषद्-पुराण साहित्यमे प्राणिमात्रकें पशु कहल गेल अछि
- (B) केवल वृषभ-वाहनक कारण
- (C) केवल त्रिशूल-धारणक कारण
- (D) कोनो नहि

४४. 'ताल' शब्दक शाब्दिक रचना कोन दू अक्षरसँ भेल अछि, आलेख अनुसार?

- (A) 'ता' आ 'ल'
- (B) 'त' आ 'आल'
- (C) 'ताल' अविभाज्य अछि
- (D) कोनो नहि

खण्ड 3773 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश

४५. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) नाटक समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विदेह सम्पादक

४९. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विदेह सम्पादक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ नाटक समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५३. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४. खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464मे गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश” प्रविष्टि गद्य, नाटक समीक्षा आ “विदेह सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3774 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता

५५. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली समालोचनाक मूल्यांकन

५९. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली समालोचनाक मूल्यांकन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६३. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४. खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “मैथिली समालोचनाक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3775 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव

६५. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध/आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) तुलनात्मक साहित्य अध्ययन

६९. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) तुलनात्मक साहित्य अध्ययन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७३. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४. खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “तुलनात्मक साहित्य अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3776 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंगरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"

७५. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंगरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंगरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पेंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पेंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) नाटक समालोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पेंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उत्तर-आधुनिक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन

७९. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पेंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उत्तर-आधुनिक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पेंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक समालोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पेंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पेंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ नाटक समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८३. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पेंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४. खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467मे गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पेंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"” प्रविष्टि गद्य, नाटक समालोचना आ “उत्तर-आधुनिक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3777 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: इन्फॉर्मेशन सोसाइटी

८५. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉर्मेशन सोसाइटी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) इन्फॉर्मेशन सोसाइटी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉर्मेशन सोसाइटी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉर्मेशन सोसाइटी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉर्मेशन सोसाइटी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सूचना समाज दर्शन

८९. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉर्मेशन सोसाइटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सूचना समाज दर्शन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉर्मेशन सोसाइटी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉर्मेशन सोसाइटी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉर्मेशन सोसाइटी”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९३. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉर्मेशन सोसाइटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४. खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468मे गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉर्मेशन सोसाइटी” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सूचना समाज दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3778 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान

९५. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९८. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विधि आ अधिकार चिन्तन

९९. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विधि आ अधिकार चिन्तन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०३. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४. खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469मे गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “विधि आ अधिकार चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3779 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन

१०५. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक कृति समीक्षा

१०९. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११३. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४. खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470मे गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “साहित्यिक कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3780 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन

११५. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) भाषाशास्त्र
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण

११९. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा भाषाशास्त्र
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ भाषाशास्त्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२३. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४. खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471मे गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन” प्रविष्टि गद्य, भाषाशास्त्र आ “मैथिली भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3781 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त

१२५. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-लेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अनुवाद सिद्धान्तक मौलिक प्रतिपादन

१२९. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अनुवाद सिद्धान्तक मौलिक प्रतिपादन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३३. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४. खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “अनुवाद सिद्धान्तक मौलिक प्रतिपादन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3782 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान

१३५. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) भाषाशास्त्र
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली भाषाक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान

१३९. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली भाषाक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा भाषाशास्त्र
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ भाषाशास्त्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४३. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४. खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473मे गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान” प्रविष्टि गद्य, भाषाशास्त्र आ “मैथिली भाषाक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3783 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)

१४५. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) जीवनी/निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आम्बेडकरवादी चिन्तन

१४९. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आम्बेडकरवादी चिन्तन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)” के विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ जीवनी/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५३. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४. खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474मे गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/निबन्ध आ “आम्बेडकरवादी चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3784 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता

१५५. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जाति आ संस्कृत शिक्षाक समीक्षा

१५९. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जाति आ संस्कृत शिक्षाक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६३. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४. खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475मे गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “जाति आ संस्कृत शिक्षाक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3785 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: साहित्यिक रचना

१६५. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) साहित्यिक रचना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रचना प्रक्रियाक सिद्धान्त

१६९. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रचना प्रक्रियाक सिद्धान्त
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७३. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४. खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476मे गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “रचना प्रक्रियाक सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3786 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा

१७५. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कथा संग्रह समीक्षा

१७९. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कथा संग्रह समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८३. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४. खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477मे गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3787 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर

१८५. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास “चमेली रानी” आ माहुर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उपन्यास समीक्षा

१८९. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास “चमेली रानी” आ माहुर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उपन्यास समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास “चमेली रानी” आ माहुर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास “चमेली रानी” आ माहुर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास “चमेली रानी” आ माहुर”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९३. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास “चमेली रानी” आ माहुर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४. खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478मे गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास “चमेली रानी” आ माहुर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3788 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत

१९५. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध/निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) क्षेत्रीय अध्ययन

१९९. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) क्षेत्रीय अध्ययन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध/निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०३. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४. खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479मे गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत” प्रविष्टि गद्य, शोध/निबन्ध आ “क्षेत्रीय अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3789 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: वर्णमाला शिक्षा: अंकिता

२०५. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) वर्णमाला शिक्षा: अंकिता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शिक्षा निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली वर्णमाला शिक्षण

२०९. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली वर्णमाला शिक्षण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शिक्षा निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शिक्षा निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१३. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४. खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480मे गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकिता” प्रविष्टि गद्य, शिक्षा निबन्ध आ “मैथिली वर्णमाला शिक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3790 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)

२१५. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) गजलकार समीक्षा

२१९. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) गजलकार समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२३. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४. खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481मे गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “गजलकार समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3791 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह

२२५. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लघुकथा संग्रह समीक्षा

२२९. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लघुकथा संग्रह समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह”केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३३. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३४. खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482मे गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “लघुकथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3792 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: राजदेव मण्डलक अम्बरा

२३५. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) राजदेव मण्डलक अम्बरा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कृति समीक्षा

२३९. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कृति समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४३. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४. खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483मे गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3793 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"

२४५. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध/समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक साहित्य आ जनकवि परम्परा

२४९. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक साहित्य आ जनकवि परम्परा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५०. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध/समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५१. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारुदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारुदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"” केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५३. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारुदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५४. खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारुदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"” प्रविष्टि गद्य, शोध/समीक्षा आ “लोक साहित्य आ जनकवि परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3794 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"

२५५. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५६. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५७. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५८. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक ”माँझ आंगनमे कतिआएल छी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कविता समीक्षा

२५९. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक ”माँझ आंगनमे कतिआएल छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कविता समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६०. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक ”माँझ आंगनमे कतिआएल छी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६१. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक ”माँझ आंगनमे कतिआएल छी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक ”माँझ आंगनमे कतिआएल छी”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६३. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक ”माँझ आंगनमे कतिआएल छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६४. खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485मे गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक ”माँझ आंगनमे कतिआएल छी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3795 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"

२६५. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६६. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६७. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६८. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कथा संग्रह समीक्षा

२६९. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कथा संग्रह समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७०. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७१. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह “प्रतीक””कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७३. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह “प्रतीक”” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७४. खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486मे गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह “प्रतीक”” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3796 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह “रथक चक्का उलटि चलै बाट”

२७५. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह “रथक चक्का उलटि चलै बाट”” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह “रथक चक्का उलटि चलै बाट”
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७६. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह “रथक चक्का उलटि चलै बाट””क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह “रथक चक्का उलटि चलै बाट””क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७८. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह “रथक चक्का उलटि चलै बाट”” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कविता संग्रह समीक्षा

२७९. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कविता संग्रह समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८०. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८१. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८३. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८४. खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487मे गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3797 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह

२८५. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) उमेश मण्डल जीक "निश्तुकी" कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८६. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक “निश्तुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक “निश्तुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८८. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक “निश्तुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कविता संग्रह समीक्षा

२८९. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक “निश्तुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कविता संग्रह समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९०. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक “निश्तुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९१. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक “निश्तुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक “निश्तुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९३. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक “निशुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९४. खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488मे गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक “निशुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3798 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस”

२९५. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस”” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस”
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९६. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस””क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस””क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९८. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस”” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कविता संग्रह समीक्षा

२९९. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस”” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कविता संग्रह समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३००. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस””क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०१. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस”” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०२. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस””केँ विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०३. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस”” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०४. खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489मे गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस”” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 3799 : विदेह-सदेह 30 — गजेन्द्र ठाकुर: सुजीतक जिद्दी

३०५. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सुजीतक जिद्दी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०६. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०७. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०८. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कथा संग्रह समीक्षा

३०९. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कथा संग्रह समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१०. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३११. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१२. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी”कें विदेह-सदेह 30क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१३. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 30क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१४. खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490मे गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१. (A) नेपाल — विदेह-सदेह ३० मे नेपालक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक उच्चारण आ लेखन शैलीक उल्लेख अछि।
२. (A) ड, ज, ण, न, म — पञ्चमाक्षरान्तर्गत ड, ज, ण, न आ म — पाँच अक्षर अबैत अछि, जे हर वर्गक पाँचम अक्षर थिक।
३. (A) क वर्गक रहबाक कारणे — ‘अङ्क’ शब्द क वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ङ् (पञ्चमाक्षर) आएल अछि।
४. (A) ट वर्गक रहबाक कारणे — ‘खण्ड’ शब्द ट वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ण् आएल अछि।
५. (A) अनुस्वार — नवीन पद्धतिमे पञ्चमाक्षरक बदलामे अधिकांश ठाम अनुस्वारक प्रयोग देखल जाइत अछि (जेना अंक, पंच, खंड)।
६. (A) हस्तलेखन/मुद्रणमे बिन्दु स्पष्ट नहि भेने अर्थक अनर्थ — अनुस्वार-प्रयोगक हानि अछि जे कतोकबेर हस्तलेखन वा मुद्रणमे अनुस्वारक छोटसन बिन्दु स्पष्ट नहि भेने अर्थक अनर्थ होइत अछि।
७. (A) ‘र् ह’ जकाँ — मानक अनुसार ढक उच्चारण ‘र् ह’ जकाँ होइत अछि, जे ढसँ भिन्न अछि।
८. (A) ढ (नुक्तासहित) — ‘पढ़ाइ’ मे ढ (नुक्तासहित) प्रयुक्त अछि, किएक तँ एतय ‘र् ह’ सन उच्चारण होइत अछि।
९. (A) ढ (नुक्ता रहित) — ‘ढाकी’ मे साधारण ढ (नुक्ता रहित) प्रयुक्त अछि।
१०. (A) प्रथमः पल्लवः क पहिल दोहा — विदेह-सदेह ३० क आरम्भिक उद्धरण कीर्तिलताक प्रथमः पल्लवः क पहिल दोहासँ लेल गेल अछि — ‘अक्खर खम्भारम्भ जउ मज्जो बन्धि न देइ’।
११. (A) मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन मानक — विदेह-सदेह ३० क समग्र विषय मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखनक मानकीकरण (पञ्चमाक्षर, ढ-ढ़ आदि) थिक।
१२. (A) ब जकाँ — नियम अनुसार मैथिलीमे ‘व’ क उच्चारण ‘ब’ कएल जाइत अछि, मुदा ओकरा लेखनमे ‘ब’ रूपमे नहि लिखल जाएबाक चाही — जेना वैद्यनाथ, विद्या, वंश आदि शब्द उच्चारणमे ‘वैद्यनाथ, बिद्या, बंश’ सन सुनाइत अछि मुदा लेखनमे ‘व’ रहैत अछि।
१३. (A) ज जकाँ — नियम अनुसार कतहु-कतहु ‘य’ क उच्चारण ‘ज’ जकाँ करैत देखल जाइत अछि (जेना यज्ञ, यमुना), मुदा लेखनमे ओकरा ‘ज’ नहि लिखबाक चाही।
१४. (A) ख — नियम अनुसार मैथिली भाषामे अधिकांशतः ‘ष’ क उच्चारण ‘ख’ जकाँ होइत अछि (जेना षड्यन्त्र-खड्यन्त्र, षोडशी-खोडशी, सन्तोष-सन्तोख)।
१५. (A) हि, हु — प्राचीन लेखन-परम्परामे कोनो बातपर बल दैत काल शब्दक पाछाँ ‘हि’ आ ‘हु’ लगाओल जाइत छल (जेना हुनकहि, अपनहु, ओकरहु)।
१६. (A) शब्दक शुरूमे ढ, मध्य-अन्तमे ढ — सामान्यतया शब्दक शुरूमे ‘ढ’ अबैत अछि (जेना ढाकी, ढेकी), जखन कि मध्य आ अन्तमे ‘ढ़’ अबैत अछि (जेना पढ़ाइ, बढ़ब, साँढ़) — इएह नियम ‘ड’ आ ‘ड़’ क लेल सेहो लागू होइत अछि।
१७. (A) कयल, जाय, माय — नवीन वर्तनी अनुसार प्राचीन ‘कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए’ क बदला ‘कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय’ लिखल जाइत अछि।
१८. (A) प्राचीन पद्धति, किएक तँ दुनूमे कोनो विशेष सहजता-दुरुहताक भेद नहि — एहि पोथीमे प्राचीन पद्धतिक अनुसरण उपयुक्त मानल गेल अछि, किएक तँ दुनू (प्राचीन-नवीन) क लेखनमे कोनो विशेष सहजता वा दुरुहताक भेद नहि अछि।
१९. (A) कारी रंगक दास — एफ्रा बेनक उपन्यास ‘ओरूनोको’ क नायक कारी रंगक दास छथि।
२०. (A) सामंतवादक आलोचना — हैनरी फिल्लिंग ‘टॉम जोन्स’ मे सामंतवादक आलोचना केने छथि आ समाजक विकृतिक चित्रण केने छथि।
२१. (A) यूरोपी साम्राज्यवादक बहन्ना (justification) तकब — रुडयार्ड किपलिंगक उपन्यास ‘किम’ यूरोपी साम्राज्यवादक लेल एक बहन्ना तर्कैत अछि, यूरोपी सभ्यताकें उच्च मानैत।
२२. (A) मिथिलाक सामाजिक व्यवस्था, महिला-शिक्षा आ अंध-पाश्चात्यकरणक हास्य-व्यंग्य — हरिमोहन झाक ‘कन्यादान आ द्विरागमन’ मिथिलाक बहुत रास सामाजिक व्यवस्था, महिला-शिक्षा आ अंध-पाश्चात्यकरणक हास्य-व्यंग्यात्मक चित्रण करैत अछि।
२३. (A) यादव जाति — यात्रीक ‘बलचनमा’ यादव जातिक बलचनमाक आत्मकथक रूपमे रचल गेल, जकर मूल विषय आर्थिक समस्या थिक।
२४. (A) टहलुआसँ किसानक हक प्राप्त करबाक संघर्ष — ‘बलचनमा’ क मुख्यपात्र कोना एकटा टहल करनिहारसँ आगाँ बढ़ि किसानक हक लेल जान दैत छथि, ताहिक चित्रण भेल अछि।
२५. (A) समाजक उपेक्षित वर्ग — रमानन्द रेणुक उपन्यास ‘दूध-फूल’ समाजक उपेक्षित वर्गकें सोझाँमे रखैत अछि आ कलात्मक उपस्थापन करैत अछि।

२६. (A) कृषक जीवनक आर्थिक समस्या — ललितक उपन्यास ‘पृथ्वीपुत्र’ समाजक उपेक्षित वर्ग आ कृषक जीवनक आर्थिक समस्यापर केन्द्रित अछि।
२७. (A) वामपंथक वर्ग-संघर्षक उत्थान-पतन — लिली रेक उपन्यास ‘पटाक्षेप’ वामपंथक वर्ग-संघर्षक उत्थान आ फेर ओकर दमनक कथा कहैत अछि।
२८. (A) बैकफ्लैश (फ्लैशबैक) शैली — ‘धूमकेतुक मोड़ पर’ वामपंथी विचारक आलोकमे सामाजिक-आर्थिक समस्याक कथा बैकफ्लैश (फ्लैशबैक) शैलीमे कहैत अछि।
२९. (A) ९०० ई. सँ ११०० ई. धरि — आलेख अनुसार भारतीय आर्यभाषा समूहमे अवहट्ट ९०० ई. सँ ११०० ई. धरिक कालखण्डक मानल जाइत अछि, जे अपभ्रंशक बाद आ मागधी-प्राकृतसँ मैथिली आदिक उत्पत्तिसँ पहिने अबैत अछि।
३०. (A) छह भाषा (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, पेशाची, सौरसेनी, मागधी) — आलेख अनुसार ज्योतिरीश्वर लिखलनि अछि— ‘पुनः कइसन भाट- संस्कृत, पराकृत, अवहट्ट, पेशाची, सौरसेनी, मागधी छह भाषाक तत्त्वज्ञ’।
३१. (A) मैथिल अपभ्रंश — आलेख अनुसार अवहट्ट (अवहट्ट)कें ऐतिहासिक आधारपर भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणमे ‘मैथिल अपभ्रंश’ कहल जाइत अछि, मागधी प्राकृतसँ एकर विकास दृष्टिगोचर होइत अछि।
३२. (A) कीर्तिलता — आलेख अनुसार विद्यापतिक ‘कीर्तिलता’ अवहट्टमे अछि, जखन कि ‘चर्या गीत’ आ ‘वर्ण रत्नाकर’ कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती होएबाक बादो पुरान मैथिली अछि।
३३. (A) दामोदर पंडित — आलेख अनुसार दामोदर पंडितक ‘उक्ति व्यक्ति प्रकरण’ कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती अछि, मुदा पुरान अवधी आ पुरान कोशलीक प्रतिमान प्रस्तुत करैत अवहट्टसँ लग अछि।
३४. (A) ईरानी भाषा समूह — आलेख अनुसार जोराष्ट्रियन धर्मक अवेस्ता ग्रन्थ वैदिक कालक अछि आ ओ अवेस्ता भाषाक ग्रन्थ अछि, जे ईरानी भाषा समूहमे आबैत अछि।
३५. (A) ऋग्वेद — आलेख अनुसार इन्डो आर्यन वा भारतीय-ईरानी भाषा समूहमे ऋग्वेद सभसँ प्राचीन अछि।
३६. (A) गाथिन, गातुविद्, गाथपति — आलेख अनुसार गाथा सभक गायकक लेल ‘गाथिन’, ‘गातुविद्’ आ ‘गाथपति’ शब्द ऋग्वेदमे प्रयुक्त भेल अछि।
३७. (A) मोहनजोदड़ोक पशुपति शिव — आलेख अनुसार शिवक पुरातात्विक सर्वप्राचीन अवशेषक रूपमे मोहनजोदड़ोक पशुपति शिव अछि, जे समस्त जीव-जन्तुक अधिपति बनल छथि।
३८. (A) तारालाही (दरभंगा) — आलेख अनुसार नटराज शिवक एकटा विलक्षण पालकालीन प्रस्तर मूर्ति तारालाही (दरभंगा)मे पूजित अछि, जाहिमे नटराज शिव दैत्यपुत्र अपस्मारक कान्हपर ठाढ़ भऽ नृत्यरत छथि।
३९. (A) दू रूप (पद्मासीन गणेश आ नृत्य गणेश) — आलेख अनुसार गणेशक स्वतंत्र मूर्तिक दूटा रूप मिथिलांचलमे सर्वाधिक लोकप्रिय अछि— पद्मासीन गणेश आ नृत्य गणेश।
४०. (A) अष्टभुजी — आलेख अनुसार कोर्थक (दरभंगा)क अष्टभुजी नृत्यगणेशक मूर्ति (आकार २४”*१०”) कमलासनपर नृत्य भंगिमामे भक्त सभक वरदायी बनल छथि, जकरा आदर्श मूर्ति मानल गेल अछि।
४१. (A) मूषक (मुस) — आलेख अनुसार गणेशक वाहन मूषक छनि, जे विघ्नक द्योतक मानल जाइत अछि।
४२. (A) आचार्य उदयन — आलेख अनुसार करियनकें वैदिक धर्मक न्यायविद् आचार्य उदयनक जन्मभूमि एवं ब्राह्मण देवी-देवता सभक सिद्ध भूमि मानल जाइछ।
४३. (A) वेद-उपनिषद-पुराण साहित्यमे प्राणिमात्रकें पशु कहल गेल अछि — आलेख अनुसार वेद, उपनिषद एवं पुराण साहित्यमे प्राणिमात्रकें पशु कहल गेल अछि, अतः शिवक पशुपति नाम सार्थक अछि।
४४. (A) ‘ता’ आ ‘ल’ — आलेख अनुसार ‘ताल’क शाब्दिक रचना ‘ता’ आ ‘ल’ सँ भेल अछि, अतः शिव ओ शिवा नृत्यमय छथि, संगीत-नाट्यादिक आदि प्रवर्तक छथि।
४५. (A) नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश — सूचकांक पंक्ति 2464मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश” रूपमे देल अछि।
४६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४७. (C) नाटक समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक समीक्षा” अछि।
४८. (D) विदेह सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सम्पादक” अछि।
४९. (A) विदेह सम्पादक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह सम्पादक” रूपमे देखाइत अछि।

५०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५२. (D) ई पाठ नाटक समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५४. (B) खण्ड 3773, सूचकांक पंक्ति 2464मे गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश” प्रविष्टि गद्य, नाटक समीक्षा आ “विदेह सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५५. (A) मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता — सूचकांक पंक्ति 2465मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता” रूपमे देल अछि।
५६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५७. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।
५८. (D) मैथिली समालोचनाक मूल्यांकन — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली समालोचनाक मूल्यांकन” अछि।
५९. (A) मैथिली समालोचनाक मूल्यांकन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली समालोचनाक मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।
६०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६२. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६४. (B) खण्ड 3774, सूचकांक पंक्ति 2465मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “मैथिली समालोचनाक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६५. (A) मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव — सूचकांक पंक्ति 2466मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव” रूपमे देल अछि।
६६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६७. (C) शोध/आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/आलोचना” अछि।
६८. (D) तुलनात्मक साहित्य अध्ययन — टिप्पणीक पहिल संकेत “तुलनात्मक साहित्य अध्ययन” अछि।
६९. (A) तुलनात्मक साहित्य अध्ययन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तुलनात्मक साहित्य अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।
७०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध/आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७२. (D) ई पाठ शोध/आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७४. (B) खण्ड 3775, सूचकांक पंक्ति 2466मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव” प्रविष्टि गद्य, शोध/आलोचना आ “तुलनात्मक साहित्य अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७५. (A) चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बेकेटक फ्रेंच नाटक “वेटिंग फॉर गोडो”, हैरोल्ड पेंटरक अंग्रेजी नाटक “द बर्थडे पार्टी”, बादल सरकारक बांग्ला नाटक “एवम् इन्द्रजीत” आ उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’क मैथिली नाटक “नो एण्ट्री: मा प्रविश” — सूचकांक पंक्ति 2467मे गजेन्द्र

ठाकुरक प्रविष्टि “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पेंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"” रूपमे देल अछि।

७६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७७. (C) नाटक समालोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक समालोचना” अछि।

७८. (D) उत्तर-आधुनिक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन — टिप्पणीक पहिल संकेत “उत्तर-आधुनिक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन” अछि।

७९. (A) उत्तर-आधुनिक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उत्तर-आधुनिक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।

८०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा नाटक समालोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

८१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८२. (D) ई पाठ नाटक समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

८३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८४. (B) खण्ड 3776, सूचकांक पंक्ति 2467मे गजेन्द्र ठाकुरक “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पेंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"” प्रविष्टि गद्य, नाटक समालोचना आ “उत्तर-आधुनिक नाटकक तुलनात्मक अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८५. (A) इन्फॉर्मेशन सोसाइटी — सूचकांक पंक्ति 2468मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “इन्फॉर्मेशन सोसाइटी” रूपमे देल अछि।

८६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८७. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

८८. (D) सूचना समाज दर्शन — टिप्पणीक पहिल संकेत “सूचना समाज दर्शन” अछि।

८९. (A) सूचना समाज दर्शन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सूचना समाज दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

९०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

९१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९२. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

९३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९४. (B) खण्ड 3777, सूचकांक पंक्ति 2468मे गजेन्द्र ठाकुरक “इन्फॉर्मेशन सोसाइटी” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “सूचना समाज दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९५. (A) सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान — सूचकांक पंक्ति 2469मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान” रूपमे देल अछि।

९६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९७. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

९८. (D) विधि आ अधिकार चिन्तन — टिप्पणीक पहिल संकेत “विधि आ अधिकार चिन्तन” अछि।

९९. (A) विधि आ अधिकार चिन्तन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विधि आ अधिकार चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।

१००. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१०१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०२. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१०३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०४. (B) खण्ड 3778, सूचकांक पंक्ति 2469मे गजेन्द्र ठाकुरक “सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “विधि आ अधिकार चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०५. (A) अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन — सूचकांक पंक्ति 2470मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन” रूपमे देल अछि।
१०६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०७. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१०८. (D) साहित्यिक कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक कृति समीक्षा” अछि।
१०९. (A) साहित्यिक कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
११०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१११. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११२. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
११३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११४. (B) खण्ड 3779, सूचकांक पंक्ति 2470मे गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “साहित्यिक कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११५. (A) नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन — सूचकांक पंक्ति 2471मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन” रूपमे देल अछि।
११६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११७. (C) भाषाशास्त्र — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भाषाशास्त्र” अछि।
११८. (D) मैथिली भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण” अछि।
११९. (A) मैथिली भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।
१२०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा भाषाशास्त्र — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१२१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२२. (D) ई पाठ भाषाशास्त्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१२३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२४. (B) खण्ड 3780, सूचकांक पंक्ति 2471मे गजेन्द्र ठाकुरक “नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन” प्रविष्टि गद्य, भाषाशास्त्र आ “मैथिली भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२५. (A) मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त — सूचकांक पंक्ति 2472मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त” रूपमे देल अछि।
१२६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२७. (C) शोध-लेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-लेख” अछि।
१२८. (D) अनुवाद सिद्धान्तक मौलिक प्रतिपादन — टिप्पणीक पहिल संकेत “अनुवाद सिद्धान्तक मौलिक प्रतिपादन” अछि।
१२९. (A) अनुवाद सिद्धान्तक मौलिक प्रतिपादन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अनुवाद सिद्धान्तक मौलिक प्रतिपादन” रूपमे देखाइत अछि।
१३०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध-लेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१३१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३२. (D) ई पाठ शोध-लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१३३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३४. (B) खण्ड 3781, सूचकांक पंक्ति 2472मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त” प्रविष्टि गद्य, शोध-लेख आ “अनुवाद सिद्धान्तक मौलिक प्रतिपादन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३५. (A) भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान — सूचकांक पंक्ति 2473मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान” रूपमे देल अछि।
१३६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३७. (C) भाषाशास्त्र — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भाषाशास्त्र” अछि।
१३८. (D) मैथिली भाषाक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली भाषाक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान” अछि।
१३९. (A) मैथिली भाषाक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली भाषाक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान” रूपमे देखाइत अछि।
१४०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा भाषाशास्त्र — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१४१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४२. (D) ई पाठ भाषाशास्त्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१४३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४४. (B) खण्ड 3782, सूचकांक पंक्ति 2473मे गजेन्द्र ठाकुरक “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान” प्रविष्टि गद्य, भाषाशास्त्र आ “मैथिली भाषाक ऐतिहासिक भाषाविज्ञान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४५. (A) डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६) — सूचकांक पंक्ति 2474मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)” रूपमे देल अछि।
१४६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४७. (C) जीवनी/निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “जीवनी/निबन्ध” अछि।
१४८. (D) आम्बेडकरवादी चिन्तन — टिप्पणीक पहिल संकेत “आम्बेडकरवादी चिन्तन” अछि।
१४९. (A) आम्बेडकरवादी चिन्तन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आम्बेडकरवादी चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।
१५०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा जीवनी/निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१५१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५२. (D) ई पाठ जीवनी/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१५३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५४. (B) खण्ड 3783, सूचकांक पंक्ति 2474मे गजेन्द्र ठाकुरक “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)” प्रविष्टि गद्य, जीवनी/निबन्ध आ “आम्बेडकरवादी चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५५. (A) छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता — सूचकांक पंक्ति 2475मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता” रूपमे देल अछि।
१५६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१५७. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

१५८. (D) जाति आ संस्कृत शिक्षाक समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “जाति आ संस्कृत शिक्षाक समीक्षा” अछि।

१५९. (A) जाति आ संस्कृत शिक्षाक समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जाति आ संस्कृत शिक्षाक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

१६०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१६१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१६२. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१६३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१६४. (B) खण्ड 3784, सूचकांक पंक्ति 2475मे गजेन्द्र ठाकुरक “छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “जाति आ संस्कृत शिक्षाक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१६५. (A) साहित्यिक रचना — सूचकांक पंक्ति 2476मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “साहित्यिक रचना” रूपमे देल अछि।

१६६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१६७. (C) निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध” अछि।

१६८. (D) रचना प्रक्रियाक सिद्धान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “रचना प्रक्रियाक सिद्धान्त” अछि।

१६९. (A) रचना प्रक्रियाक सिद्धान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रचना प्रक्रियाक सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।

१७०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१७१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१७२. (D) ई पाठ निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१७३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१७४. (B) खण्ड 3785, सूचकांक पंक्ति 2476मे गजेन्द्र ठाकुरक “साहित्यिक रचना” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ “रचना प्रक्रियाक सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१७५. (A) बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा — सूचकांक पंक्ति 2477मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा” रूपमे देल अछि।

१७६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१७७. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

१७८. (D) कथा संग्रह समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा संग्रह समीक्षा” अछि।

१७९. (A) कथा संग्रह समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

१८०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१८१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१८२. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१८३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१८४. (B) खण्ड 3786, सूचकांक पंक्ति 2477मे गजेन्द्र ठाकुरक “बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१८५. (A) केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर — सूचकांक पंक्ति 2478मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर” रूपमे देल अछि।
१८६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८७. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१८८. (D) उपन्यास समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास समीक्षा” अछि।
१८९. (A) उपन्यास समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
१९०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१९१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९२. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१९३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९४. (B) खण्ड 3787, सूचकांक पंक्ति 2478मे गजेन्द्र ठाकुरक “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९५. (A) फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत — सूचकांक पंक्ति 2479मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत” रूपमे देल अछि।
१९६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९७. (C) शोध/निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/निबन्ध” अछि।
१९८. (D) क्षेत्रीय अध्ययन — टिप्पणीक पहिल संकेत “क्षेत्रीय अध्ययन” अछि।
१९९. (A) क्षेत्रीय अध्ययन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “क्षेत्रीय अध्ययन” रूपमे देखाइत अछि।
२००. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध/निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२०१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०२. (D) ई पाठ शोध/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२०३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०४. (B) खण्ड 3788, सूचकांक पंक्ति 2479मे गजेन्द्र ठाकुरक “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत” प्रविष्टि गद्य, शोध/निबन्ध आ “क्षेत्रीय अध्ययन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०५. (A) वर्णमाला शिक्षा: अंकित — सूचकांक पंक्ति 2480मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “वर्णमाला शिक्षा: अंकित” रूपमे देल अछि।
२०६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०७. (C) शिक्षा निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शिक्षा निबन्ध” अछि।
२०८. (D) मैथिली वर्णमाला शिक्षण — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली वर्णमाला शिक्षण” अछि।
२०९. (A) मैथिली वर्णमाला शिक्षण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली वर्णमाला शिक्षण” रूपमे देखाइत अछि।
२१०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शिक्षा निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२११. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१२. (D) ई पाठ शिक्षा निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२१३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२१४. (B) खण्ड 3789, सूचकांक पंक्ति 2480मे गजेन्द्र ठाकुरक “वर्णमाला शिक्षा: अंकित” प्रविष्टि गद्य, शिक्षा निबन्ध आ “मैथिली वर्णमाला शिक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१५. (A) कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा) — सूचकांक पंक्ति 2481मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)” रूपमे देल अछि।
२१६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१७. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२१८. (D) गजलकार समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “गजलकार समीक्षा” अछि।
२१९. (A) गजलकार समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गजलकार समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२२०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२२१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२२. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२२३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२४. (B) खण्ड 3790, सूचकांक पंक्ति 2481मे गजेन्द्र ठाकुरक “कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “गजलकार समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२५. (A) रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह — सूचकांक पंक्ति 2482मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह” रूपमे देल अछि।
२२६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२७. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२२८. (D) लघुकथा संग्रह समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “लघुकथा संग्रह समीक्षा” अछि।
२२९. (A) लघुकथा संग्रह समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लघुकथा संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२३०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२३१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३२. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२३३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३४. (B) खण्ड 3791, सूचकांक पंक्ति 2482मे गजेन्द्र ठाकुरक “रामिवलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “लघुकथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३५. (A) राजदेव मण्डलक अम्बरा — सूचकांक पंक्ति 2483मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “राजदेव मण्डलक अम्बरा” रूपमे देल अछि।
२३६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३७. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२३८. (D) कृति समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कृति समीक्षा” अछि।
२३९. (A) कृति समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कृति समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२४०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२४२. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२४३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४४. (B) खण्ड 3792, सूचकांक पंक्ति 2483मे गजेन्द्र ठाकुरक “राजदेव मण्डलक अम्बरा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कृति समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४५. (A) मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै" — सूचकांक पंक्ति 2484मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"” रूपमे देल अछि।
२४६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४७. (C) शोध/समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध/समीक्षा” अछि।
२४८. (D) लोक साहित्य आ जनकवि परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक साहित्य आ जनकवि परम्परा” अछि।
२४९. (A) लोक साहित्य आ जनकवि परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक साहित्य आ जनकवि परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।
२५०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा शोध/समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२५१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२५२. (D) ई पाठ शोध/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२५३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२५४. (B) खण्ड 3793, सूचकांक पंक्ति 2484मे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू - "हमरा बिनु जगत सुन्ना छै"” प्रविष्टि गद्य, शोध/समीक्षा आ “लोक साहित्य आ जनकवि परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२५५. (A) मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कतिआएल छी” — सूचकांक पंक्ति 2485मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कतिआएल छी”” रूपमे देल अछि।
२५६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२५७. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२५८. (D) कविता समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता समीक्षा” अछि।
२५९. (A) कविता समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२६०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२६१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२६२. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२६३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२६४. (B) खण्ड 3794, सूचकांक पंक्ति 2485मे गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कतिआएल छी”” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२६५. (A) मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह “प्रतीक” — सूचकांक पंक्ति 2486मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह “प्रतीक”” रूपमे देल अछि।
२६६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२६७. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२६८. (D) कथा संग्रह समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा संग्रह समीक्षा” अछि।

२६९. (A) कथा संग्रह समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२७०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२७१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२७२. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२७३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२७४. (B) खण्ड 3795, सूचकांक पंक्ति 2486मे गजेन्द्र ठाकुरक “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह “प्रतीक”” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२७५. (A) रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह “रथक चक्का उलटि चलै बाट” — सूचकांक पंक्ति 2487मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह “रथक चक्का उलटि चलै बाट”” रूपमे देल अछि।
२७६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२७७. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२७८. (D) कविता संग्रह समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता संग्रह समीक्षा” अछि।
२७९. (A) कविता संग्रह समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२८०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२८१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२८२. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२८३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२८४. (B) खण्ड 3796, सूचकांक पंक्ति 2487मे गजेन्द्र ठाकुरक “रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह “रथक चक्का उलटि चलै बाट”” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२८५. (A) उमेश मण्डल जीक “निशुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह — सूचकांक पंक्ति 2488मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “उमेश मण्डल जीक “निशुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह” रूपमे देल अछि।
२८६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२८७. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२८८. (D) कविता संग्रह समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता संग्रह समीक्षा” अछि।
२८९. (A) कविता संग्रह समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२९०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२९१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२९२. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२९३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२९४. (B) खण्ड 3797, सूचकांक पंक्ति 2488मे गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश मण्डल जीक “निशुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२९५. (A) उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस” — सूचकांक पंक्ति 2489मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस”” रूपमे देल अछि।

२९६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२९७. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२९८. (D) कविता संग्रह समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कविता संग्रह समीक्षा” अछि।
२९९. (A) कविता संग्रह समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कविता संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
३००. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३०१. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३०२. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३०३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३०४. (B) खण्ड 3798, सूचकांक पंक्ति 2489मे गजेन्द्र ठाकुरक “उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस”” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कविता संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३०५. (A) सुजीतक जिद्दी — सूचकांक पंक्ति 2490मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “सुजीतक जिद्दी” रूपमे देल अछि।
३०६. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३०७. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
३०८. (D) कथा संग्रह समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “कथा संग्रह समीक्षा” अछि।
३०९. (A) कथा संग्रह समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कथा संग्रह समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
३१०. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३११. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३१२. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३१३. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३१४. (B) खण्ड 3799, सूचकांक पंक्ति 2490मे गजेन्द्र ठाकुरक “सुजीतक जिद्दी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “कथा संग्रह समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 30क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।